Rostocker Dokumentenserver
Dieses Werk wurde Ihnen durch die Universitätsbibliothek Rostock zum Download bereitgestellt.
Für Fragen und Hinweise wenden Sie sich bitte an: digibib.ub@uni-rostock.de

**Verbesserter Mecklenburgischer Historien-Calender : für das ... Jahr**

# 1715

1715

**http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971**

Band (Zeitschrift) Freier Zugang PUBLIC DOMAIN

418
(4)

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0001
DFG

Dupl. ~~Mk – 1510.a~~ Mk – 418(4)

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de
/rosdok/ppn1028054971/phys_0002
DFG

Verbesserter

Mecklenburgischer Historien

# Calender

Für

Sr. Hoch-Fürstl. Durchl. von Mecklenburg Fürstenthum und andre Lande/

## Auf das 1715. Jahr Christi/

Darinn continuiret werden:

Die Nachrichten von dem Zustande der Königlich Dänischen Colonien in Tranqvebar in Ostindien/ und von des Landes und der Einwohner eigentlichen Beschaffenheit.

Wie auch ein Project derer Kirchen-Geschichten/ vom Anfang und Fortgang des Lutherthums in Mecklenburg. Denen Liebhabern der Historien zur Gemüths-Ergetzlichkeit aufgezeichnet.

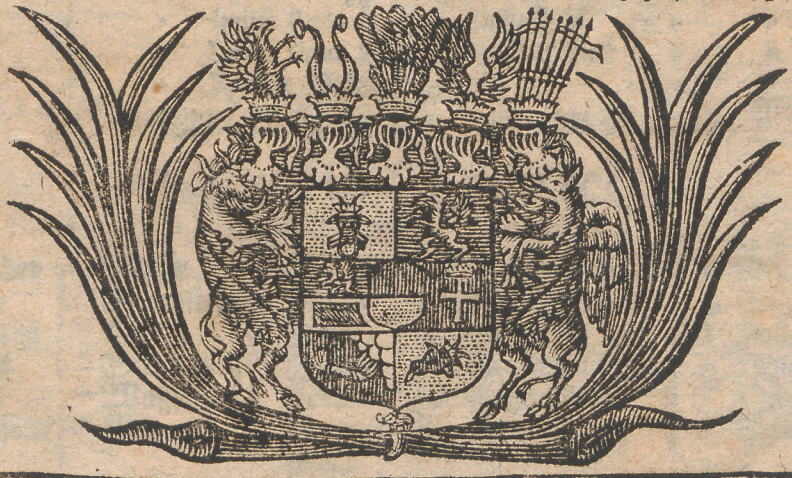

Rostock/zufinden bey Johann Weppling/privil. Hoch-Fürstl. und Acad. Buchdr.

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0003
DFG

Bibliotheca
Academiae
Rostochiensis

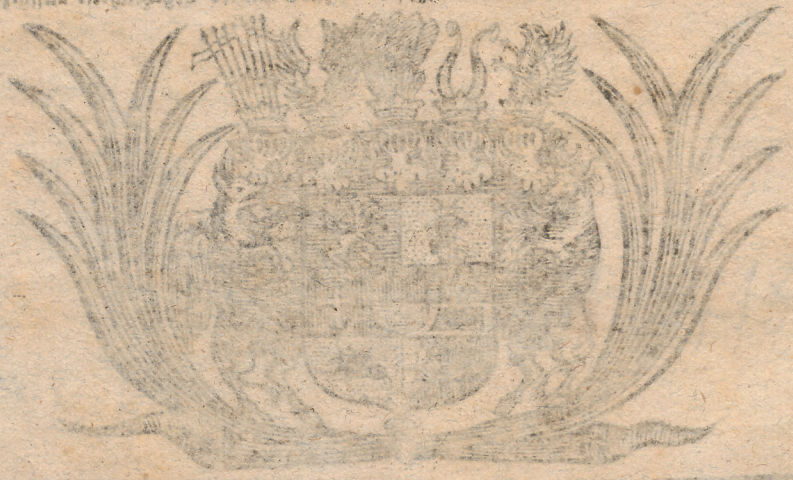

# In diesem 1715ten Jahr zählet man

Von Erschaffung der Welt . . . 5664
Von der Sündfluth . . . 4008
Von Zerstöhrung Jerusalems . . . 1645
Von Andordnung des Julianischen Calenders . . . 1760
Von Anordnung des Gregorianischen Calenders . . . 133
Von Verbesserung des Calenders . . . 16
Von Krönung Sr. Kayserlichen Majestät CAROLI VI. . . . 4
Von der Geburth Sr. Hoch-Fürstl. Durchl. des Regierenden Hertzogs von Mecklenburg CAROLI LEOPOLDI . . . 36
Von angetretener Regierung Seiner Durchl. . . . 2
Von Vereinigung der Lande Mecklenburg . . . 14
Von Anfang der Rostockischen Universität . . . 296
Von der Zeit da Mecklenburg zum Fürstenthum geworden . . . 552
Von der Zeit da die Universität zu Rostock von Bäbstl. und Käyserl Bann und Acht befreyet worden . . . 257
Von Anfang des Lutherthums zu Rostock . . . 192
Von der grossen Wasserfluth daselbst . . . 90
Von der grosten Feuers-Brunst daselbst . . . 38
Nach Erfindung der Kunst. Buchdruckerey . . . 265

## Allgemeine Kennzeichen der Calender.

Die Stämm-Zahl 6428. Per. Jul. zeigt im

| Neuen Gregorianischen | | Calender. | Alten Julianischen. |
|---|---|---|---|
| VI | | Aur. Num. die güldne Zahl | VI |
| XVI | | Cyclum ☉ Sonnen-Circkel | XVI |
| VIII | | Indict. Rom. Römer Zinß-Zahl | VIII |
| F | | Liter. Dom. Sonntags-Buchstab | B |
| XXV | | Epactas Monden-Zeiger. | VI |
| 3. Wochen 5 Täge | | zwischen Weynachten und Fastnachts Sontag | 3. Wochen 1. Tag. |

## Erklährung der Characteren.

| Die Zeichen. | | | Planeten. | Aspecten. | Mond |
|---|---|---|---|---|---|
| ♈ Widder | ♎ Wage | | ♄ Saturnus | ☌ Zusammenkunfft | ● Neu Mond |
| ♉ Stier | ♏ Scorpion | | ♃ Jupiter | ✱ Sertil-Schein | ☽ Erstes Viertel |
| ♊ Zwilling | ♐ Schiltz | | ♂ Mars | □ Gevierterschein | ○ Voll-Mond |
| ♋ Krebs | ♑ Steinbock | | ☉ Sonne | △ Gedritterschein | ☾ Letztes Viertel |
| ♌ Löwe | ♒ Wasserm. | | ♀ Venus | ☍ Gegenschein | ☊ Drachen-Kopff |
| ♍ Jungfrau | ♓ Fisch | | ☿ Mercurius | | ☋ Drachenschwantz. |
| | | | ☽ Mond | | |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0005
DFG

| I. Monath | Verbesserter Januar. | ☉ Lauf ☽ | ☾ Lauff | Himmels-Begebenheiten. | ☉ Aufgang | ☉ Untergang |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Dienstag | 1 Neu Jahr | 10 44 | 19 ♑ | GOTT den Anfang Mittel | 8 24 | 3 35 |
| Mittwoch | 2 Abel/Seth | 11 45 | 2 ♒ | Ende / Gehen wir in deine | 8 24 | 3 35 |
| Donnerst. | 3 Enoch | 12 46 | 15 ♒ | Hände. ♄ geht um 10. Uhr | 8 23 | 3 36 |
| Freytag | 4 Mathusal. | 13 47 | 28 ♒ | □♃. fängt kalt an Abends auff | 8 22 | 3 37 |
| Sonnab. | 5 Simeon | 14 48 | 11 ♓ | ●5.U. 10.ab. ♀Retr.△♄.□♂ | 8 22 | 3 37 |
| II. Woche. | Ev. JEsus gebohren/ Matth. 2. Epist. Mache dich auff/Jes. 60. | | | | Tagslänge 7. St. 15. min. Nachtlänge 16. St. 45. min. | |
| Sontag | 6 H. 3. König | 15 49 | 25 ♓ | Frost und stürmicht um 4. Uhr | 8 21 | 3 38 |
| Montag | 7 Isidorus | 16 51 | 9 ♈ | ✱♃.△♂.☌♀.Kälte morgens | 8 20 | 3 39 |
| Dienstag | 8 Erhardus | 17 52 | 23 ♈ | ✱☿.□♄☿.die mit in Süden | 8 19 | 3 40 |
| Mittwoch | 9 Martia is | 18 53 | 8 ♉ | ♂♄.□☿.rauh wetter ♃um 6. | 8 18 | 3 41 |
| Donnerst. | 10 Paul Einsidl. | 19 55 | 22 ♉ | ☌♃.✱♀. ☽Per continuirt ab. | 8 17 | 3 42 |
| Freytag | 11 Hyginius | 20 56 | 6 ♊ | ☽2.U.16.nachm.☍♂.△☿.süden | 8 16 | 3 43 |
| Sonnab. | 12 Rheinholdus | 1 56 | 20 ♊ | | 8 14 | 3 45 |
| III. Woche. | Ev. JEsus 12. Jahr alt/Luc. 2. Epist. Ich ermahne euch/Rom. 12. | | | | Tagslänge 7. St. 31. min. Nachtlänge 16. St. 29. min. | |
| Sontag | 13 1. n. Epiphan | 22 57 | 4 ♋ | □♀. ✱♃♀unbestän- um 12. | 8 13 | 3 46 |
| Montag | 14 Felix | 23 58 | 18 ♋ | △♄. △♄☉.☽☍dig unter.♂ | 8 12 | 3 47 |
| Dienstag | 15 Maurus | 24 59 | 2 ♌ | ✱♃.△♀.schneeflocken um 1. Uhr | 8 11 | 3 48 |
| Mittwoch | 16 Marcellus | 26 0 | 16 ♌ | □♄.△♂.gelinde Luft nachts auf | 8 8 | 3 51 |
| Donnerst | 17 Antonius | 27 2 | 29 ♌ | □♃.☍☿.mittelmäßig bey ☉ | 8 6 | 3 53 |
| Freytag | 18 Prisca | 28 3 | 12 ♍ | ✱♄.□♂.sturm Aufgang | 8 5 | 3 54 |
| Sonnab. | 19 Sara | 29 4 | 26 ♍ | 5. 12. 50. ab. südwest ☿ | 8 4 | 3 56 |
| IV. Woche. | Ev. von der Hochzeit zu Cana/Joh. 2. Epist. Hat jemand Weissagung/Rom. 12. | | | | Tagslänge 7. St. 52. min. Nachtlänge 16. St. 8. min. | |
| Sonntag | 20 2. n. Epiph. Fab. Seb. | ♒ 5 | 8 ♒ | △♃.☍♀.schärffere den Strah- | 8 2 | 3 57 |
| Montag | 21 Agneta | 1 6 | 21 ♒ | ✱♂. Kälte/und wenig len der | 8 0 | 3 59 |
| Dienstag | 22 Vincentius | 2 7 | 3 ♓ | △☿. □♃☿. Schnee Sonnen | 7 59 | 4 0 |
| Mitwoch | 23 Emerentia | 3 8 | 16 ♓ | ☌♄.mehr Schnee unsicht- | 7 57 | 4 2 |
| Donnerst. | 24 Timotheus | 4 9 | 28 ♓ | △♀.doch gelind Wetter bahr. | 7 56 | 4 3 |
| Freytag | 25 Paul Bekehr. | 5 10 | 9 ♈ | ☍♃.□☿. ☽△♂☉♀.☿ ist | 7 54 | 4 5 |
| Sonnab. | 26 Polycarpus | 6 11 | 21 ♈ | ☌♂. veränderlich morgen- | 7 52 | 4 7 |
| V. Woche | Ev. Vom Aussätzigen/Matth. 8. Epist. Wisset ihr nicht/1. Cor. 9. | | | | Tagslänge 8. St. 15. min. Nachtlänge 15. St. 45. min. | |
| Sontag | 27 3. n. Epiph. | 7 12 | 3 ♉ | 7. U. 52. ab. □♀ stern 2. | 7 50 | 4 9 |
| Montag | 28 CAROLUS | 8 13 | 15 ♉ | ✱♄.✱☿. ☽☍ schar- stun- | 7 49 | 4 10 |
| Dienstag | 29 Samuel | 9 14 | 27 ♉ | ✱♀. se Kälte den vor der | 7 47 | 4 12 |
| Mittwoch | 30 Adelgunda | 10 15 | 10 ♊ | △♃. △♄☿ Sonnen | 7 45 | 4 14 |
| Donnerst | 31 Virgilius | 11 15 | 22 ♊ | □♄. ✱♂. Eiß. auffgehend | 7 43 | 4 16 |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0006
DFG

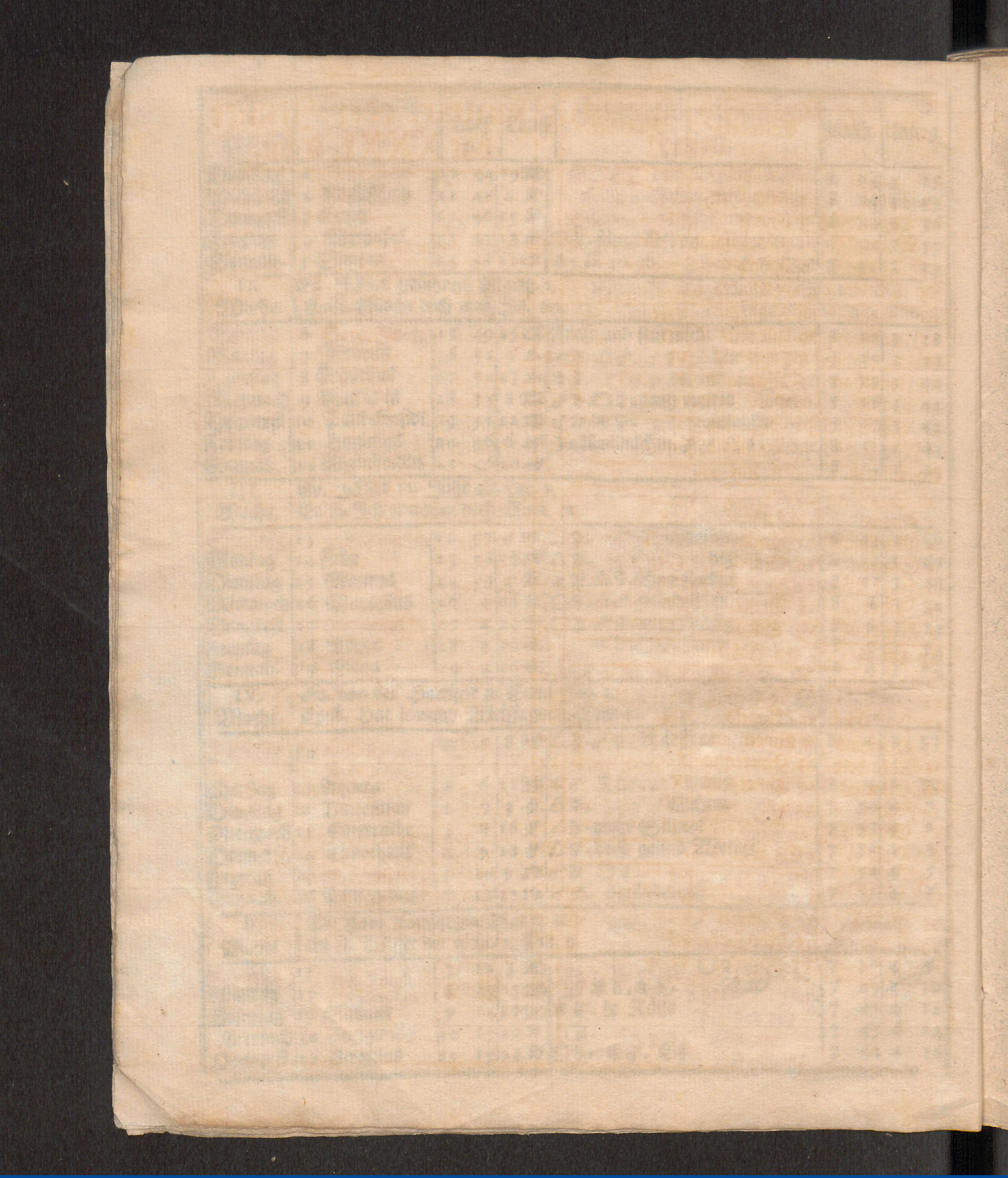

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0008
DFG

# Januar. oder Jenner hat XXXI. Tage.

| Julianischen Calenders. DECEMBER | Gregorianisch. Calenders JANUARIUS | Römischer Calender. | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 21 Thomas | 1 Neu Jahr | Cal. Januar. | | 1 |
| 22 Beata | 2 Abel Seth | IV | | 2 |
| 23 Tugendreich | 3 Enoch | III | Non | 3 |
| 24 Adam Eva | 4 Mathusalah | Pridie | | 4 |
| 25 Weynacht. | 5 Simeon | Nonæ | | 5 |
| Ev. Matth. 23. | Ev. Matth. 2. | | | ☉ |
| 26 S. Stephan. | 6 H. 3. Kön. | VIII | | 6 |
| 27 Joh. Evang | 7 Isidorus | VII | | 7 |
| 28 Unsch. Kinder | 8 Erhardus | VI | | 8 |
| 29 Jonathan | 9 Martialis | V | Idum | 9 |
| 30 David | 10 Paul Einsid. | IV | | 10 |
| 31 Sylvester | 11 Hyginius | III | | 11 |
| 1 Neu Jahr | 12 Rheinhold. | Pridie | | 12 |
| Ev. Matth. 3. | Ev. Luc. 2. | | | ☉ |
| 2 B. S. n. Neuj | 13 1. n. Epiph. | Idus | | 13 |
| 3 Enoch | 14 Felix | XIX | | 14 |
| 4 Mathusalah | 15 Maurus | XVIII | | 15 |
| 5 Simeon | 16 Marcellus | XVII | Calen- | 16 |
| 6 H. 3 Kön. | 17 Antonius | XVI | | 17 |
| 7 Isidorus | 18 Prisca | XV | | 18 |
| 8 Erhardus | 19 Sara | XIV | | 19 |
| Ev. Luc. 2. | Ev. Joh. 1. | | | ☉ |
| 9 B. 1. n. Epiph. | 20 2. n. Epiph. Fab. Seb. | XIII | | 20 |
| 10 Paul Eins. | 21 Agneta | XII | | 21 |
| 11 Hyginius | 22 Vincentius | XI | | 22 |
| 12 Rheinhold. | 23 Emerentia | X | darum | 23 |
| 13 Hilarius | 24 Timotheus | IX | | 24 |
| 14 Felix | 25 Paul Bek. | VIII | | 25 |
| 15 Maurus | 26 Polycarp. | VII | | 26 |
| Ev. Joh. 2. | Ev. Matth. 8. | | | ☉ |
| 16 B. 2. n. Epiph. | 27 3. n. Epiph. | VI | | 27 |
| 17 Antonius | 28 CAROLUS | V | | 28 |
| 18 Prisca | 29 Samuel | IV | | 29 |
| 19 Sara | 30 Adelgunda | III | | 30 |
| 20 Fab. Seb. | 31 Virgilius | Pridie | Februarii | 31 |



Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0009
DFG

| II. Monath | Verbesserter Februar | ☉ Lauff | ☽ Lauff | Himmels-Begebenheiten. | Auffg. | Untergg. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Freytag | 1 Brigitta | 12 16 | 0 ♐ | ☐ ♃. raube Winde | 7 41 | 4 18 |
| Sonnab. | 2 Mar. Rein. | 13 17 | 19 ♐ | △ ♄. ☐ ♂. ☌ ☿. ☌ ☀. kalt | 7 39 | 4 20 |
| VI. Woche. | Ev. Von ungestümen Meer/ Matth. 8. Epist. Seyd niemand nichts schuldig/ Rom. 13. | | | | Tagsl. 9. St. 41. m. Nachtl. 15. St. 19. m. | |
| Sonntag | 3 4. n. Epiph. | 14 18 | ♑ | ✱ ♃. | 7 37 | 4 22 |
| Montag | 4 Veronica | 15 19 | 18 ♑ | 6. U. 25. m morg. △ ♂. | 7 36 | 4 24 |
| Dienstag | 5 Agatha | 16 20 | 2 ♒ | Schneewetter | 7 34 | 4 25 |
| Mittwoch | 6 Dorothea | 17 20 | 17 ♒ | ☌ ♄. ✱ ☿. ✱ ☉. | 7 32 | 4 27 |
| Donnerst. | 7 Richardus | 18 21 | 2 ♓ | ☌ ♃. unfreundlich | 7 30 | 4 29 |
| Freytag | 8 Salomon | 19 21 | 17 ♓ | ☐ ☿. | 7 28 | 4 31 |
| Sonnab. | 9 Apollonia | 20 22 | 1 ♈ | ☌ ♂. ☐ ☿. kalt | 7 26 | 4 33 |
| VII. Woche. | Ev. Von Seemann/ Matth. 13. Epist. So ziehet nun an/ Col. 3. | | | | Tagslange 9. St. 48. m. Nachtlänge 16. St. 19. m. | |
| Sonntag | 10 5. n. Epiph. | 21 22 | 15 ♈ | 10. U. 53. Nacht △ ♄. △ ☿. | 7 24 | 4 35 |
| Montag | 11 Euphrosina | 22 23 | 29 ♈ | viel Frost und scharf- | 7 22 | 4 37 |
| Dienstag | 12 Eulalia | 23 23 | 12 ♉ | ☐ ♄. ✱ ♃. △ ☿. fe | 7 20 | 4 39 |
| Mittwoch | 13 Benignus | 24 24 | 26 ♉ | △ ♂. | 7 17 | 4 42 |
| Donnerst. | 14 Valentin. | 25 25 | 9 ♊ | ☐ ♃. klar Wetter | 7 15 | 4 44 |
| Freytag | 15 Faustinus | 26 25 | 22 ♊ | ✱ ♄. ☐ ♂. ☌ ☿. | 7 13 | 4 46 |
| Sonnab. | 16 Juliana | 27 25 | 5 ♋ | mit nordlichen Winden | 7 11 | 4 48 |
| VIII. Woche. | Ev. Von Weinberg/ Matth. 20. Epist. Wisset ihr nicht/ 1. Cor. 9. | | | | Tagslange 9. St. 37. m. Nachtlänge 14. St. 23. m. | |
| Sonntag | 17 Septuages. | 28 26 | 17 ♋ | △ ♃. ☌ ☿. Kälte bricht sich | 7 9 | 4 50 |
| Montag | 18 Concordia | 29 26 | 0 ♌ | 10. U. 33. morg. ✱ ♂. | 7 7 | 4 52 |
| Dienstag | 19 Susanna | ♓ 27 | 12 ♌ | ☌ ♄. gemäßiget | 7 5 | 4 54 |
| Mittwoch | 20 Eucharius | 1 27 | 24 ♌ | △ ☿. Nachts am | 7 5 | 4 54 |
| Donnerst. | 21 Eleonora | 2 27 | 6 ♍ | schärfesten/ tags über | 7 3 | 4 56 |
| Freytag | 22 Pet. Stulf. | 3 27 | 18 ♍ | ☌ ♃. ☐ ☿. | 7 1 | 4 58 |
| Sonnab. | 23 Serenus | 4 27 | 29 ♍ | ☌ ♂. △ ☿. ☌ ☉ ☿. | 6 59 | 4 1 |
| IX. Woche. | Ev. Vielerley Acker/ Luc. 8. Epist. Vertraget gern/ 2. Cor. 11. | | | | Tagslänge 10. St. 2. m. Nachtlänge 13. St. 58. m. | |
| Sonntag | 24 Sexagesim. Matthias | 5 27 | 11 ♎ | ✱ ♄. △ ♂ ☿. | 6 56 | 5 3 |
| Montag | 25 Victorinus | 6 28 | 23 ♎ | ✱ ☿. | 6 54 | 5 5 |
| Dienstag | 26 Nestorius | 7 28 | 8 ♏ | 3. U. 12. morg. ☐ ☿. △ ♂ ☉ | 6 52 | 5 7 |
| Mittwoch | 27 Leander. | 8 28 | 18 ♏ | ☐ ♄. △ ♃. mit | 6 50 | 5 9 |
| Donnerst. | 28 Julius | 9 28 | 1 ♐ | ✱ ♂. vielen Winden | 6 48 | 5 11 |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0010
DFG

d. 5t der Hr. Cantzeley Director Schöpffer, von Wien gekommen.

d. 6t Ser^mus^ umb 3. Uhr Nachmitt. ist mit einer kleinen Suite nach Doberan gegangen,

d. 8t Ego nachgegang.

d. 9t Mons: Wietz von Wien gekommen,

d. 11t wieder von Doberan in Rostock gekommen.

d. 12t Abends umb 7. Uhr ist der Raht in Rostock im Arrest genommen, und sind alle Sachen versiegelt.

d. 14t in der Nacht die drey Bürgerm. und der Rahtsh. Voss, auch Müller, nach Suerin im Arrest gebracht, mit 3. Ob. Officiren, als Obrist. Zülowen, und 2. Capitains.

d. 16t in der Nacht der Rahtsverwandter Quistorff, von dem Adjutanten Mahlern auch dahin gebracht.

d. 19t der gantze Raht und die 100. Männer der Bürgerschaft auf dem Rahthause mit 100. Soldaten verwahret.

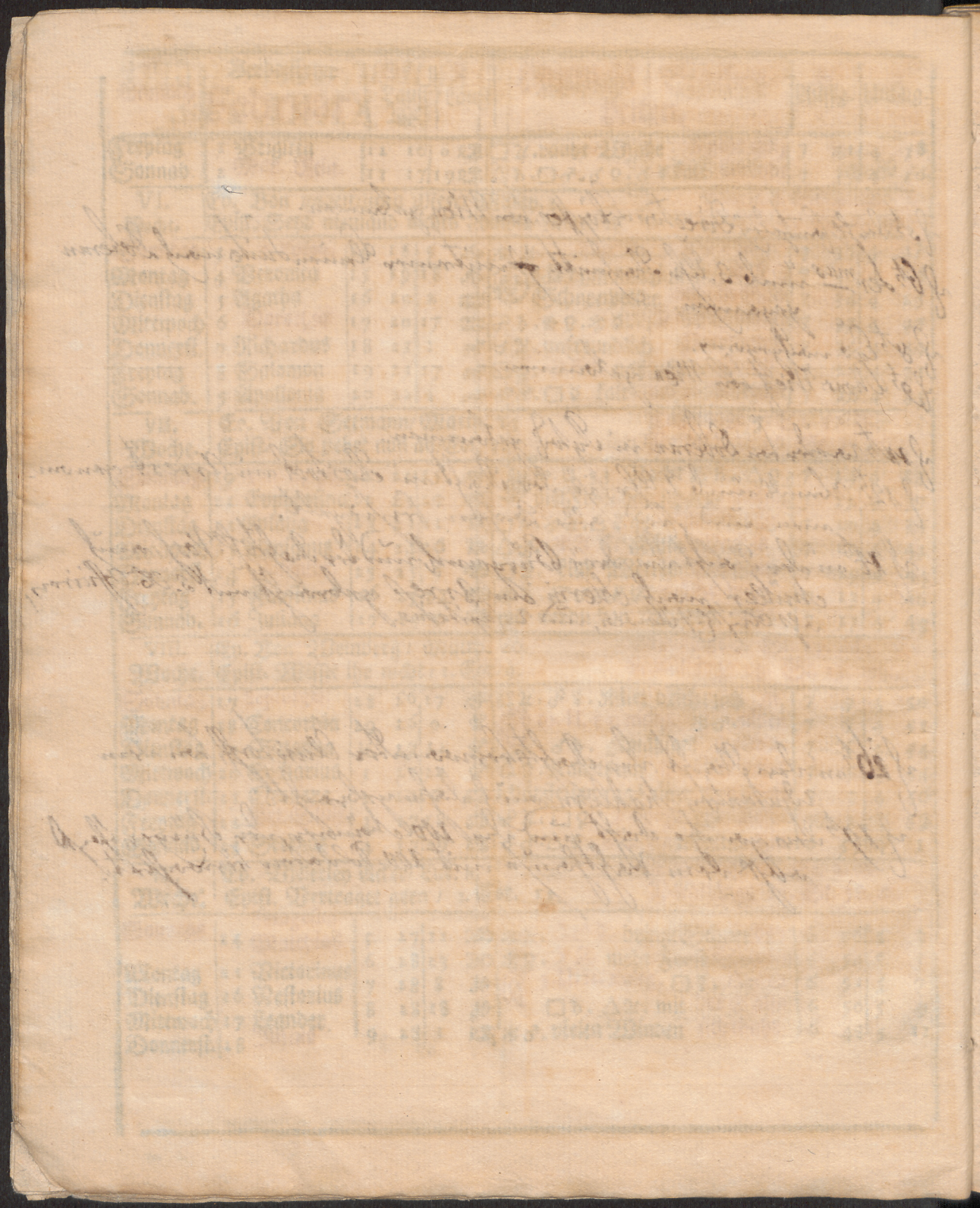

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0012
DFG

# Februar. oder Horn. hat XXVIII. Tage.

| Julianischen Calenders | Gregorianisch Calenders | Römischer Calender | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| JANUARIUS | FEBRUARIUS | | | |
| 21 Agneta | 1 Brigitta | Kal. Februar. | | 1 |
| 22 Vincentius | 2 Mar. Rein. | IV | | 2 |
| Ev. Matth. 8. | Ev. Matth. 8. | | | ☉ |
| 23 Sa. n. Epiph. | 3 4. n. Epiph. | III | | 3 |
| 24 Timotheus | 4 Veronica | Pridie | | 4 |
| 25 Paul. Bek. | 5 Agatha | Nonæ | Non. | 5 |
| 26 Polycarpus | 6 Dorothea | VIII | | 6 |
| 27 Chrysost. | 7 Richardus | VII | | 7 |
| 28 CAROLUS | 8 Salomon | VI | | 8 |
| 29 Samuel | 9 Apollonia | V | | 9 |
| Ev. Matth. 8. | Ev. Matth. 13. | | | ☉ |
| 30 B. 4. n. Epiph. | 10 5. n. Epiph. | IV | | 10 |
| 31 Virgilius | 11 Euphrosina | III | | 11 |
| 1 Brigitta | 12 Eulalia | Pridie | | 12 |
| 2 M. Rein. | 13 Benignus | Idus | Iduum | 13 |
| 3 Basilius | 14 Valentinus | XVI | | 14 |
| 4 Veronica | 15 Faustinus | XV | | 15 |
| 5 Agatha | 16 Juliana | XIV | | 16 |
| Ev. Matth. 13 | Ev. Matth. 20. | | | ☉ |
| 6 B. 5. n. Epiph. Dorothea | 17 Septuages. | XIII | | 17 |
| 7 Richardus | 18 Concordia | XII | | 18 |
| 8 Salomon | 19 Susanna | XI | | 19 |
| 9 Apollonia | 20 Eucharius | X | | 20 |
| 10 Scholastica | 21 Eleonora | IX | Calendarum | 21 |
| 11 Euphrosina | 22 Pet. Stuhl. | VIII | | 22 |
| 12 Eulalia | 23 Serenus | VII | | 23 |
| Ev. Matth. 20. | Ev. Luc. 8. | | | ☉ |
| 13 B. Septag. | 24 Septuages. Matthias | VI | | 24 |
| 14 Valentin. | 25 Victorinus | V | | 25 |
| 15 Faustinus | 26 Nestorius | IV | | 26 |
| 16 Juliana | 27 Leander | III | | 27 |
| 17 Alexander | 28 Justus | Pridie | Martii. | 28 |

| III. Monath | Verbesserter Martius | ☉ Lauff ♓ | ☽ Lauff | Himmels-Begebenheiten. | ☉ Aufg. | ☉ Unterg. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Freytag | 1 Albinus | 10 28 | 14 ♉ | △♄.△♃.☌☿.ordent- | 6 43 | 5 16 |
| Sonnab. | 2 LOVISA | 11 28 | 27 ♉ | □♂.☌☿.liche Witterung | 6 41 | 5 18 |
| X. Woche | Ev. Blinden am Wege/Luc. 18. Epist. Wenn ich mit Menschen/1 Cor. 13. | | | Tagslänge 10. St. 37. min. Nachtlänge 13. St. 23. min. | | |
| Sonntag | 3 Estom. Quinq | 12 28 | 12 ♋ | nach Jahres Zeit auf/zu mittag | 6 39 | 5 20 |
| Montag | 4 Adrianus | 13 29 | 26 ♋ | △♂.☌♄☿ trübe nicht in süden | 6 37 | 5 22 |
| Dienstag | 5 Fastnacht | 14 29 | 11 ♌ | ☽ 5 U. 7. ab. ☌♄.☌♃.☌☿ um | 6 35 | 5 24 |
| Mittwoch | 6 Aschermitw. | 15 28 | 26 ♌ | ☌☿.Neumond en- 7 morg. | 6 38 | 5 26 |
| Donnerst. | 7 Perpetua | 16 28 | 11 ♍ | ☽ Per. dert das Wetter unter. | 6 30 | 5 29 |
| Freytag | 8 Cyprianus | 17 28 | 26 ♍ | ☌♂.□☿.und bringt 2 bey | 6 28 | 5 31 |
| Sonnab. | 9 Michäus | 18 29 | 11 ♎ | △♄.△♃. ☽ B Sonn- Schein | 6 26 | 5 33 |
| XI. Woche. | Ev. Christi Versuchung/Matth. 4. Epist. Wir ermahnen aber euch/2 Cor. 6. | | | Tagslänge 11. St. 7. min. Nachtlänge 12. St. 53. min. | | |
| Sonntag | 10 Inv. Quade. | 19 28 | 25 ♎ | □☿.☌☿.schein und Untergang | 6 24 | 5 35 |
| Montag | 11 Constantinus | 20 27 | 9 ♏ | □♄.□♃.klahre Lufft westlich | 6 22 | 5 37 |
| Dienstag | 12 Gregorius | 21 27 | 23 ♏ | ☽ 8 U. 28. morg. ☌♄.☉.um | 6 19 | 5 40 |
| Mittwoch | 13 Quatember | 22 27 | 6 ♐ | ☽ □☿.□☌☿.☌☿.9 ab | 6 17 | 5 42 |
| Donnerst. | 14 Zacharias | 23 27 | 9 ♐ | ☌♄.☌♃.wieder unstet unter. | 9 15 | 5 44 |
| Freytag | 15 Bet-Tag | 24 26 | 2 ♐ | □☌♂.☿△☿.drohet ☌ um 11. | 6 13 | 5 46 |
| Sonnab. | 16 Gabriel | 25 26 | 14 ♑ | Wind und Sturtz Uhr auf | 6 11 | 5 49 |
| 12. Woch. | Cananäischen Weibe/Matth 15. | | | Tagl. 12. St. 8 m. Nachtl. 12. St. 22. m. | | |
| Sonntag | 17 Reminiscere | 26 25 | 26 ♑ | gelinder Regen um 3. morgend | 6 8 | 5 51 |
| Montag | 18 Gertraut | 27 24 | 8 ♒ | ☌♄.☌♃.☌☿.ändert in Süden | 6 6 | 5 53 |
| Dienstag | 19 Josephus | 28 23 | 21 ♒ | sich wieder 9 ist der Morgen- | 6 4 | 5 55 |
| Mittwoch | 20 Matrona | 29 23 | 1 ♓ | ☽ 4. U. 3. m. morg. stern | 6 2 | 5 57 |
| Donnerst. | 21 Benedictus | ♈ 22 | 14 ♓ | ☽ Apog. ☉♈ Tag in Nacht | 6 0 | 6 0 |
| Freytag | 22 Raphael | 1 22 | 26 ♓ | gleich. Frühlings Anf. △☿.☌☿. | 5 57 | 6 2 |
| Sonnab. | 23 Eberhardus | 2 21 | 8 ♈ | ☌♂.□☿.wird klahr 2. Stunde | 5 55 | 6 4 |
| 13. Woch | Besessnen und Stummen/Luc 1. | | | Tagl. 12. St. 9 m. Nachtl. 10. St. 51. m. | | |
| Sonntag | 24 Oculi | 3 21 | 20 ♈ | ☌♄.☌♃. ☽ ☌. angenehm | 5 53 | 6 6 |
| Montag | 25 Mar. Verk. | 4 21 | 2 ♉ | Frühlings-Lufft und ☿ Abend- | 5 51 | 6 8 |
| Dienstag | 26 Emanuel | 5 20 | 14 ♉ | □♄.□♃.☌☿.△☿ stern | 5 49 | 6 11 |
| Mittwoch | 27 Gustavus | 6 19 | 27 ♉ | ☌☌.sein Wetter 2. Stunden | 5 46 | 6 13 |
| Donnerst. | 28 Gideon | 7 18 | 9 ♊ | ☾ 6. U. 55. morg. △♄.△♃. | 5 44 | 6 15 |
| Freytag | 29 Eustachius | 8 17 | 22 ♊ | ☌☿☿ zu Bestellung nach | 5 42 | 6 17 |
| Sonnab. | 30 Adonias | 9 16 | 6 ♋ | □☌♂.der Saat der Sonnen | 5 40 | 6 19 |
| 14. Woch. | Speisung 5000 Mann/Joh. 6. | | | Tagl. 12. St. 39. m. Nachtl. 10. St. 21. m. | | |
| Sonntag | 31 Lætare | 10 15 | 20 ♋ | ☌☿.☌☿.dauret nicht. unter. | 5 37 | 6 22 |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0014
DFG

d. 4t die Schwerinischen Arrestanten zum erstenmahl von Hr. H. Intendanten Waltern, Secret: Hainen, u. Mons.r Bürgern examiniret.

d. 8t des Abends die Arrestanten vom Rathhause dimittiret.

d. 12t sind solche Arrestanten wiedumb auff dem Rathhause, wie vorhin, gefängl. verwahret,

d. 21t gegen Abend, sind die Rostocker Soldaten, auff öffentl. Mancke abgedancket.

d. 23t des Morgends umb 6. Uhr, sind die Rathsherren und der Protonotarius nach Bützow mit Reütern gebracht, und ein jeder besonders daselbst mit 3 Musquetirern gefängl. bewahret,

NB der Syndicus aber ist nach Doberan gebracht.

Eodem die Bürger alß 42 Mann vom Rathhause nach der Schreiberey in Haß gebracht.

d. 27t die Schwerinischen vom H. R. H. R. v. Petkum, und obiger dreyen Personen zum andernmahl examiniret.

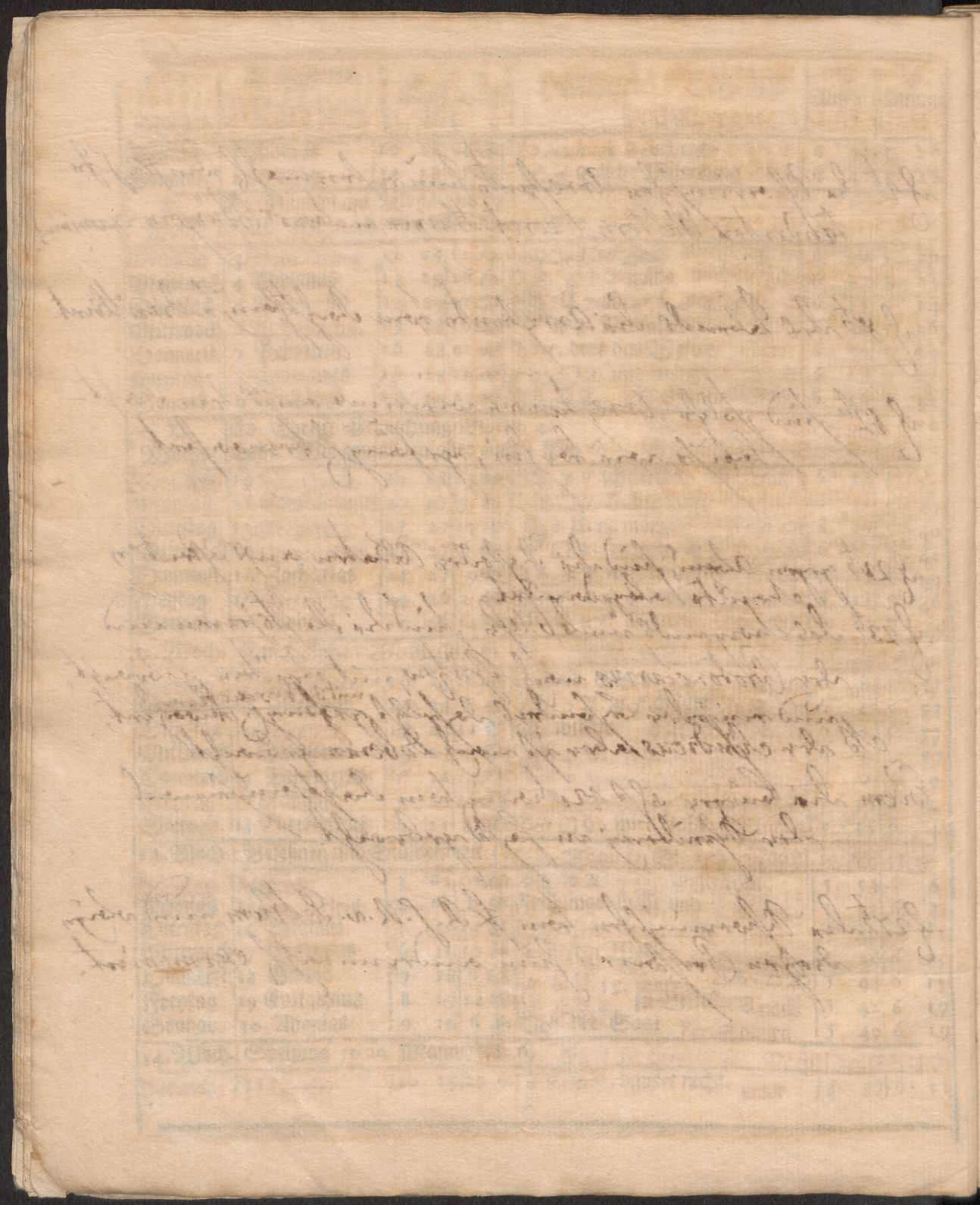

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de
/rosdok/ppn1028054971/phys_0016
DFG

| Julianischen Calenders FEBRUARIUS. | Gregorianisch. Calenders MARTIUS. | Römischer Calender | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 18 Concordia | 1 Albinus | Kal. Mart. | Non. | 1 |
| 19 Susanna | 2 LOVISA | VI | | 2 |
| Ev. Luc. 8. | Ev. Luc. 18. | | | ☉ |
| 20 B. Sexagesi. | 3 Eleon. Quinq. | V | | 3 |
| 21 Eleonora | 4 Adrianus | IV | | 4 |
| 22 Pet. Stuhl. | 5 Fastnacht | III | | 5 |
| 23 Serenus | 6 Aschermittw. | Pridie | | 6 |
| 24 Matthias | 7 Perpetua | Nonas | | 7 |
| 25 Victorinus | 8 Cyprianus | VIII | Mart. Iduum | 8 |
| 26 Nestorius | 9 Michäus | VII | | 9 |
| Ev. Luc. 18. | Ev. Matth. 4. | | | ☉ |
| 27 B. Quinq. | 10 Quadr. Inv. | VI | | 10 |
| 28 Justus | 11 Constant. | V | | 11 |
| 1 Fastnacht | 12 Gregorius | IV | | 12 |
| 2 Aschermittw. | 13 Quatember | III | | 13 |
| 3 Kunigund | 14 Zacharias | Pridie | Calen. | 14 |
| 4 Adrianus | 15 Bet-Tag | Idus | | 15 |
| 5 Friederich | 16 Gabriel | XVII | | 16 |
| Ev. Matth. 4 | Ev. Matth. 15. | | | ☉ |
| 6 B. Quadrag. | 17 Reminisc. | XVI | | 17 |
| 7 Perpetua | 18 Gertraut | XV | | 18 |
| 8 Cyprianus | 19 Josephus | XIV | | 19 |
| 9 Quatember | 20 Matrona | XIII | darum. | 20 |
| 10 Michäus | 21 Benedict. | XII | | 21 |
| 11 Constantin | 22 Raphael | XI | | 22 |
| 12 Gregorius | 23 Eberhard. | X | | 23 |
| Ev. Matth. 15. | Ev. Luc. 11. | | | ☉ |
| 13 B. Reminisc. | 24 Oculi | IX | | 24 |
| 14 Zacharias | 25 Mar. Verk. | VIII | | 25 |
| 15 Christoph. | 26 Emanuel | VII | | 26 |
| 16 Gabriel | 27 Gustavus | VI | | 27 |
| 17 Constantia | 28 Gideon | V | | 28 |
| 18 Gertraut | 29 Eustachius | IV | Aprilis. | 29 |
| 19 Josephus | 30 Adonias | III | | 30 |
| Ev. Luc. 11. | Ev. Joh. 6. | | | ☉ |
| 20 B. Oculi | 31 Lætare | Pridie | | 31 |

# Martius oder Mertz hat XXXI. Tage

## Erster Buß- und Bet-Tag.

B

| IV. Monath | Verbesserter Aprilis. | Lauf ♈ | | Lauff | Himmels-Begebenheiten. | Auffg. | | Unterg. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Montag | 1 Theodora | 11 | 13 | 4 ♒ | △♂. Nachtfrost ♄ um 5 abends | 5 | 35 | 6 | 24 |
| Dienstag | 2 Mar. Egypt. | 12 | 12 | 19 ♒ | ☍♄. und Nachts guff um 11. | 5 | 33 | 6 | 26 |
| Mittwoch | 3 CHRISTIAN | 13 | 11 | 4 ♓ | ☌☿. ungestühm Schnee Uhr | 5 | 31 | 6 | 28 |
| Donnerst. | 4 Ambrosius | 14 | 10 | 20 ♓ | ● 2. U. 6. morg ☌♃. ✱♀. in | 5 | 29 | 6 | 30 |
| Freytag | 5 Maximus | 15 | 9 | 5 ♈ | △♄. ☍♂. flocken mit süden | 5 | 26 | 6 | 33 |
| Sonnab. | 6 Cölestinus | 16 | 8 | 20 ♈ | ☽ Per. □♀. ☽ ☊ Regen um | 5 | 24 | 6 | 35 |
| XV. Woche. | Ev. Von Steinigung Christi/ Joh. 8. Epist. Christus aber ist kommen/ Hebr. 9. | | | | Tagslänge 13. St. 11. min. Nachtlänge 10 St. 49. min. | | | | |
| Sonntag | 7 Judica | 17 | 7 | 4 ♉ | ☍♃. ✱☿. ☌☉☿ sehr 5. morg. | 5 | 22 | 6 | 37 |
| Montag | 8 Liborius | 18 | 6 | 19 ♉ | □♄. ✱♃. △♀. veränder- unter | 5 | 20 | 6 | 39 |
| Dienstag | 9 Bogislaus | 19 | 4 | 2 ♊ | △♂. □☿. lich/ Wind ♃ | 5 | 18 | 6 | 41 |
| Mittwoch | 10 Daniel | 20 | 3 | 16 ♊ | ☽ 7. U. 45. ab. ✱♄. □♃. der | 5 | 16 | 6 | 43 |
| Donnerst | 11 Hiskias | 21 | 1 | 29 ♊ | ♃☿. □♂. △♂♀. ☉ nahe | 5 | 13 | 6 | 46 |
| Freytag | 12 Julius | 22 | 0 | 11 ♋ | △☿. sonderlich des Nachts un- | 5 | 11 | 6 | 48 |
| Sonnab. | 13 Justinus | 22 | 59 | 23 ♋ | △♃. ✱♂. ☍♀. bestän- sichtbar | 5 | 11 | 5 | 48 |
| XVI. Woche. | Ev. Einreitung Christi/ Matth 21. Epist. Ein jeglicher sey gesinnet/ Phil. 2. | | | | Tagslänge 1[illegible] St. 37. min. Nachtlänge 10 St. 23. min. | | | | |
| Sonntag | 14 Palmarum Tiburtius | 23 | 58 | 6 ♌ | dig angenehme Witterung ♂ um | 5 | 9 | 6 | 50 |
| Montag | 15 Olympia | 24 | 57 | 18 ♌ | ☌♄. zur Saat Uhr Abends auf | 5 | 7 | 6 | 52 |
| Dienstag | 16 Aaron | 25 | 5[illegible] | 29 ♌ | ☍☿. dienlich und um Mit- | 5 | 5 | 6 | 54 |
| Mittwoch | 17 Rudolphus | 26 | 54 | 11 ♍ | fein tempe- ternacht in | 5 | 3 | 6 | 56 |
| Donnerst | 18 Gründonerst | 27 | 52 | 23 ♍ | ☾ 9. U 8. ab ☍♃. ☌♂ ☽ Ap. | 5 | 1 | 6 | 59 |
| Freytag | 19 Stillfreytag | 28 | 50 | 5 ♎ | △♀. rirte Lufft Süden | 4 | 58 | 7 | 1 |
| Sonnab. | 20 Sulpitius | 29 | 48 | 17 ♎ | ✱♄. ☽ ☊. ☿ 1. Stunde | 4 | 56 | 7 | 3 |
| XVII. Woche. | Ev. Aufferstehung Christi/ Marc. 16. Epist. Vom Sauerteig/ 1. Cor. 5. | | | | Tagslänge 14. St. 7. min. Nachtlänge 9. St. 53. min. | | | | |
| Sonntag | 21 Ostern | ♉ | 46 | 29 ♎ | ☉☿. △☿. ☍♂☉. vor der | 4 | 54 | 7 | 5 |
| | 22 Ostermontag | 1 | 45 | 11 ♏ | □♄. □♀. windig un- Sonnen | 4 | 52 | 7 | 7 |
| Montag | 23 Osterdienstag | 2 | 43 | 23 ♏ | ☿ Dir. △♃. ✱♂. ☌♃☉ mor- | 4 | 50 | 7 | 9 |
| Dienstag | Georgius | | | | | | | | |
| Mittwoch | 24 Albertus | 3 | 41 | 6 ♐ | △♄. □☿. ☍♄♀ gestühm gen- | 4 | 48 | 7 | 11 |
| Donnerst. | 25 Marcus | 4 | 40 | 19 ♐ | ☌♃. □♂. ✱♀. kalte stern. | 4 | 46 | 7 | 13 |
| Freytag | 26 Ezechias | 5 | 38 | 2 ♑ | ☾ 6. U. 35. ab. □♃. ✱☿. | 4 | 44 | 7 | 15 |
| Sonnab. | 27 Anastasius | 6 | 36 | 15 ♑ | △♂. Schneelufft ☿ der | 4 | 42 | 7 | 17 |
| XVIII. Woche. | Ev. Von verschloßnen Thür/ Joh. 20. Epist. Alles was von GOtt/ 1. Joh. 5. | | | | Tagslänge 14 St 35. min. Nachtlänge 9. St. 25. min. | | | | |
| Sonntag | 28 Qvasimod. | 7 | 34 | 29 ♑ | ✱♃. unfreund- Sonnen | 4 | 39 | 7 | 20 |
| Montag | 29 Sybilla | 8 | 32 | 13 ♒ | ☍♄. ☌♀. lich April nahe | 4 | 37 | 7 | 22 |
| Dienstag | 30 Eutropius | 9 | 30 | 28 ♒ | Wetter hält an. unsichtbar | 4 | 35 | 7 | 24 |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de /rosdok/ppn1028054971/phys_0018
DFG

d. 4ten der H. R. H. R. v. Petkum auch Monsr Walter wieder gekl.
d. 5ten der H. Walter wieder nach Suerin gegangen, und
d. 7ten Abends die 3 Bürgermst. und 3. Raths-Personen nach
Doberan, und der H. Cammer Secret: Havemann
die Bützowschen, auch dahin nach Doberan gebracht.
woselbst dieser gantzer Raht bis in der 4ten
Woche recht fürstl. tractirt worden, und alle
Freyheit genossen haben, in Hoffnung, mit ihnen gütt.
der Accise wegen zu handeln, welche Commission bis d. 4ten May
gedauret, und sehr fruchtlos geschlossen.
d. 9ten Ist die arrestirte Bürgerschaft von der Schreiberey
dimittirt, und nach ihren Häusern gegangen.

d. 27ten Morgends umb Uhr, ist mein lieber Bruder Siemsen, Pensionarius zu Satow, fast gesundes Leibes, seelig entschlafen.
d. 27ten Abends umb ½ 8. Uhr, hat dem Syndicus Krohn, und Protonotarius Eggerdes, wie sie nach Doberan gefahren, ein Luffer von der Chaise verlohren.

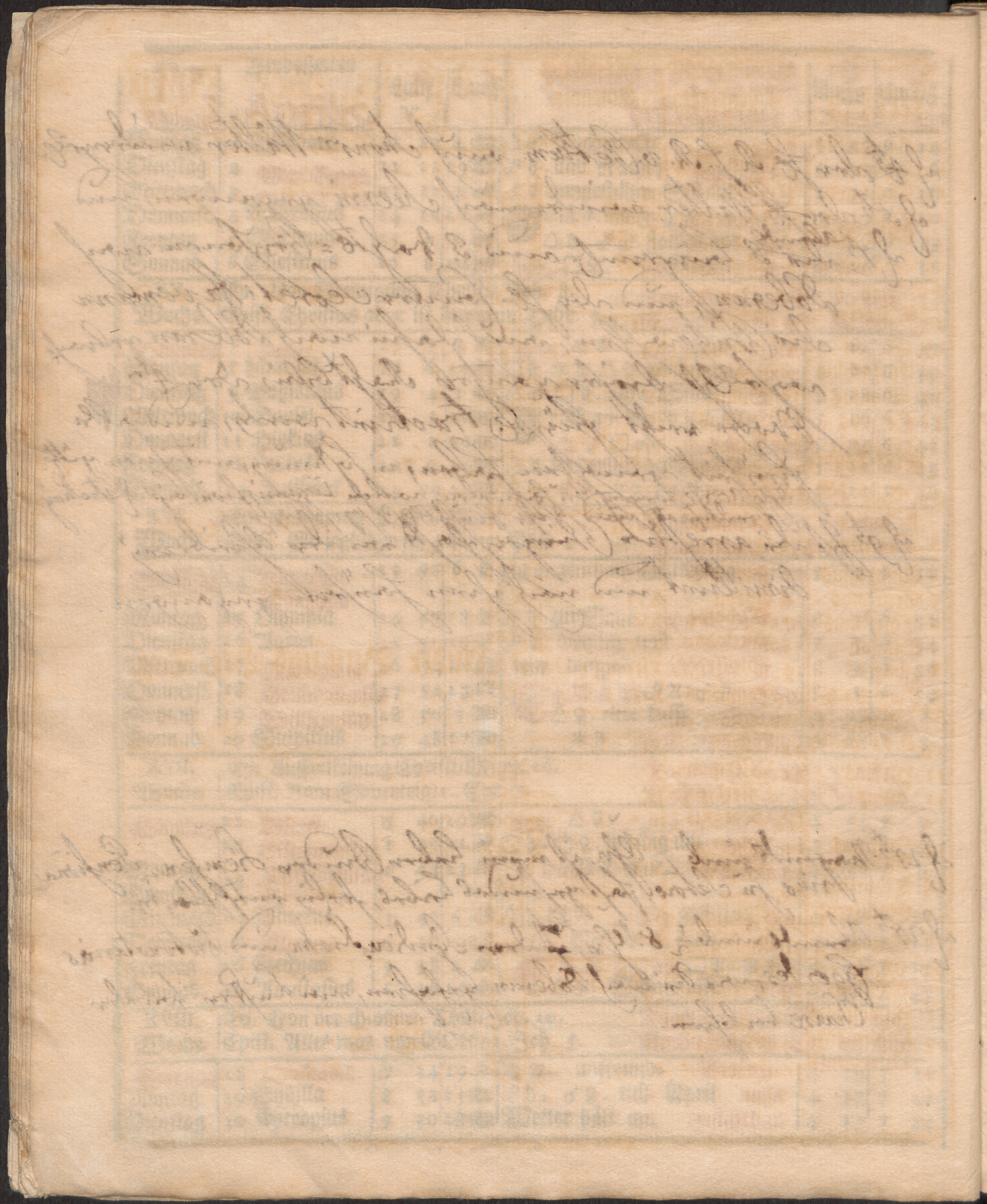

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0020
DFG

# Aprilis oder April hat XXX. Tage.

| Julianischen Calenders. MARTIUS | Gregorianisch Calenders APRILIS | Römischer Calender. | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 21 Benedictus | 1 Theodora | | | 1 |
| 22 Raphael | 2 Mar. Egypt. | IV | | 2 |
| 23 Eberhard. | 3 Christian | III | Non. Idum. | 3 |
| 24 Casimirus | 4 Ambrosius | Pridie | | 4 |
| 25 Mar. Verk. | 5 Maximus | Nonæ | | 5 |
| 26 Emanuel | 6 Cölestinus | VIII | | 6 |
| Ev. Joh. 6. | Ev. Joh. 8. | | | ☉ |
| 27 | 7 | VII | | 7 |
| 28 Gideon | 8 Liborius | VI | | 8 |
| 29 Eustachius | 9 Bogislaus | V | | 9 |
| 30 Adonias | 10 Daniel | IV | Aprilis | 10 |
| 31 Detlaus | 11 Hiskias | III | | 11 |
| 1 Theodora | 12 Julius | Pridie | | 12 |
| 2 | 13 Justinus | Idus | | 13 |
| Ev. Joh. 8. | Ev. Matth. 21. | | | ☉ |
| 3 Christian | 14 Tiburtius | XVIII | | 14 |
| 4 Ambrosius | 15 Olympia | XVII | | 15 |
| 5 Maximus | 16 Aaron | XVI | | 16 |
| 6 Cölestinus | 17 Rudolph | XV | | 17 |
| 7 Simson | 18 Gründon. | XIV | Calendarum | 18 |
| 8 Liborius | 19 Stillfreyt. | XIII | | 19 |
| 9 Bogislaus | 20 Sulpitius | XII | | 20 |
| Ev. Matth. 21. | Ev. Marc. 16. | | | ☉ |
| 10 B. Palmarum | 21 Ostern | XI | | 21 |
| 11 Hiskias | 22 Ostermont. | X | | 22 |
| 12 Julius | Osterdienst. | IX | | 23 |
| | 23 Georgius | | | |
| 13 Justinus | 24 Albertus | VIII | Maji | 24 |
| Gründon. | 25 Marcus | VII | | |
| 14 Tiburtius | | | | 25 |
| 15 Stillfreyt. | 26 Ezechias | VI | | 26 |
| 16 Aaron | 27 Anastasius | V | | 27 |
| Ev. Marc. 16. | Ev. Joh. 20. | | | ☉ |
| 17 B. Ostern | 28 Quasimodo | IV | | 28 |
| 18 Rudolphus | 29 Sybilla | III | | 29 |
| 19 Ostermont. | 30 Eutropius | Pridie | | 30 |
| Osterdienst. | | | | |

Ander Buß- und Bet-Tag.



Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0021
DFG

| V. Monath | Verbesserter Majus | ☾ Lauff ♉ | ☾ Lauff | Himmels-Begebenheiten. | ☉ Auffg. | ☉ Unterg. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Mittwoch | 1 Philipp. Jac. | 10 28 | 13 ♑ | ☽ ☍ ♂. ☌ ☿. trüb ♄ um | 4 33 | 7 26 |
| Donnerst. | 2 Sigismund | 11 26 | 28 ♑ | ☌ ♃. wolckicht 9 Abends | 4 31 | 7 28 |
| Freytag | 3 Erfind. | 12 24 | 13 ♒ | ☽ 10 U. 3 morg △ ♄. ☉ Fin- | 4 29 | 7 30 |
| Sonnab. | 4 Florianus | 13 22 | 28 ♒ | ☌ ☿ stern neuer in süden | 4 27 | 7 32 |
| XIX. Woche. | Ev. vom guten Hirten. Joh. 10. Ep. Dazu seyd ihr beruffen 1. Pet. 2. | | | Tagslänge 15. St. 5. min. Nachtlänge 8. St. 55. min. | | |
| Sonntag | 5 Mis. Dom. | 14 20 | 13 ♓ | ☽ ☿ ☍ ♄. △ ♂. ✱ ☿ schein um | 4 25 | 7 34 |
| Montag | 6 Hagäus | 15 18 | 27 ♓ | ✱ ♃. □ ☿ deutet auf morgens un- | 4 24 | 7 36 |
| Dienstag | 7 Felicitas | 16 16 | 11 ♈ | ✱ ♄. □ ☿. frische Mayen ter | 4 22 | 7 37 |
| Mittwoch | 8 Stanislaus | 17 14 | 25 ♈ | □ ♃. □ ♂ △ ☿ lufft der | 4 20 | 7 39 |
| Donnerst | 9 Hiob | 18 12 | 8 ♉ | ☌ ☉ doch nicht zu Sonnen | 4 18 | 7 41 |
| Freytag | 10 Gordianus | 19 9 | 20 ♉ | ☽ 8 U. 56 morg ✱ ♂. △ ☿ nah | 4 16 | 7 43 |
| Sonnab. | 11 Pancratius | 20 7 | 2 ♊ | △ ♃. ☌ ♂ ☿ trauen Unsicht bahr | 4 14 | 7 45 |
| XX. Woche. | Ev. Uber ein kleines Joh. 16 Ep. Lieben Brüder ich ermahne 1. Pet 2. | | | Tagsl. 15. St. 31. M. Nachtl. 8. St. 41. M. | | |
| Sonntag | 12 Jubilate. | 21 5 | 14 ♊ | ☌ ♄. nachtfrost ♂ um 10 | 4 12 | 7 47 |
| Montag | 13 Servatius | 22 3 | 26 ♊ | Tages Regen und Uhr abends | 4 10 | 7 49 |
| Dienstag | 14 Christiern | 23 0 | 8 ♋ | ☍ ☿ scharffe Lufft in süden | 4 9 | 7 50 |
| Mittwoch | 15 SOPHIA | 23 59 | 20 ♋ | ☽ Ap. ☿ ☌ ☍ ♂. ☍ ☿. umb | 4 9 | 7 50 |
| Donnerst. | 16 Peregrinus | 24 57 | 2 ♌ | ✱ ♄. ☍ ♃. allmählig Uhr | 4 7 | 7 52 |
| Freytag | 17 Jodocus | 25 54 | 14 ♌ | ☽ ☌ stiller und klahr unter | 4 5 | 7 54 |
| Sonnab. | 18 Ericus | 26 51 | 29 ♌ | ☉ ☌ U. 57 m. Mittag Venus | 4 3 | 7 56 |
| XXI. Woche. | Ev. Christi Hingang Joh. 16. Ep. Irret nicht lieben/Jac. 1. | | | Tagslänge 15. St. 53. m. Nachtlänge 8. St. 7. m. | | |
| Sonntag | 19 Cantate | 27 49 | 8 ♍ | □ ♄. △ ☿. angenehmer 1. Stund | 4 2 | 7 57 |
| Montag | 20 Athanasius | 28 47 | 20 ♍ | ✱ ♂. Sonnenschein vor sonnen | 4 0 | 7 59 |
| Dienstag | 21 Prudentia | 29 44 | 3 ♎ | ♄ Ost. △ ♃. △ ☿. ☌ ♃ ☿ gelind | 3 59 | 8 0 |
| Mittwoch | 22 Helena | ♎ 42 | 16 ♎ | ☉ ♓. △ ♄. □ ♂. □ ☿ u. warm auf | 3 57 | 8 2 |
| Donnerst. | 23 Desiderius | 1 39 | 29 ♎ | □ ♃. doch verändr gang | 3 56 | 8 4 |
| Freytag | 24 Esther | 2 37 | 12 ♏ | △ ♂. ✱ ☿. □ ☿. lich in Osten | 3 54 | 8 5 |
| Sonnab. | 25 Urbanus | 3 35 | 25 ♏ | und sehr unbeständig morgens | 3 53 | 8 6 |
| XXII. Woche. | Ev. Wahre Bekunst Joh. 16. Ep. Seyd Thäter des Worts Jac. 1. | | | Tagslänge 16. St. 13. m. Nachtlänge 7. St. 47 m. | | |
| Sonntag | 26 Rogate | 4 32 | 9 ♐ | ☽ 11 U. 49. morg ☍ ♄. ✱ ♃. △ ♄ ☿ | 3 51 | 8 8 |
| Montag | 27 Ludolph. | 5 29 | 23 ♐ | mehr wind und ♄ der | 3 50 | 8 9 |
| Dienstag | 28 Wilhelm | 6 27 | 7 ♑ | ☍ ♂ sturm bey Sonnen na- | 3 48 | 8 11 |
| Mittwoch | 29 Maximin | 7 25 | 22 ♑ | ☽ Per. ☌ ☿ trüben hin. | 3 47 | 8 12 |
| Donnerst. | 30 Himmelf. | 8 22 | 7 ♒ | ☽ ♉ △ ♄. ☌ ♃ Wetter sichts | 3 46 | 8 13 |
| Freytag | 31 Petronella | 9 19 | 22 ♒ | ☌ ☿ wölckicht Himmel. dahe. | 3 45 | 8 14 |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0022
DFG

d. 1ten May ist die Bürgerschaft in Rostock wiederumb auf
der ~~Rathhaus~~ Schreiberey, und gegen Abend der Rath zu Dobe-
ran arrestiret, ~~[illegible]~~ von der Land Milice bewachet,
und nicht mehr öffentl. an einer Taffel, sondern
einjeder in sein Logement gespeiset worden.

d. 4ten Morgends umb 4. Uhr, sind die drey Bürgerm. und 3. Raths-
herren, wiederumb ~~auf~~ 7. Reutern von Doberan nach Suerin im
vorigen Arrest gebracht, die übrigen Rathsh. ab noch alda
zu Doberan gefängl. verwahret, und täglich mit 1½ ℔ Brod,
so viel Fleisch und einem Gott, einjeder gespeiset worden.

d. 11ten Nachmittags umb 3. Uhr, ist der H. R. H. R. v. Oetlum, wied
von Rostock nach dem Braunschweigisch Congress gegang.

d. 16ten Morgends sind die 3 B. u. 3. Rathsherren wied von Suerin nach
Doberan gebracht, und ~~d. 17ten~~ in selbiger Nacht abermahl wied
dahin geführet werden sollen, doch nur bis Hohenfiecheln
gekommen, von wannen sie per Expressen zurück nach Rost. ge-
fordert worden, und

d. 18ten Morgends gegen 5. Uhr, aebst denen zu Doberan arrestirt
gewesenen 9. Raths Verwandten, und dem Syndico
Krohnen, auf drey offenen Wagen herein geführet,
und auf dem Rathhause in zwey Stuben gebracht
worden, NB jedoch ohne Wache. Worauf

d. 20ten Morgends umb 10. Uhr, die, auf der Schreiberey
arrestirt gewesene 45. Bürgere von denen 100.
Männern, da sie nicht freywillig von der Schreibe-
rey abgehen, und zu Rathhause kommen wollen,
durch 50. Mann Infanterie, übers Markt, dahin
be-

begleitet, wonach auch die jenig Bürgere von denen 100.
Männern, so sich Dermo subtilisiret, auf P. u. R. an-
suchen, wiederumb adcitiret worden, umb mit ihnen
der Accise weg zu conferiren, welche Submittenten ab, da
sie von P. u. R. auch arrestirten Bürgern wiedumb ~~auf~~
durch übele impressiones verführet worden, auch auf's Rath-
haus geblieben, und ihrem vorigem Arrest denuo angetreten.

# Majus oder May hat XXXI. Tage.

| Julianischen Calenders APRILIS | Gregorianisch. Calenders MAJUS | Römischer Calender | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 20 Sulpitius | 1 Phil. Jac. | Kal. Maj. | | 1 |
| 21 Adelarius | 2 Sigismund | VI | Non. | 2 |
| 22 Cajus | 3 ✝ Erfind. | V | | 3 |
| 23 Georgius | 4 Florianus | IV | | 4 |
| Ev. Joh. 20. | Ev. Joh. 10. | | | ☉ |
| 24 B. Quasim. | 5 Mis. Dom. | III | | 5 |
| 25 Marcus | 6 Hagäus | Pridie | | 6 |
| 26 Ezechias | 7 Felicitas | Nona | | 7 |
| 27 Anastasius | 8 Stanislaus | VIII | Idum Maji | 8 |
| 28 Vitalis | 9 Hiob | VII | | 9 |
| 29 Evtropius | 10 Gordianus | VI | | 10 |
| 30 Sybilla | 11 Pancratius | V | | 11 |
| Ev. Joh. 10. | Ev. Joh. 16. | | | ☉ |
| B. Mis. Dom. | 12 Jubilate | IV | | 12 |
| 1 Phil. Jacob | | | | 13 |
| 2 Sigismund | 13 Servatius | III | | |
| 3 ✝ Erfind. | 14 Christiern | Pridie | Calen- | 14 |
| 4 Florianus | 15 SOPHIA | Idus | | 15 |
| 5 Gothard | 16 Peregrinus | XVII | | 16 |
| 6 Hagäus | 17 Jodocus | XVI | | 17 |
| 7 Felicitas | 18 Eritus | XV | | 18 |
| Ev. Joh. 10. | Ev. Joh. 16. | | | ☉ |
| 8 B. Jubilate | 19 Cantate | XIV | | 19 |
| 9 Hiob | 20 Athanasius | XIII | | 20 |
| 10 Gordianus | 21 Prudentia | XII | darum | 21 |
| 11 Pancratius | 22 Helena | XI | | 22 |
| 12 Nero | 23 Desiderius | X | | 23 |
| 13 Servatius | 24 Esther | IX | | 24 |
| 14 Christiern | 25 Urbanus | VIII | | 25 |
| Ev. Joh. 16. | Ev. Joh. 16. | | | ☉ |
| B. Cantate | 26 Rogate | VII | | 26 |
| 15 SOPHIA | | | | |
| 16 Peregrinus | 27 Ludolph. | VI | Junii. | 27 |
| 17 Jodocus | 28 Wilhelm | V | | 28 |
| 18 Ericus | 29 Maximinus | IV | | 29 |
| 19 Potentia | 30 Himmelf. | III | | 30 |
| 20 Athanasius | 31 Petronella | Pridie | | 31 |



Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0025
DFG

| VI. Monath | Verbesserter Junius. | ☉ Lauff ♊ | ☾ Lauff | Himmels-Begebenheiten. | ☉ Auffg. | ☉ Untergang. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Sonnab. | 1 Gotteschalck | 10 16 | 0 ♓ ☌ 5 ☍ 50. ☌ ☐♄. △♂. | ♄ | 3 43 | 8 16 |
| XXIII. Woche. | Ev Sendung des Tröster/Joh. 15. Epist So seyd nun mäss g/ 1. Petr. 4. | | | Taglänge 16 St. 33. min. Nachtlänge 7. St. 27. min. | | |
| Sontag | 2 Exaudi | 11 14 | 21 ♓ | ☿ ☊. warm Sonnen- | um 10 Uhr | 3 42 8 17 |
| Montag | 3 Erasmus | 12 11 | 5 ♉ | ☌♄. ☌♃. ☌♀. schein | abends | 3 41 8 18 |
| Dienstag | 4 Orius | 13 8 | 19 ♉ | ☐♂. geschwühlige | südwest | 3 40 8 19 |
| Mittwoch | 5 Bonifacius | 14 6 | 3 ♊ | ☐♃. ☐♀. ☌☿. Lüft | um 1. Mit | 3 39 8 20 |
| Donnerst. | 6 Artemius | 15 4 | 16 ♊ | ☌♂. bringt Laub | ternacht | 3 38 8 21 |
| Freytag | 7 Lucretia | 16 2 | 29 ♊ | △♀. und Blüthe merck- | unter. | 3 37 8 22 |
| Sonnab. | 8 Medardus | 16 59 | 11 ♋ | ☌♄ △♃ ☐☿. lich herfür | ♃ | 3 37 8 23 |
| XXIV. Woche. | Ev. Vom Hrn. Geist/Joh. 14. Epist. Und als der Tag/ Act. 2. | | | Taglänge 16. St. 45. min. Nachtlänge 7. St. 15. min. | | |
| Sonntag | 9 Pfingsten. | 17 56 | 23 ♋ | ☽ voll. 10m Nacht. | ☐♄. Erfr | 3 37 8 22 |
| Montag | 10 Pfingstmont. | 18 53 | 5 ♌ | ☐♄☿. ☌☉☿ feucht | vor der | 3 36 8 23 |
| Dienstag | 11 Pfingstdienst. | 19 51 | 17 ♌ | ☌♂. △☿. △♂☿. und | Sonnen | 3 35 8 24 |
| Mittwoch | 12 Oygtember. | 20 48 | 28 ♌ | ☽ Ap. ☍♀☌♃☿. | naß auff | 3 35 8 24 |
| Donnerst. | 13 Tobias | 21 46 | 10 ♍ | ☼♄. ☍♃. herb und | 1. Stunde | 3 34 8 25 |
| Freytag. | 14 Valerius | 22 43 | 22 ♍ | unfreundlich stür- | östlich sicht | 3 33 8 26 |
| Sonnab. | 15 Vitus | 23 40 | 4 ♎ | ☿ ☋. michte Lufft | bahr | 3 33 8 26 |
| XXV. Woche. | Ev. Gespräch Christi mit Nicodemo Joh. 3. Epist. O welch eine Tieffe Rom. 11. | | | Tagslänge 16. St. 53. min. Nachtlänge 7. St. 7. min. | | |
| Sonntag | 16 Trinitat. | 24 37 | 7 ♎ | ☐♄. ☼☌♂. △♄ | wieder ♂ um | 3 33 8 26 |
| Montag | 17 Volckmar | 25 34 | 0 ♏ | ☍☿ still angenehm | abends | 3 32 8 27 |
| Dienstag | 18 Arnolphus | 26 31 | 12 ♏ | ☽ Ufo. Mors | △♄. △♃. ☐♂. | 3 32 8 27 |
| Mittwoch | 19 Gervasius | 27 28 | 25 ♏ | warme Tag | in Süden | 3 32 8 27 |
| Donnerst. | 10 Frohnl. | 28 25 | 9 ♐ | ☐♃ beständig ☉ schein | um 1. U | 3 32 8 27 |
| Freytag | 21 Rachel | 29 23 | 22 ♐ | △♐. ☐♀ und gut Wetter | unter | 3 32 8 27 |
| Sonnab. | 22 Achatius | ♋ 20 | 9 ♑ | ☉♋. längster Tag | ☍♄. ☼♃ △☿ | 3 31 8 28 |
| XXVI. Woche | Ev. Vom reichen Mann Luc 16. Ep. GOtt ist die Liebe Joh. 4. | | | Tageslänge 16 St. 57. min. Nachtlänge 7. St. 3. min. | | |
| Sonntag | 23 1. n. Trin. | 1 18 | 19 ♑ | Sonners Anfang | ☼♀. ☌♃☿. ☿ | 3 32 8 27 |
| Montag | 24 Joh: Täuff | 2 15 | 3 ♒ | ☾ 8. U. 51. m. Morg | ge- 2. St | 3 32 8 27 |
| Dienstag | 25 Eulogius | 3 12 | 18 ♒ | ☐☿ schwühl zum | Morgenstern | 3 32 8 27 |
| Mittwoch | 26 Jeremias | 4 9 | 2 ♓ | ☽ Per. | ☍♂. Donner ge- | ☿ ein 3 32 8 27 |
| Donnerst. | 27 7 Schläffer | 5 6 | 16 ♓ | ☽ ☼. ☿ Dir. | △♄. ☌♃. ☼☿. | St 3 32 8 27 |
| Freytag | 28 Josua | 6 4 | 1 ♈ | ☌♀. ☐♂☿ | neigt | abendstern 3 33 8 26 |
| Sonnab. | 29 Pet. Paul. | 7 1 | 15 ♈ | ☐♄. △♂ | Regen und | in 3 33 8 26 |
| 27. Woche. | Grossen Abendmahl Luc 14. Ep. 1 Joh. 3. | | | | Tagl. 16 St. 53 m. Nachtl. 7. St. 7. m. | |
| Sonntag | 30. 2. n. Trin. | 7 57 | 12 ♈ | temperirte Lufft | Westen. | 3 33 8 26 |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0026
DFG

d. 3t Morgends zwischen 5. und 6. Uhr, sind B. u. R. auch 11. von denen
100. Männern auf dreyen schlechten offenen Wagen ℘
wiederumb nach Suerin gebracht, etliche von denen Bür-
gern aber, so ihr Bündelchen auf den Stock gesteckt gehabt,
zu Fuße dahin gehen müßen. die dreyl. B. als Stöver
und Beselin, sind oben, Thielcke aber unten allein
in der Pleycammer, mit einem Unter-Officier
in das Zimmer, und draußen von 2. Musquetieren
bewahret worden. die Rathsherren, und einige der
vornehmsten Bürgere, sind auf allen Logementern
im Schloße, auf gleiche Ohrt bewahret, die übrigen
Bürgere aber, unter am Walle in der Orangerie,
mit 8. Mann bewahret, elendigl. auf ein gar weni-
ges Stroh und harten Bretteren liegen müßen, so daß,
wie ihnen alle Fenster mit Bretteren gantz zugena-
gelt, sie nicht des Tages Licht sehen können, und
fast denen wilden Leuten ähnlich gesehen.

NB diese Arrestanten sind überall von Monsr.
Plauen und dessen Frau, der Castellanin, täglich
einmahl gespeyset, jedoch auf Serm. Conto.

℘ mit 9. Reuteren, und 50. Soldaten

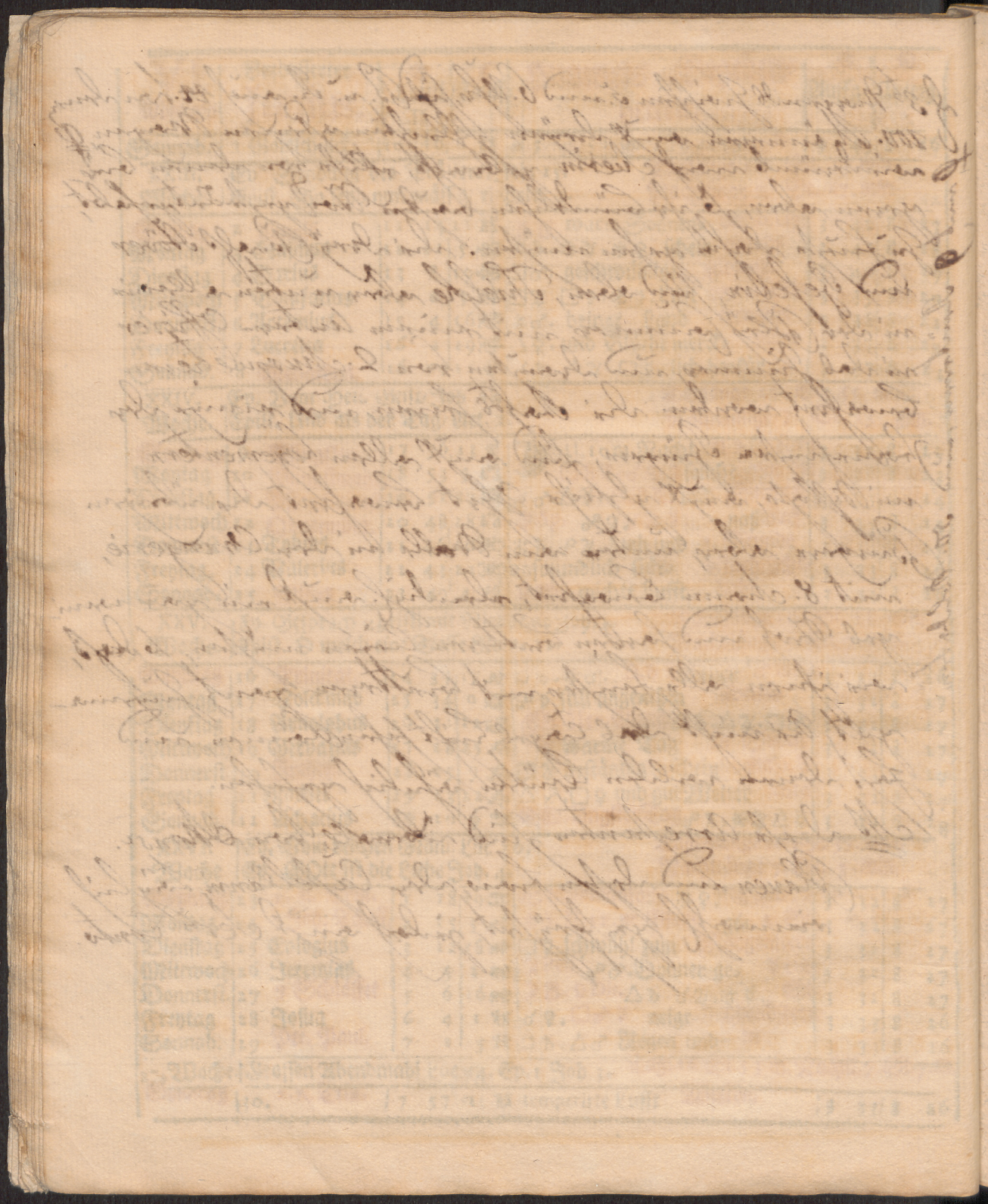

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0028
DFG

# Junius oder Brachm. hat XXX. Tage.

| Julianischen Calenders MAJUS | Gregorianisch. Calenders JUNIUS | Römischer Calender | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 21 Prudentia | 1 Gottschalck | Kal. Junii | | 1 |
| Ev. Joh. 16 | Ev. Joh. 15. | | | ☉ |
| 22 B. Rogate Helena | 2 Exaudi | IV | | 2 |
| 23 Desiderius | 3 Erasmus | III | | 3 |
| 24 Esther | 4 Darius | Pridie | Non. | 4 |
| 25 Urbanus | 5 Bonifacius | Nona | | 5 |
| 26 Himmelf. | 6 Artemius | VIII | | 6 |
| 27 Ludolphus | 7 Lucretia | VII | | 7 |
| 28 Wilhelmus | 8 Medardus | VI | | 8 |
| Ev. Joh. 15 | Ev. Joh. 14 | | | ☉ |
| 29 B. Exaudi | 9 Pfingsten | V | | 9 |
| 30 Wichand. | 10 Pfingstm. | IV | | 10 |
| 31 Petronella | 11 Pfingstdienst | III | | 11 |
| 1 Gotschalck | 12 Quatember. | Pridie | Idus. | 12 |
| 2 Nicomed. | 13 Tobias | Idus | | 13 |
| 3 Erasmus | 14 Valerius | XVIII | | 14 |
| 4 Darius | 15 Vitus | XVII | | 15 |
| Ev. Joh. 14. | Ev. Joh. 3. | | | ☉ |
| 5 B. Pfingsten | 16 Trinit. | XVI | | 16 |
| 6 Pfingstmont. | 17 Volckmar. | XV | | 17 |
| 7 Pfingstdienst | 18 Arnolphus | XIV | | 18 |
| 8 Quatember Medardus | 19 Gervasius | XIII | | 19 |
| 9 Barnimus | 20 Frohnl. | XII | Calenda- | 20 |
| 10 Flavius | 21 Rachel | XI | | 21 |
| 11 Barnabas | 22 Achatius | X | | 22 |
| Ev. Joh. 3. | Ev. Luc. 16 | | | ☉ |
| 12 B. Trinit. | 23 1. n. Trin. | IX | | 23 |
| 13 Basilides | 24 Joh. Täuf. | VIII | | 24 |
| 14 Valerius | 25 Eyloglus | VII | | 25 |
| 15 Vitus | 26 Jeremias | VI | | 26 |
| 16 Frohnl. | 27 7. Schläfer | V | | 27 |
| 17 Volckmar | 28 Josua | IV | rum Julii. | 28 |
| 18 Arnolphus. | 29 Petr. Paul | III | | 29 |
| Ev. Luc. 16. | Ev. Luc. 14. | | | ☉ |
| 19 B. 1. n. Trin. | 30 2. n. Trin. | Pridie | | 30 |

| VII. Monath | Verbesserter Julius. | ☉ Lauf | ☽ Lauff | Himmels-Begebenheiten. | ☉ Auffg | ☉ Unterg. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Montag | 1 Theod. no | 8 54 17 ♒ | | 4. 37 morg. ☌ ♄. ☌ ♃. □ ♂ | 3 33 | 8 26 |
| Dienstag | 2 Mar. Heims. | 9 51 27 ♒ | | ☌ ☿. ☌ ☿. vermuthlich ♄ bey | 3 34 | 8 25 |
| Mittwoch | 3 Cornelius | 10 48 11 ♓ | | □ ♃. noch bequem Untergang | 3 35 | 8 24 |
| Donnerst. | 4 Ulricus | 11 46 24 ♓ | | ☌ ♂. Sonnenschein der Sonn | 3 35 | 8 24 |
| Freytag | 5 Anshelmus | 12 43 6 ♈ | | □ ☿ klahre Lufft Südwest | 3 36 | 8 23 |
| Sonnab. | 6 Hector | 13 40 19 ♈ | | ☍ ♄. △ ♃. hält an um 11. Uhr | 3 37 | 8 22 |
| XXVIII. Woche. | Ev. Vom verlohrnen Schafe/Luc. 15. Epist. So demühtiget euch/1. Petr 5. | | | | Tageslänge 16. St. 45. min. Nachtlänge 7. St. 15. min. | |
| Sonntag | 7 13. n. Trinit. | 14 37 | 0 ♉ | ☌ ☽. ander Wetter abend unter. | 3 37 | 8 22 |
| Montag | 8 Kilian | 15 34 | 13 ♉ | ☾ 5. U. 6. ab. △ ☿. ♃ um 12. | 3 38 | 8 21 |
| Dienstag | 9 Cyrillus | 16 31 | 25 ♉ | ☽ Ap. ☍ ☾. ☍ ♂. Uhr mitter | 3 39 | 8 20 |
| Mittwoch | 10 7. Brüder | 17 29 | 6 ♊ | ☽ ☌. □ ☿. mit Wind nacht auff | 3 40 | 8 19 |
| Donnerst. | 11 Pius | 18 26 | 18 ♊ | ☌ ♄. ☍ ♃. und Kühlung 3 stunde | 3 41 | 8 18 |
| Freytag | 12 Henricus | 19 23 | 0 ♋ | ☌ ♃ ☉ Regen mäßig tichtbahr. | 3 42 | 8 17 |
| Sonnab. | 13 Margareth | 20 20 | 13 ♋ | □ ♄. ☍ ☿. △ ☿. ☌ ♄ ☾. □ ♄ ☿. | 3 43 | 8 16 |
| XXIX. Woche. | Ev. Seyd barmhertzig/Luc. 16. Epist. Ich halte es dafür/Rom 8. | | | | Tageslänge 16. St. 33. min. Nachtlänge 7. St. 27. min. | |
| Sonntag | 14 4. n. Trinit. | 21 17 | 25 ♋ | ☌ ♂. trüb und etwas ♂ Abends | 3 45 | 8 14 |
| Montag | 15 Apost. Theil | 22 15 | 8 ♌ | △ ♄. △ ♃. windig in Osten | 3 46 | 8 13 |
| Dienstag | 16 Ruth | 23 12 | 21 ♌ | ☾ U. 55. nachm. □ ♂. □ ♃ ☿. | 3 47 | 8 12 |
| Mittwoch | 17 Alexius | 24 10 | 5 ♍ | ☾ verändertich um 11 uhr unter | 3 48 | 8 11 |
| Donnerst. | 18 Rosina | 25 7 | 18 ♍ | □ ♃. ☍ ☿. △ ♄ ☿. und ♀ um | 3 50 | 8 9 |
| Freytag | 19 Bet-Tag | 26 4 | 2 ♎ | △ ♂ freundlich Gewitter Mitter | 3 51 | 8 8 |
| Sonnab. | 20 Elias | 27 2 | 16 ♎ | ☍ ♄. ☌ ♃. □ ♀. Sturm nacht | 3 53 | 8 6 |
| XXX. Woche. | Ev. Vom reichen Fischzug/Luc 15. Epist. Endlich aber seyd allesamt/1. Pet. 3. | | | | Tageslänge 16. St. 13. min. Nachtlänge 7. St. 47. min. | |
| Sonntag | 21 5. n. Trinit. | 27 59 | 0 ♏ | ☽ ☌ ☉. Hitze nimmt zu auf. in Osten | 3 53 | 8 6 |
| Montag | 22 Mar. Magd. | 28 56 | 14 ♏ | ☽ ☌ ☿. Hunds Tag Anfang △ ☿ | 3 54 | 8 5 |
| Dienstag | 23 Apollonar | 29 53 | 28 ♏ | ☾ 1. U. 55 M. ☍ ♂. ☌ ♀. ☽ Ap. | 3 56 | 8 4 |
| Mittwoch | 24 Christina | ♌ 51 | 12 ♐ | ☾ △ ♄. ☍ ♃. sichtbahr bis die | 3 57 | 8 2 |
| Donnerst. | 25 Jacobi | 1 48 | 27 ♐ | □ ☿ bey heitern Sonn auffgehet. | 3 59 | 8 0 |
| Freytag | 26 Anna | 2 45 | 11 ♑ | □ ♄. Sonnenschein ☿ eine | 4 0 | 7 59 |
| Sonnab. | 27 Martha | 3 42 | 25 ♑ | △ ♂. ☍ ☿. ☌ ☿. klahr Stunde | 4 2 | 7 57 |
| XXXI. Woche. | Ev. Es sey denn eure Gerechtigkeit Matth. 5. Epist. Wisset ihr nicht daß/Rom. 6. | | | | Tageslänge 15. St. 55. min. Nachtlänge 8. St. 5. min. | |
| Sonntag | 28 6. n. Trinit. | 4 40 | 8 ♒ | ☌ ♄. ☌ ♃. △ ♂ ☿ Wetter nach | 4 3 | 7 56 |
| Montag | 29 Beatrix | 5 38 | 22 ♒ | bald geschwühlig drohet der ☉. | 4 5 | 7 54 |
| Dienstag | 30 Abdon | 6 36 | 6 ♓ | ☾ U. 52. mittag. □ ♂. abend | 4 7 | 7 52 |
| Mittwoch | 31 Germanus | 7 33 | 19 ♓ | □ ♃. ☍ ☿. Donner stern | 4 9 | 7 50 |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0030
DFG

d. 2t Ist horâ undecimâ meridianâ Ser^mus mit der gantzen Hof-
statt von Rostock weg- und nach Suerin gegangen,
Eod. des Abends umb 7. Uhr ist d. König von Dennemarck
mit 1500. Mann Cavallerie und Infanterie, wieder
ein marchiret, Ser^ii Haus in Possession genommen,
und ~~ist~~ am 6t Morgends umb 4. Uhr, nebst dem
gantzen Lager, so fürm Cräpelienschen Thor ge-
standen, aufgebrochen, und nach Pommern marchi-
ret; die Besatzung dänischer Seite in Rostock ist
geblieben 1200. Mann, Schwerinischer Seite 400. Mann,

d. 22t Sind die Tractaten zum güttlichen Accommodement
zwischen Fürstl. B. u. R. auch Bürgerschaft, der Stadt Rostock zu Suerin im
Cantz-Saal angefangen; wobey Fürstl. Commissarii gewesen,
der H. R. H. R. von Petkum, der H. Geh. Raht und Ober-
Marschall Baron von Eichholtz, und der H. Ober-Post-
Director Walter. Von Seiten der Stadt Rostock sind
Deputati gewesen, H. B. Stever und H. B. Thielde
der Syndicus Krohn, 2. Rahtsherren, der Protonotarius
Eggerdes und 12. Bürgere.

d. 25t Ist sämtlichen Arrestanten die Wache abgenommen,
und die Permission, außen Schlosse, und im Fürstl.
Garten zu promeniren, gegeben worden, wie
dann

dann auch die 3. Bürgerm. und der Syndicus
Krohn, zuweilen, die Marschalls Castel mit genoß-
sonsten aber, da die Persohn tägl. 1½ ℔ brod, und
eine Canne Bier gehabt, nunmehro zusammen ge-
speiset, und erlaubet worden, brandtwein,
Wein auch Tobacck sich holen zu lassen, welches
sich dann auch die Bürgerschafft bedienen
mögen.

Hienegst ist Ihnen auch erlaubet worden,
~~daß sie~~ mit allen und jeden, auch mit den
Ihrigen aus Rostock und anderen Frömboden
zu reden, auch wiederumb nach hause zu schreiben,
jedoch sind die briefe etliche mahl vorhero
durchgesehen, und dannegst auf die Post
gegeben worden.

# Julius oder Heum. hat XXXI. Tage

| Julianischen Calenders | Gregorianisch Calenders | Römische Calender | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 20 | 1 Theobald | Kal. Julii. | | 1 |
| 21 Rachel | 2 | VI | | 2 |
| 22 Achatius | 3 Cornelius | V | | 3 |
| 23 Carpasius | 4 Ulricus | IV | Non. | 4 |
| 24 | 5 Anshelmus | III | | 5 |
| 25 Evlogius | 6 Hector | Pridie | | 6 |
| Ev. Luc. 14. | Ev. Luc. 15. | | | ⊙ |
| 26 | 7 | | | 7 |
| 27 | 8 Kilian | VIII | | 8 |
| 28 Josua | 9 Cyrillus | VII | | 9 |
| 29 | 10 | VI | | 10 |
| 30 Paul Geb. | 11 Pius | V | Idum | 11 |
| 1 Theobald | 12 Henricus | IV | | 12 |
| 2 | 13 | III | | 13 |
| Ev. Luc. 15. | Ev. Luc. 16. | | | ⊙ |
| 3 | 14 | Pridie | | 14 |
| 4 Ulricus | 15 | | | 15 |
| 5 Anshelmus | 16 Ruth | XVII | | 16 |
| 6 Hector | 17 Alexius | XVI | | 17 |
| 7 Demetrius | 18 Rosina | XV | Calen- | 18 |
| 8 Kilian | 19 | XIV | | 19 |
| 9 Cyrillus | 20 Elias | XIII | | 20 |
| Ev. Luc. 16. | Ev. Luc. 15 | | | ⊙ |
| 19 | 21 | XII | | 21 |
| 11 Pius | 22 | XI | | 22 |
| 12 Henricus | 23 Apollonar. | X | | 23 |
| 13 | 24 Christina | IX | | 24 |
| 14 Bonavent. | 25 | VIII | | 25 |
| 15 | 26 | VII | | 26 |
| 16 Ruth | 27 Martha | VI | darum | 27 |
| Ev. Luc. 15. | Ev. Matth. 5. | | | ⊙ |
| 17 | 28 | V | | 28 |
| 18 Rosina | 29 Beatrix | IV | | 29 |
| 19 Ruffina | 30 Abdon | III | | 30 |
| 20 Elias | 31 Germanus | Pridie | | 31 |

C

| VIII. Monath | Verbesserter August. | ☉ Lauff ♌ | ☾ Lauff | Himmels-Begebenheiten. | ☉ Auffg. | ☉ Unterg. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Donnerst. | 1 Petr. Kett. | 8 31 | 2 ♐ | ☽ Ket. ☌♂. ☌☿. und ♄ gehet | 4 10 | 7 49 |
| Freytag | 2 Hannibal | 9 29 | 14 ♐ | ☌♄. △♃. vielen Regen 1. Stunde | 4 12 | 7 47 |
| Sonnab. | 3 Eleasar | 10 20 | 27 ♐ | mit Sturmwind nach der Sonn | 4 14 | 7 45 |
| XXXII. Woche. | Ev. Von Speisung 4000. Mann/Marc. 8. Epist. Ich muß menschlich davon/Rom. 6. | | | | Tageslänge 15 St. 31. min. Nachtlänge 8. St. 29. min. | |
| Sonntag | 4 7. n. Trinit. | 11 23 | 9 ♑ | ☐☿. Hagel/Wetter unter. | 4 16 | 7 43 |
| Montag | 5 Dominicus | 12 21 | 21 ♑ | ☌☿. ☐♂☉. leuchten ♃ geht um | 4 18 | 7 41 |
| Dienstag | 6 Sixtus | 13 18 | 2 ♒ | ☽ Apog. ☌♂. meist 11. Uhr | 4 20 | 7 39 |
| Mittwoch | 7 Donatus | 14 16 | 14 ♒ | 10. U. 24. morg ☌♄. ☍♃ | 4 22 | 7 37 |
| Donnerst. | 8 Cyriacus | 15 13 | 26 ♒ | ☐☿. abends feucht Abends | 4 24 | 7 36 |
| Freytag | 9 Romanus | 16 11 | 7 ♓ | ☌♄☿. und herb regnicht auff | 4 25 | 7 34 |
| Sonnab. | 10 Laurentius | 17 9 | 21 ♓ | ☐♄. △☿. ☌♃☿. wieder mäßig | 4 27 | 7 32 |
| XXXIII. Woche. | Ev. Vom falschen Propheten/Matth. 7. Epist. So sind wir nun lieben/Rom. 8. | | | | Tagslänge 15. St. 5. min. Nachtlänge 8. St. 55. min. | |
| Sonntag | 11 8. n. Trinit. | 18 7 | 3 ♈ | ☌♂. ☐♃☿. Sonnenschein ♂ | 4 29 | 7 30 |
| Montag | 12 Clara | 19 5 | 16 ♈ | △♄. △♃. ☍☿. angenehm von | 4 31 | 7 28 |
| Dienstag | 13 Hippolitus | 20 3 | 29 ♈ | Gewitter trocken und 8. bis 10. | 4 33 | 7 26 |
| Mittwoch | 14 Eusebius | 21 0 | 13 ♉ | ☐♃. ☐♂. ☍☿. ☌☉☿. Süden | 4 35 | 7 24 |
| Donnerst. | 15 Mar. Himelf. | 21 58 | 27 ♉ | 1. U. 27. m. nacht warm | 4 35 | 7 24 |
| Freytag | 16 Isaac | 22 56 | 11 ♊ | ☍♄. ☌♃. △♂. unbeständig | 4 37 | 7 22 |
| Sonnab. | 17 Willibald | 23 53 | 26 ♊ | △☿. ☐♂☿. unfreundlich sichte | 4 39 | 7 20 |
| XXXIV. Woche. | Ev. Ungerechten Haußhalter/Luc. 16. Epist. Das ist aber uns zum/1. Cor. 10. | | | | Tagslänge 14 St. 41. min. Nachtlänge 9. St. 19. min. | |
| Sonntag | 18 9. n. Trinit. | 24 51 | 10 ♋ | △☿. ☐♃☉ doch mit ver- bahr. | 4 41 | 7 17 |
| Montag | 19 Sebaldus | 25 49 | 25 ♋ | ☐☿. mischten Sonnenschein ☿ | 4 44 | 7 15 |
| Dienstag | 20 Bernhard | 26 47 | 9 ♌ | ☽ Per. ☽ ☍. ☐☿. zur vor der | 4 46 | 7 13 |
| Mittwoch | 21 Symphor | 27 45 | 23 ♌ | 7. U. 10. abends △♄. ☌♃. | 4 48 | 7 11 |
| Donnerst. | 22 Zachäus | 28 43 | 7 ♍ | ☌☿. ☌☿. Erndte Sonnen | 4 50 | 7 9 |
| Freytag | 23 Philibert | 29 41 | 21 ♍ | ☐♄. nicht gar dienstahm auff | 4 52 | 7 7 |
| Sonnab. | 24 Bartholom. | my 39 | 5 ♎ | ☉☍. Hundes Tage 2 Stunden | 4 54 | 7 5 |
| 35. Woche | Ev. Zerstöhrung Jerusalem/Luc. 19. | | | | Tagl. 14 St. 11. m. Nachtl. 9. St. 49. m. | |
| Sonntag | 25 10. n. Trinit. LUDEWIG | 1 37 | 18 ♎ | ☽ Dir. End. ☌♄. ☌♃. △♂. ☽ | 4 56 | 7 3 |
| Montag | 26 Irenäus | 2 35 | 1 ♏ | ☌☿. ✱♄♂. Hagel/viel auch | 4 58 | 7 1 |
| Dienstag | 27 Gebhard | 3 33 | 15 ♏ | ☐♄. ☐♂. ☌☿. ☍♃♂. morgen- | 5 1 | 6 59 |
| Mittwoch | 28 Augustinus | 4 31 | 27 ♏ | 1. U 31. Nacht Regen stern | 5 3 | 6 56 |
| Donnerst. | 29 Joh. Enth. | 5 29 | 10 ♐ | ☌♄. △♃. ☌♂. ☌☿☽ en- | 5 5 | 6 54 |
| Freytag | 30 Benjamin | 6 27 | 22 ♐ | dert sich mit neuen Lichte 1 stund | 5 7 | 6 52 |
| Sonnab. | 31 Rebecca | 7 25 | 5 ♑ | | 5 9 | 6 50 |
| 36 Woche. | Ev. Pharisäer und Zöllner/Luc. 18. | | | | Tagl. 13. St. 41. m. Nachtl. 10. St. 19. m. | |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0034
DFG

Bürgermeistere, speiseten mit Ser^mo und denen
vornehmst Ministris, die Rathsverwandten und der Pro-
tonotarius, mit denen Cavallierern im rothen Sahl
die Bürgere nahe am rothen Sahl an 4. Tafeln,
und wurden alle auf das beste tractiret, biß
zu Abend umb 7. Uhr; des anderen Tages, gien-
gen sie nach gefallen in der Stadt, und wurde
nach gehaltener Mittags Tafel, die HH. Bür-
germeistere und etliche Rathsherren in Kutschen
mit 6. auch 4 Pferden bespannet, die übrigen, auch
die Bürger, mit anderen honetten Wagen,
Nachmittags umb 3. Uhr, nach Rostock wie-
der hinüber gebracht.

NB den 28^t in der Nacht, ist der sogenandter Graf, in der
That aber gewesener Prælat, so etliche Monathe
sich hieselbst bey hoffe aufgehalten, wiederumb
nach Wien abgereyset.

d 24^t der HH Præpositus von Doberan hier gekommen,
und oben logiret, auch à parte gespeiset.

# August oder August. hat XXXI. Tage.

| Julianischen Calenders. JULIUS | Gregorianisch Calenders AUGUSTUS | Römischer Calender. | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 21 Prarican | 1 Petr. Kett. | Kal. Aug. | Non. | 1 |
| 22 Mar. Magd. | 2 Hannibal | IV | | 2 |
| 23 Apollonar | 3 Eleasar | III | | 3 |
| Ev. Matth. 5. | Ev. Marc. 8. | | | ☉ |
| 24 B. 6. n. Trinit. | 4 7. n. Trinit. | Pridie | | 4 |
| 25 Jacobus | 5 Dominicus | Nonæ | | 5 |
| 26 Anna | 6 Sixtus | VIII | | 6 |
| 27 Martha | 7 Donatus | VII | | 7 |
| 28 Pantaleon | 8 Cyriacus | VI | darum | 8 |
| 29 Beatrix | 9 Romanus | V | | 9 |
| 30 Abdon | 10 Laurentius | IV | | 10 |
| Ev. Marc. 8. | Ev. Matth. 7. | | | ☾ |
| 31 B. 7. n. Trin. | 11 8. n. Trinit. | III | | 11 |
| 1 Petr. Kett. | 12 Clara | Pridie | | 12 |
| 2 Hannibal | 13 Hippolitus | Idus | | 13 |
| 3 Eleasar | 14 Eusebius | XIX | Calen- | 14 |
| 4 Oswald | 15 Mar. Himelf. | XVIII | | 15 |
| 5 Dominicus | 16 Isaac | XVII | | 16 |
| 6 Sixtus | 17 Willibald | XVI | | 17 |
| Ev. Matth. 7. | Ev. Luc. 16. | | | ☉ |
| 7 B. 8. n. Trin. | 18 9. n. Trinit. | XV | | 18 |
| 8 Cyriacus | 19 Sebaldus | XIV | | 19 |
| 9 Romanus | 20 Bernhard | XIII | | 20 |
| 10 Laurentius | 21 Symphor. | XII | darum | 21 |
| 11 Herman | 22 Zacharias | XI | | 22 |
| 12 Clara | 23 Philibert | X | | 23 |
| 13 Hippolitus | 24 Bartholm. | IX | | 24 |
| Ev. Luc. 16. | Ev. Luc. 16. | | | ☉ |
| 14 B. 9. n. Trin. | 10. n. Trinit. | VIII | | 25 |
| | 25 LUDEWIG | | | |
| 15 Mar. Himelf. | 26 Irenäus | VII | | 26 |
| 16 Isaac | 27 Gebhard | VI | | 27 |
| 17 Willibald | 28 Augustinus | V | September. | 28 |
| 18 Emilia | 29 Joh. Enth. | IV | | 29 |
| 19 Sebaldus | 30 Benjämin | III | | 30 |
| 20 Bernhard | 31 Rebecca | Pridie | | 31 |
| Ev. Luc. 16. | Ev. Luc. 18. | | | |



Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0037
DFG

| IX. Monath | Verbesserter Septemb | ☉ Lauf ny | | ☾ Lauff | Himmels-Begebenheiten. | ☉ Auffg | | ☉ Unterg | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Sonntag | 11. n. Trinit. 1 Egydius | 8 | 23 | 17 ♎ | ✱♀. ✱☿. zuträgliche ♄ ist der | 5 | 11 | 6 | 48 |
| Montag | 2 Lea | 9 | 21 | 29 ♎ | ☽ Apog. Witterung Sonnen | 5 | 13 | 6 | 46 |
| Dienstag | 3 Mansvetus | 10 | 20 | 10 ♏ | ☽ ☊. ☌ ♂ zu hoffen klare nahe | 5 | 16 | 6 | 43 |
| Mittwoch | 4 Moses | 11 | 18 | 22 ♏ | ✱♄. ☍♃. ☌♂. □♀. □☿. Lufft | 5 | 18 | 6 | 41 |
| Donnerst. | 5 Nathanael | 12 | 17 | 4 ♐ | □♃♀. □☿♃. unsicht- | 5 | 20 | 6 | 39 |
| Freytag | 6 Magnus | 13 | 15 | 16 ♐ | ☾ 4. U. 14 morg □♄. △♀. △☿ | 5 | 22 | 6 | 37 |
| Sonnab. | 7 Regina | 14 | 13 | 29 ♐ | ☌♀☿. Herbst- bahr. | 5 | 24 | 6 | 35 |
| XXXVII. Woche | Ev. Stummen und Tauben/ Marc. 7. Epist. Ein solch Vertrauen/ 2. Cor: 3. | | | | Tagslänge 13. St. 11. min. Nachtlänge 10. St. 49. min. | | | | |
| Sonntag | 12. n. Trinit. 8 Mar. Geburt | 15 | 12 | 11 ♑ | Kühlung sonderlich des ♃ unt. | 5 | 26 | 6 | 33 |
| Montag | 9 Bruno | 16 | 10 | 24 ♑ | ♀ ny. ☿ ny. △♄. △♃. ✱♂. 9. ab- | 5 | 29 | 6 | 30 |
| Dienstag | 10 Sosthenes | 17 | 8 | 7 ♒ | Nachts kalt/ tages bends auff | 5 | 31 | 6 | 28 |
| Mittwoch | 11 Eobaldus | 18 | 7 | 21 ♒ | □♃. □♂. ☍♀. □♂☿ tem- um | 5 | 33 | 6 | 26 |
| Donnerst. | 12 Cyrus | 19 | 6 | 6 ♓ | ☍☿. perirt leidlich 4. Uhr in | 5 | 35 | 6 | 24 |
| Freytag | 13 Maternus | 20 | 4 | 20 ♓ | ☉ 10. U. 51. mittag ☍♄. ✱♃. | 5 | 37 | 6 | 22 |
| Sonnab. | 14 ✠ Erhöhung | 21 | 3 | 5 ♈ | △♂. □♂♀ mehr Süden | 5 | 40 | 6 | 19 |
| XXXVIII. Woche. | Ev Vom Samar. und Leviten/ Luc. 10. Epist. Lieben Brüder ich wil/ Gal. 3. | | | | Tagslänge 12. St. 39. m. Nachtlänge 11. St. 21. m. | | | | |
| Sonntag | 13. n. Trinit. 15 | 22 | 2 | 20 ♈ | ♃ Rek. Wärme/ warm bey ♂ 2 | 5 | 42 | 6 | 17 |
| Montag | 16 Nicodemus | 23 | 0 | 5 ♉ | ☽ Per. ☽ ☊. △♀. △☿. stun- | 5 | 44 | 6 | 15 |
| Dienstag | 17 Lambertus | 23 | 59 | 19 ♉ | △♄. ☌♃. klaren Wet- den nach | 5 | 44 | 6 | 15 |
| Mittwoch | 18 Quatember | 24 | 58 | 4 ♊ | □♀. ter/ un- der Sonnen un- | 5 | 46 | 6 | 13 |
| Donnerst. | 19 Werner | 25 | 57 | 18 ♊ | □♄. □☿. △♃☉ beständig ter | 5 | 49 | 6 | 11 |
| Freytag | 20 Fausta | 26 | 56 | 2 ♋ | ☾ 2. U. 6. morg ✱♀. südwest | 5 | 51 | 6 | 8 |
| Sonnab. | 21 Mathäus | 27 | 55 | 15 ♋ | ✱♄. ✱♃. ✱☿. ☌♄☉. | 4 | 53 | 6 | 6 |
| XXXIX. Woche. | Ev. Von Zehn Aussätzigen/ Luc. 17. Epist. Ich sage aber/ Gal. 5. | | | | Tagslänge 12. St. 13. m. Nachtlänge 11. St. 47. m. | | | | |
| Sonntag | 14. n. Trinit. 22 | 28 | 54 | 28 ♋ | △♃☿. ☌♄☿. ☿ ist der ☉ | 5 | 55 | 6 | 4 |
| Montag | 23 Hoseas | 29 | 53 | 11 ♌ | △♂. kühler Jahrszeit gemäß | 5 | 57 | 6 | 2 |
| Dienstag | 24 Joh. Empf. | ♎ | 51 | 24 ♌ | ☉♎. Herbst Anfang. ☿♎. Tag und Morgen- | 6 | 0 | 6 | 0 |
| Mittwoch | 25 Cleophas | 1 | 50 | 6 ♍ | Nacht gl. □♂. ☌☉☿ | 6 | 2 | 5 | 57 |
| Donnerst. | 26 Callistratus | 2 | 49 | 19 ♍ | ☌♄. △♃. ☌♀ stern | 6 | 4 | 5 | 55 |
| Freytag | 27 Adolphus | 3 | 48 | 1 ♎ | ● 4 U. 37. Nachm. ☌☿. ☿ un- | 6 | 6 | 5 | 53 |
| Sonnab. | 28 Wenceslaus | 4 | 47 | 13 ♎ | ✱♂. mittelmäßig | 6 | 8 | 5 | 51 |
| 40. Woche | Ev. Vom Mammon/ Matth. 6. | | | | Tagl. 11. St. 43. m. Nachtl. 12. St. 17. m. | | | | |
| Sonntag | 13. n. Trin. 29 Michael | 5 | 46 | 25 ♎ | △♃☿. wenig Sturm sicht- | 6 | 11 | 5 | 49 |
| Montag | 30 Hyeronimus | 6 | 45 | 7 ♏ | ☽ Apog. ☽ ☊ bahr in ☉ strahlen | 6 | 12 | 5 | 46 |

d. 3t Wohn Doberan und ~~geh~~ Rostock meine Sachen holen lassen, so d. 7t hier gekommen.

d. 10t der HC Praepositus wiederumb von hier nach Doberan gereyset.

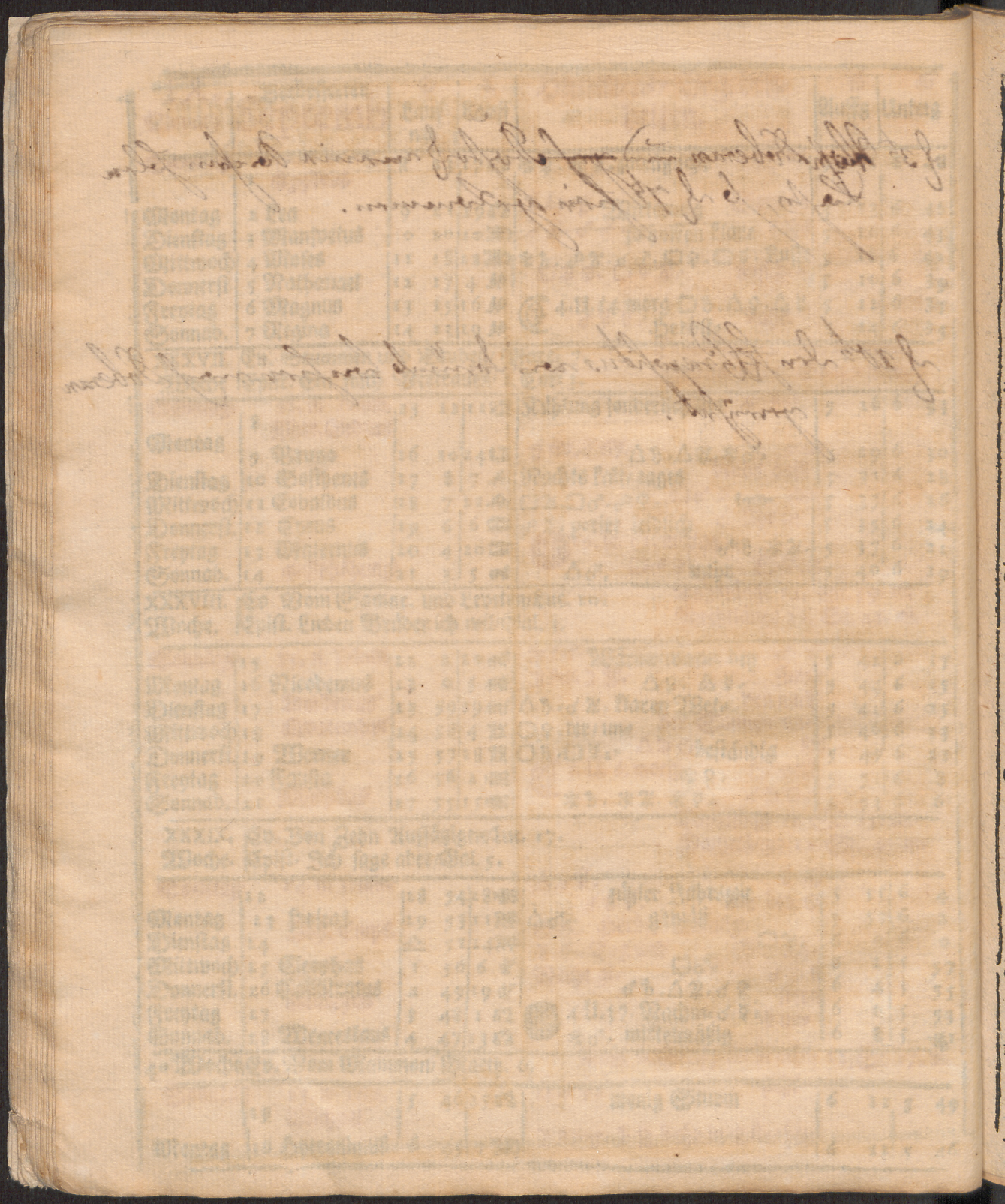

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0040
DFG

# Septemb. oder Herbst. hat XXX. Tage.

| Julianischer Calender | Gregorianischer Calender | Römischer Calender | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 21 | | | | 1 |
| | 1 Egidius | | | |
| 22 Zachäus | 2 Lea | IV | | 2 |
| 23 Philibert | 3 Mansvetus | III | Non. | 3 |
| 24 | 4 Moses | Pridie | | 4 |
| 25 | 5 Nathanael | | | 5 |
| 26 Irenäus | 6 Magnus | VIII | | 6 |
| 27 Gebhardus | 7 Regina | VII | | 7 |
| Ev. Luc. 18. | Ev. Marc. 7. | | | ☉ |
| 28 | 8 | VI | | 8 |
| 29 | 9 Bruno | V | | 9 |
| 30 Benjamin | 10 Sosthenes | IV | | 10 |
| 31 Rebecca | 11 Eobaldus | III | Iduum Sept. | 11 |
| 1 | 12 Cyrus | Pridie | | 12 |
| 2 Lea | 13 Maternus | | | 13 |
| 3 Mansvetus | 14 | XVIII | | 14 |
| Ev. Marc. 7. | Ev. Luc. 10. | | | ☽ |
| 4 | 15 | XVII | | 15 |
| 5 Nathanael | 16 Nicodemus | XVI | | 16 |
| 6 Magnus | 17 | XV | | 17 |
| 7 Regina | 18 | XIV | | 18 |
| 8 | 19 Werner | XIII | | 19 |
| 9 Bruno | 20 Fausta | XII | | 20 |
| 10 Sosthenes | 21 | XI | Calendarum | 21 |
| Ev. Luc. 10. | Ev. Luc. 17. | | | ☉ |
| 11 | 22 | X | | 22 |
| 12 Cyrus | 23 Hoseas | IX | | 23 |
| 13 Maternus | 24 | VIII | | 24 |
| 14 | 25 Cleophas | VII | | 25 |
| 15 Euphemia | 26 Callistrati. | VI | | 26 |
| 16 Nicodemus | 27 | V | | 27 |
| 17 | 28 Wenceslai. | IV | | 28 |
| Ev. Luc. 17. | Ev. Matth. 6. | | | ☉ |
| 18 | | III | | 29 |
| | 29 Michael | | | |
| 19 Werner | 30 Hyeronim. | Pridie | | 30 |

| X. Monath | Verbesserter October | Lauff ♎ | Lauff | Himmels-Begebenheiten | Auffg. | Unterg. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Dienstag | 1 Remigius | 7 44 | 19 ♐ | ☌ ♄. ☌ ♃. ☌ ☿. seines | 6 15 | 5 44 |
| Mittwoch | 2 Vollead | 8 43 | 1 ♑ | Herbst-Wetter etliche | 6 17 | 5 42 |
| Donnerst. | 3 Jairus | 9 43 | 13 ♑ | ☌ ☌. ☌ ☿. ☿ ♎. Tage | 6 19 | 5 40 |
| Freytag | 4 Franciscus | 10 42 | 25 ♑ | □ ♄. □ ♀. herdurch | 6 22 | 5 37 |
| Sonnab. | 5 Fridbert | 11 42 | 7 ♒ | ☽ 8. U. 53. Abends □ ☿. | 6 24 | 5 35 |
| XLI. Woche. | Ev. Wittwen Sohn zu Nain/Luc. 7. Epist. Darum bitte ich/ daß/Eph. 3. | | | | | |
| Sonntag | 6 16. n. Trinit. | 12 41 | 19 ♒ | △ ♄. △ ♃. starcker Wind | 6 26 | 5 33 |
| Montag | 7 Spes | 13 41 | 2 ♓ | △ ♀. ♄ ♎. ungestühm | 6 28 | 5 31 |
| Dienstag | 8 Charitas | 14 40 | 16 ♓ | □ ♃. ☌ ☌. △ ☿. ☌ ☿. Abends | 6 30 | 5 29 |
| Mittwoch | 9 Dyonisius | 15 40 | 29 ♓ | bey naß und kalter Lufft | 6 33 | 5 26 |
| Donnerst | 10 Gereon | 16 40 | 14 ♈ | ☌ ♃. □ ☌. vermisch- | 6 35 | 5 24 |
| Freytag | 11 Burchard | 17 39 | 28 ♈ | ☌ ♄. ☌ ♀. ter Schein | 6 37 | 5 22 |
| Sonnab. | 12 Christfried | 18 39 | 13 ♉ | ☽ 7 U. 58. ☌ ☌. △ ☌. | 6 39 | 5 20 |
| XLII. Woche. | Ev. Vom Wassersüchtigen/ Luc. 14. Epist. So ermahne nun ich/Eph. 4. | | | | | |
| Sonntag | 13 17. n. Trinit. | 19 39 | 29 ♉ | ☌ ☿. | 6 41 | 5 18 |
| Montag | 14 Calixtus | 20 38 | 14 ♊ | ☌ ♃. | 6 43 | 5 16 |
| Dienstag | 15 Hedewig | 21 38 | 29 ♊ | △ ♄. | 6 45 | 5 13 |
| Mittwoch | 16 Gallus | 22 37 | 13 ♋ | △ ♀. | 6 48 | 5 11 |
| Donnerst. | 17 Florentin. | 23 37 | 28 ♋ | □ ♄. ☌ ☌. △ ♀. | 6 50 | 5 9 |
| Freytag | 18 Lucas | 24 36 | 12 ♌ | ☽ ☌ ♃. □ ♀. | 6 52 | 5 7 |
| Sonnab. | 19 Ptolom. | 25 36 | 25 ♌ | ☽ 11 U. 28. ☌ ♄. □ ♄ ☌ | 6 54 | 5 5 |
| XLIII. Woche. | Ev. Vom grossen Gebot/Matth. 22. Epist. Ich dancke meinen GOtt/1. Cor. 1. | | | | | |
| Sonntag | 20 18. n. Trin. | 26 36 | 8 ♍ | □ ♀. | 6 56 | 5 3 |
| Montag | 21 Ursula | 27 36 | 21 ♍ | □ ♃. △ ☌. ☌ ☿. | 6 59 | 5 1 |
| Dienstag | 22 Cordula | 28 36 | 4 ♎ | ☌ ☿. | 7 1 | 4 58 |
| Mittwoch | 23 Severinus | 29 36 | 16 ♎ | △ ♃. | 7 3 | 4 56 |
| Donnerst. | 24 Salome | ♏ 36 | 28 ♎ | ☌ ♄. □ ☌. | 7 5 | 4 54 |
| Freytag | 25 Crispinus | 1 36 | 10 ♏ | | 7 7 | 4 52 |
| Sonnab. | 26 Amandus | 2 36 | 22 ♏ | ☌ ♀. | 7 9 | 4 50 |
| XLIV. Woche. | Ev. Vom Gichtbrüchigen/Matth. 9. Epist. So legt nun von euch/Eph. 4. | | | | | |
| Sonntag | 27 19. n. Trin. | 3 30 | 4 ♐ | ☽ 10. ☌ ☌. | 7 11 | 4 48 |
| Montag | 28 Sim. Jud. | 4 36 | 16 ♐ | ☌ ♃. ☌ ☿. | 7 13 | 4 46 |
| Dienstag | 29 Engelhard | 5 36 | 28 ♐ | ☌ ♄. nimt gemählig | 7 15 | 4 44 |
| Mittwoch | 30 Absolon | 6 36 | 10 ♑ | zu unfreundlich | 7 17 | 4 42 |
| Donnerst. | 31 Wolffgang | 7 36 | 22 ♑ | □ ♄. Gewitter | 7 20 | 4 39 |

Tageslänge 11. St. 11. min. Nachtlänge 12. St. 49. min.

Tageslänge 10. St. 41. min. Nachtlänge 13. St. 19. min.

Tageslänge 10. St. 11. min. Nachtlänge 13. St. 49. min.

Tageslänge 9. St. 41. min. Nachtlänge 14. St. 19. min.

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0042
DFG

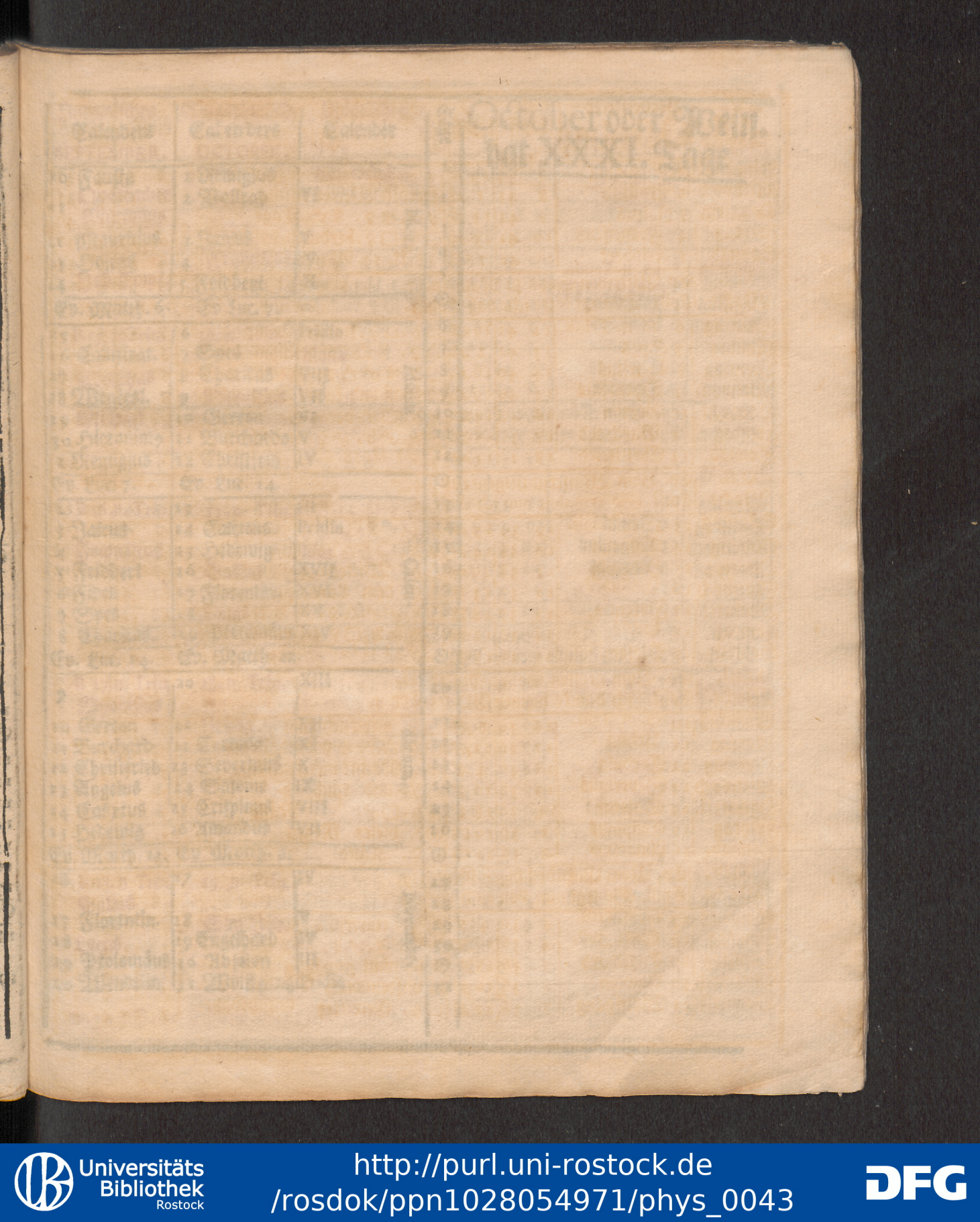

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0043
DFG

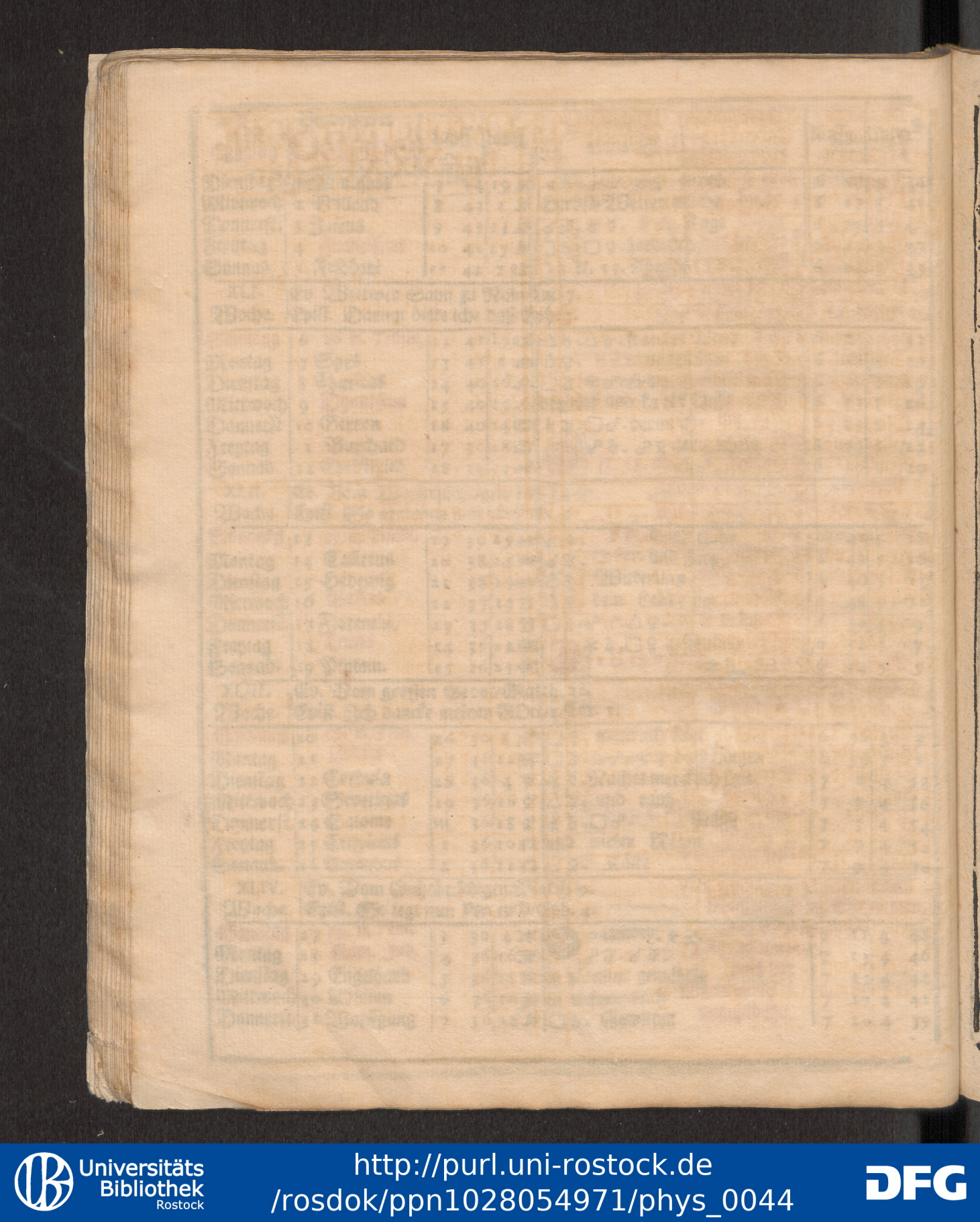

# October oder Wein. hat XXXI. Tage

| Julianischen Calenders SEPTEMBER. | Gregorianisch. Calenders OCTOBER. | Römischer Calender | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 20 Fausta | 1 Remigius | Kal. October. | | 1 |
| 21 Quatember Matthäus | 2 Vollrad | VI | | 2 |
| 22 Mauritius | 3 Jairus | V | Non. | 3 |
| 23 Hoseas | 4 Franciscus | V | | 4 |
| 24 Joh. Tempt. | 5 Fridbert | II | | 5 |
| Ev. Matth. 6. | Ev. Luc. 7. | | | ⊙ |
| 25 B. 15. n. Trin. | 6 16. n. Trin. | Pridie | | 6 |
| 26 Callistrat. | 7 Spes | Nonæ | | 7 |
| 27 Adolphus | 8 Charitas | VIII | | 8 |
| 28 Wencesl. | 9 Dyonisius | VII | | 9 |
| 29 Michael | 10 Gereon | VI | Idum. | 10 |
| 30 Hieronim. | 11 Burchardo | V | | 11 |
| 1 Remigius | 12 Christfrid | IV | | 12 |
| Ev. Luc. 7. | Ev. Luc. 14. | | | ⊙ |
| 2 B. 16. n. Trin. | 13 17. n. Trin. | III | | 13 |
| 3 Jairus | 14 Calixtus | Pridie | | 14 |
| 4 Franciscus | 15 Hedewig | Idus | | 15 |
| 5 Fridbert | 16 Gallus | XVII | | 16 |
| 6 Fides | 17 Florentin. | XVI | Calen- | 17 |
| 7 Spes | 18 Lucas | XV | | 18 |
| 8 Charitas | 19 Ptolomäus | XIV | | 19 |
| Ev. Luc. 14. | Ev. Matth. 22. | | | ⊙ |
| 9 B. 17. n. Trin. Dyonisius | 20 18. n. Trin. | XIII | | 20 |
| 10 Gereon | 21 Ursula | XII | | 21 |
| 11 Burchard | 22 Cordula | XI | | 22 |
| 12 Christfried | 23 Severinus | X | | 23 |
| 13 Angelus | 24 Salome | IX | darum. | 24 |
| 14 Calixtus | 25 Crispinus | VIII | | 25 |
| 15 Hedewig | 26 Amandus | VII | | 26 |
| Ev. Matth. 22. | Ev. Matth. 9. | | | ⊙ |
| 16 B. 18. n. Trin. Gallus | 27 19. n. Trin. | IV | | 27 |
| 17 Florentin. | 28 Sim. Jud. | V | | 28 |
| 18 Lucas | 29 Engelhard | IV | | 29 |
| 19 Ptolomäus | 30 Absolon | III | | 30 |
| 20 Wendelin. | 31 Wolffgang | Pridie | Novembr. | 31 |

| XI. Monath | Verbesserter Novemb | Lauff ♏ | Lauff | Himmels-Begebenheiten | Auffg. | Unterg |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Freytag | 1 Allerheil. | 8 36 | 4 ♎ | ☌♂.✱♀.giebt Hoff- | 7 22 | 4 37 |
| Sonnab. | 2 Allerseel. | 9 36 | 16 ♎ | △♃ nung zum guten | 7 24 | 4 35 |
| XLV. Woche. | Ev. Hochzeitlichen Kleide/ Matth. 22. Epist. So sehet nun zu/ Eph. 5. | | | | Tagsl. 9. St. 11. m. Nachtl. 14. St. 49. m. | |
| Sonntag | 3 20. n. Trinit. | 10 37 | 28 ♎ | △♄.□♀.✱☿.Gewitter | 7 26 | 4 33 |
| Montag | 4 CHARLOTT. | 11 37 | 11 ♐ | ☽ 9. U. 34. morg. □♃. | 7 28 | 4 31 |
| Dienstag | 5 Blandina | 12 37 | 24 ♐ | □☿.doch kalt und | 7 30 | 4 29 |
| Mittwoch | 6 Leonhard | 13 37 | 8 ♑ | ✱♃.✱♂.△♀.Herbst- | 7 32 | 4 27 |
| Donnerst. | 7 Erdmann | 14 38 | 22 ♑ | ☍♄.zeit gemäß/ Schnee | 7 34 | 4 25 |
| Freytag | 8 Claudius | 15 38 | 7 ♒ | □♂.△☿. ☌☉♀. oder | 7 36 | 4 24 |
| Sonnab. | 9 Theodor. | 6 38 | 22 ♒ | ☽ ☍.✱♂♀. kalt Regen | 7 37 | 4 22 |
| XLVI. Woche. | Ev. Vom Königschen Sohn/ Joh. 4. Epist. Zuletzt meine Brüder/ Eph. 6. | | | | Tagslänge 8. St. 45. min. Nachtlänge 15. St. 15. min. | |
| Sonntag | 10 21. n. Trinit. Mart. Luther | 17 39 | 7 ♓ | ☽ Per. ☌♃.☍♀.rauh | 7 39 | 4 20 |
| Montag | 11 Mart. Bisch. | 18 39 | 22 ♓ | ☽ 5. U. 21. früh △♄. 12. Uhr | 7 41 | 4 18 |
| Dienstag | 12 Jonas | 19 40 | 7 ♈ | ☍☿. ☍♃☉. unfreund- | 7 43 | 4 16 |
| Mittwoch | 13 Evgenius | 20 40 | 22 ♈ | □♄. ☍♃☉. lich stürmicht | 7 45 | 4 14 |
| Donnerst. | 14 Levinus | 21 41 | 7 ♉ | ✱♃.☍♂.△♃♂. Regen | 7 47 | 4 12 |
| Freytag | 15 LEOPOLD. | 22 41 | 21 ♉ | ✱♄.△♀.güsse/ Nacht- | 7 49 | 4 10 |
| Sonnab. | 16 Ottomarus | 23 42 | 5 ♊ | △☿.frost klahret auff | 7 50 | 4 9 |
| XLVII. Woche. | Ev. Von Königs Rechnung/ Matth. 8. Epist. Ich dancke meinen GOtt. Phil. 1. | | | | Tagslänge 8. St. 19. min. Nachtlänge 15. St. 41. min. | |
| Sonntag | 17 22. n. Trinit. | 24 43 | 18 ♊ | □♃.□♀.strenger Kälte | 7 52 | 4 7 |
| Montag | 18 Gelasius | 25 43 | 0 ♋ | ☽ 1. U. 6. Nacht ☌ bey der ☉ | 7 54 | 4 5 |
| Dienstag | 19 Elisabeth | 26 44 | 13 ♋ | ♀♂. △♃.△♂.□☿. Un- | 7 56 | 4 3 |
| Mittwoch | 20 Amos | 27 45 | 25 ♋ | ☌♄.✱♀.Nachts Reiff | 7 57 | 4 2 |
| Donnerst. | 21 Mar. Opf. | 28 46 | 7 ♌ | ✱☿.Tages Sonnen- | 7 59 | 3 0 |
| Freytag | 22 Cäcilia | 29 46 | 19 ♌ | □♂.schein helles | 8 0 | 3 59 |
| Sonnab. | 23 Clemens | ♐ 47 | 1 ♍ | ☽ ☍. ☿♂. ☌♂.✱♄♀.♀un- | 8 2 | 3 57 |
| 48. Woche | Ev. Vom Zinßgroschen/ Matth. 22. | | | | Tagl. 7. St. 55. m. Nachtl. 16. St. 5. m. | |
| Sonntag | 24 23. n. Trinit. | 1 48 | 13 ♍ | ☽ Ap. ☍♃. Wetter | 8 4 | 3 56 |
| Montag | 25 Catharina | 2 49 | 25 ♍ | ✱♄.✱♂.scharff Wind | 8 5 | 3 54 |
| Dienstag | 26 Conradus | 3 50 | 7 ♎ | ● 1. U. 46. früh ☌♀.☌☿.un- | 8 6 | 3 53 |
| Mittwoch | 27 Busso | 4 51 | 19 ♎ | ☌♂. Schneeflocken | 8 8 | 3 51 |
| Donnerst. | 28 Gunther | 5 51 | 1 ♏ | □♄. ✱♄☉ oder Hagel | 8 9 | 3 50 |
| Freytag | 29 Saturnin. | 6 52 | 13 ♏ | △♃.bringt mercklich | 8 11 | 3 48 |
| Sonnab. | 30 Andreas | 7 53 | 25 ♏ | △♄. ☌♂. kalt | 8 12 | 3 47 |
| 49 Woche. | Ev. Jairi Töchterlein/ Math. 9. | | | | Tagl. 7. St. 35. m. Nachtl. 16. St. 25. m. | |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de
/rosdok/ppn1028054971/phys_0046
DFG

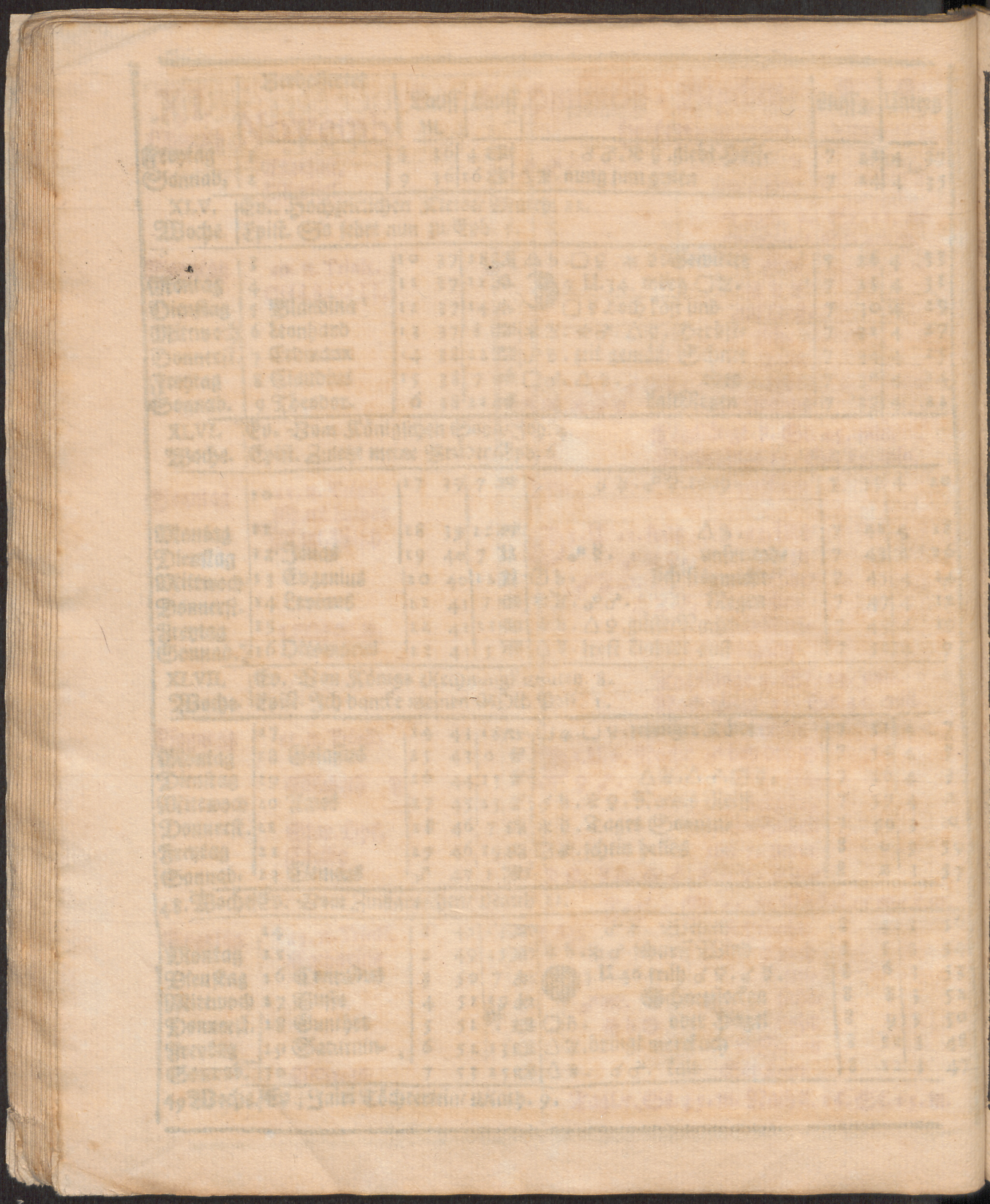

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0048
DFG

# Novemb. oder Wintmon hat XXX. Tage.

| Julianischen Calenders JUNIUS | Gregorianisch. Calenders JULIUS | Römisches Calender | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 21 Ursula | 1 Allerheil. | Kal. Novemb. | Nonarum | 1 |
| 22 Cordula | 2 Allerseel. | IV | | 2 |
| Ev. Matth. 9. | Ev. Matth. 22. | | | ☉ |
| 23 S. 19. Trin. | 3 20. n. Trin. | III | | 3 |
| 24 Salome | 4 Charlotta | Pridie | | 4 |
| 25 Crispinus | 5 Blandina | Nonæ | Iduum | 5 |
| 26 Amandus | 6 Leonhard | VIII | | 6 |
| 27 Sabinus | 7 Erdmann | VII | | 7 |
| 28 Sim. Jud. | 8 Claudius | VI | | 8 |
| 29 Engelhard | 9 Theodor. | V | | 9 |
| Ev. Matth. 22. | Ev. Joh. 4. | | | ☉ |
| 30 S. 20 n. Trin. | 10 21. n. Trin. Mart. Luth. | IV | | 10 |
| 31 Wolffgang | 11 Mart. Bisch | III | | |
| 1 Allerheyl. | 12 Jonas | Pridie | | 11 |
| 2 Allerseel. | 13 Eugenius | Idus | | 12 |
| 3 Gottlieb | 14 Levinus | XVI | | 13 |
| 4 Charlotta | 15 LEOPOLD | XVII | Calen. | 14 |
| 5 Blandina | 16 Ottomarus | XVI | | 15 |
| Ev. Joh. 4. | Ev. Matth. 8. | | | 16 |
| 6 S. 21 n. Trin. | 17 22 n. Trin. | XV | | ☉ |
| 7 Erdmann | 18 Gelasius | XIV | | 17 |
| 8 Claudius | 19 Elisabeth. | XIII | | 18 |
| 9 Theodoric. | 20 Amos | XII | | 19 |
| 10 Mart. Luth. | 21 Mar. Opf. | XI | darum | 20 |
| 11 Mart. Bisch | 22 Cäcilia | X | | 21 |
| 12 Jonas | 23 Clemens | IX | | 22 |
| Ev. Matth. 8. | Ev. Matth. 22. | | | 23 |
| 13 S. 22 n. Trin. | 24 23 n. Trin. | VIII | | ☉ |
| 14 Levinus | 25 Catharina | VII | | 24 |
| 15 LEOPOLD. | 26 Conradus | VI | | 25 |
| 16 Ottomarus | 27 Busso | V | Decembr. | 26 |
| 17 Hugo | 28 Günther | IV | | 27 |
| 18 Gelasius | 29 Saturnin. | III | | 28 |
| 19 Elisabeth. | 30 | Pridie | | 29 |
| Ev. Matth. 22. | Ev Matth. 21. | | | 30 |
| | | | | ☉ |

D

| XII. Monath | Verbesserter Decemb | Lauff ☉ | Lauff ☾ | | Himmels-Begebenheiten. | Aufg. ☉ | Interg. ☉ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Sonntag | 1 1. Advent | 8 | 54 | 8 ♑ | □♃.☌☿.☌☿.wölcht ♄ um | 8 13 | 3 46 |
| Montag | 2 Candidus | 9 | 55 | 21 ♑ | ☌☉☽.und sehr trübe 1 Uhr | 8 14 | 3 45 |
| Dienstag | 3 Agricola | 10 | 56 | 4 ♒ | ☽ 11.U. 56.Ab.□☿☽. auf d | 8 16 | 3 43 |
| Mittwoch | 4 Barbara | 11 | 57 | 18 ♒ | ☌♃. △♄☌♂.☍♄☽.☌♂☽ | 8 17 | 3 42 |
| Donnerst. | 5 Naemi | 12 | 58 | 2 ♓ | ♂♄.☌♂.△☽.Kälte der Sol | 8 18 | 3 41 |
| Freytag | 6 Nicolaus | 13 | 59 | 16 ♓ | △☿.und Frost mit nord- Auf | 8 19 | 3 40 |
| Sonnab. | 7 Agathonia | 15 | 0 | 0 ♈ | ☽ 18 □♂ winden klarer ganz | 8 21 | 3 38 |
| L. Woche. | Ev. Zeichen an Sonn u. Mond/Luc. 21. Epist. Was aber vorhin/Rom. 15. | | | | | Tageslänge 7. St. 27. min. Nachtlänge 16. St. 43. min. | |
| Sonntag | 8 2. Advent Mar. Empf. | 16 | 1 | 15 ♈ | ☽ Ker. ☍♃, heitere in Süden | 8 22 | 3 37 |
| Montag | 9 Joachimus | 17 | 2 | 0 ♉ | △♄.△♂.☍☿.Himmel ♃ W | 8 22 | 3 37 |
| Dienstag | 10 Judith | 18 | 3 | 15 ♉ | ☽ 3.U. 29.Nachm.☍☿.schar | 8 23 | 3 36 |
| Mittwoch | 11 Barsabas | 19 | 5 | 0 ♊ | □♄.se Kältewinter schi | 8 24 | 3 35 |
| Donnerst. | 12 Otilia | 20 | 6 | 15 ♊ | ☽ ☌♃.lich Wetter bar um 10 Uhr | 8 25 | 3 34 |
| Freytag | 13 Bet-Tag Lucia | 21 | 7 | 29 ♊ | ☿☌♄.☿ Dir. ☌♄.△☽. in süden | 8 26 | 3 33 |
| Sonnab. | 14 Nicasius | 22 | 8 | 13 ♋ | □♃.☍♂. umge- um 3 Uhr mor | 8 26 | 3 33 |
| LI. Woche. | Ev. Johann im Gefängniß/Matth. 11. Epist. Dafür halte uns jederman, 1. Cor. 4. | | | | | Taglänge 7. St. 7. min. Nachtlänge 16. St. 53. min. | |
| Sonntag | 15 3. Advent | 23 | 9 | 26 ♋ | △☿.□☿.stühm har- gans | 8 26 | 3 33 |
| Montag | 16 Ananias | 24 | 10 | 9 ♌ | △♃. ter Sturm unter | 8 27 | 3 32 |
| Dienstag | 17 Lazarus | 25 | 11 | 22 ♌ | ☽ 6.U. 20. m. Abends ☌ bey | 8 27 | 3 32 |
| Mittwoch | 18 Quatember | 26 | 12 | 4 ♍ | ☍♂♄.□☿.☌☿. bau ♃☍ | 8 27 | 3 32 |
| Donnerst. | 19 Manasse | 27 | 13 | 16 ♍ | △♂. □♄ ordentlich Unter | 8 27 | 3 32 |
| Freytag | 20 Abraham | 28 | 14 | 28 ♍ | ☽ ☍☌.☌♄☿ Witterung gan | 8 27 | 3 32 |
| Sonnab. | 21 Thomas | 29 | 15 | 9 ♎ | ☍♂♃.□♂.☌☿ und gemäl- in | 8 28 | 3 31 |
| LII. Woche. | Ev. Vom Zeugniß Johannes/Joh. 1. Epist. Freuet euch im HErrn/Phil. 4. | | | | | Taglänge 7. St. 3. min. Nachtlänge 16. St. 57. min. | |
| Sonntag | 22 4. Advent | ♑ | 17 | 21 ♎ | ☽ Ap.☉☌♄.sigte Kälte Su- | 8 28 | 3 31 |
| Montag | 23 Tugendreich | 1 | 18 | 3 ♏ | kürzter Tag ☌♄.☍☿. den 8. | 8 27 | 3 32 |
| Dienstag | 24 Adam Eva | 2 | 19 | 15 ♏ | Winters Anf. ☌♂.frost unter | 8 27 | 3 32 |
| Mittwoch | 25 Weynachten | 3 | 20 | 27 ♏ | ☽ 11.U.11.ab.□♄ ☿ ist um | 8 27 | 3 32 |
| Donnerst. | 26 Stephan. | 4 | 22 | 10 ♐ | △♃.☍☿. △♃ ☿ Eyß sich | 8 27 | 3 32 |
| Freytag | 27 Joh. Evang. | 5 | 23 | 22 ♐ | und wenig Schnee fahr. | 8 27 | 3 33 |
| Sonnab. | 28 Unsch. Kind | 6 | 24 | 5 ♑ | △♄.□♃.☍♂.☌☿. rein | 8 26 | 3 33 |
| * | Ev. Vater u. Mutter/Luc. 2 Ep. Gal. 4. | | | | | Tagl. 7. St. 7. m. Nachtl. 16. St. 52. m. | |
| Sonntag | 29 S. n. Weyn. | 7 | 25 | 18 ♑ | □♄☉ läßt nach Stunde mor- | 8 26 | 3 33 |
| Montag | 30 David | 8 | 26 | 3 ♒ | am Ende Sonnen- genstern | 8 26 | 3 33 |
| Dienstag | 31 Sylvester. | 9 | 28 | 15 ♒ | ☌♃.☌☿.□☿.schein sichtbahr | 8 25 | 3 34 |

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0050
DFG

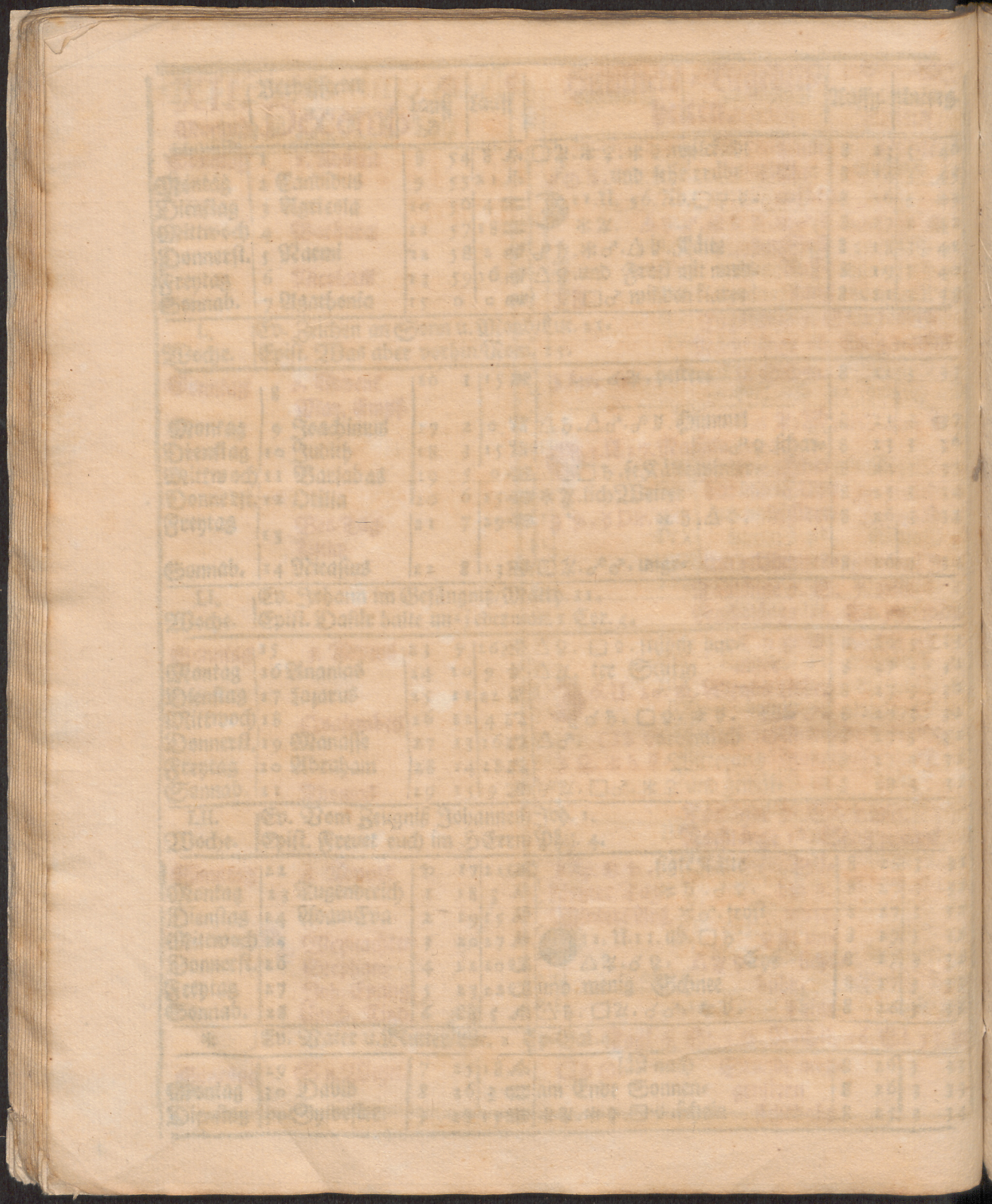

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0052
DFG

# Decemb. oder Christ- hat XXXI. Tage

| Julianischen Calenders. NOVEMBER. | Gregorianisch. Calenders DECEMBER. | Römischen Calender. | | Tage |
|---|---|---|---|---|
| 20 S. 22. n. Trin. | 1 1. Advent | Kal. Decemb. | | 1 |
| 21 Mar. Opf. | 2 Candidus | IV | | 2 |
| 22 Cäcilia | 3 Agricola | III | Non. | 3 |
| 23 Clemens | 4 Barbara | Pridie | | 4 |
| 24 Josias | 5 Naemi | Nonæ | | 5 |
| 25 Catharina | 6 Nicolaus | VIII | | 6 |
| 26 Conradus | 7 Agathonia | VII | | 7 |
| Ev. Matth. 21. | Ev. Luc. 21. | | | ☉ |
| 27 B. 1. Advent | 8 2. Advent. Mar. Empf. | VI | | 8 |
| 28 Günther | 9 Joachimus | V | | 9 |
| 29 Saturnin. | 10 Judith | IV | Idum | 10 |
| 30 Andreas | 11 Barsabas | III | | 11 |
| 1 Longinus | 12 Otilia | Pridie | | 12 |
| 2 Candidus | 13 Bet-Tag Lucia | Idus | | 13 |
| 3 Agricola | 14 Nicasius | XIX | | 14 |
| Ev. Luc. 21. | Ev. Matth. 11. | | | ☉ |
| B. 2. Advent 4 Barbara | 15 3. Advent | XVIII | | 15 |
| 5 Naemi | 16 Ananias | XVII | | 16 |
| 6 Nicolaus | 17 Lazarus | XVI | | 17 |
| 7 Agathonia | 18 Quatemb. | XV | Calen- | 18 |
| 8 Mar. Empf. | 19 Manasse | XIV | | 19 |
| 9 Joachimus | 20 Abraham | XIII | | 20 |
| 10 Judith | 21 Thomas | XII | | 21 |
| Ev. Matth. 11. | Ev Joh. 1. | | | ☉ |
| 11 B. 3. Advent | 22 4. Advent | XI | | 22 |
| 12 Otilia | 23 Tugenreich | X | | 23 |
| 13 Lucia | 24 Adam Eva | IX | | 24 |
| 14 Quatemb. | 25 Weynachte | VIII | darum Janu- | 25 |
| 15 Johanna | 26 Stephan. | VII | | 26 |
| 16 Ananias | 27 Joh. Ev. | VI | | 27 |
| 17 Lazarus | 28 Unsch. Kind. | V | | 28 |
| Ev. Joh. 1. | Ev. Luc. 2. | | | ☉ |
| 18 B. 4. Advent | 29 S. n. W. | IV | | 29 |
| 19 Manasse | 30 David | III | arii. | 30 |
| 20 Abraham | 31 Sylvester | Pridie | | 31 |

## Vierter Bus- und Bet-Tag.

# Nützlicher Anhang
Zum
# Calender/ des 1715. Jahres.
## Von den 4. Jahrs-Zeiten

### 1. Vom Winter.

Wir machen albie abermahl im Nahmen Gottes den Anfang des Jahres mit dem Eintritt der Sonnen in den Steinbock als in welchen Zeichen dieselbe gehet in dem Monath Januario/ mit welchen wir Christen unser bürgerliches Jahr zu rechnen anheben. Und also lassen wir/ wie bißher gewöhnlich/ das erste Viertheil Jahr seyn die Winterzeit/ dazu wir rechnen die 3. Monathe in welchen die Sonne sich von dem Wende Zirckel des Steinbocks ablencket/ und wiederum gegen die Linie oder den Æqvatorem hinweltzet. Es begreiffet also das Winter-Viertheil die Zeit in welcher die Sonne in den 3. südlichen und auff steigenden Himmels Zeichen/ nemlich den Steinbock/ Wassermann und Fische gesehen wird: Und also unserm Scheitelpunct sich wieder nähert/ und wieder zu uns wendet. Ich sage sie nähert sich uns/ nicht daß sie nach ihrer Weite und Abstand von der Erd-Kugel gerechnet näher kommen solte; Denn in solcher Absicht ist sie im Winter in ihrem Perigæo oder in dem Punct da sie der Erden am nähesten/ und im Sommer in ihrem Apogæo, oder dem Punct da sie am weitesten von der Erden; und auff diese Arth möchte man sagen daß die Sonne die sich im Winter uns genähert sich im Sommer wieder entferne. Sondern wenn wir sagen/ daß die Sonne sich wieder zu uns wende von dem südlichen Wende Zirckel gegen den Æqvatorem zu/ ist die Meynung daß sie sich über unsern Horizont etwas mehr/ als bißher anfange zu erhöhen / und also unserm Scheitelpunct näher komme. Der Anfang dieses Winters ist also den 21. December 1714. des Morgens um 4 Uhr nach Rostockischen Meridian.

### Vom Frühling.

Ob zwar in einem Circkelkreise kein Anfang oder Ende gesehen werden kan/ und auch am Himmel welcher Circkelrund zu seyn aus dem Lauff der Sternen von uns bildig geurtheilet und mit sicherer Muthmassung geschlossen wird/ keiner sagen kan/ woselbst hie oder da der Anfang des gestirnten Himmels sey; So haben doch die Astronomi ihren Rechnungen einen gewissen Grund zu setzen beym Eintritt der Sonnen und aller andern Planeten in das erste Punct des Widders/ den Anfang gemacht. Solchem nach haben sie mit sothanen Eintritt der Sonnen in den Anfang des Widders auch die Frühlings Zeit an/ und rechnen zu diesen 4ten Theil des Jahres die Zeit/ darin die Sonne die 3. himmlische Zeichen/ den Widder/ Stier und Zwilling durchwandert/ oder in denselben / von uns erblicket wird. Solcher Anfang des Frühlings in diesem Jahr wird seyn / den 21. Martii wenn wir zu Rostock zählen 3. Uhr 22. Min. Morgens frühe.

### Vom Sommer.

Die angenehme Sommerszeit gehet an mit dem längstem Tage/ wenn die Sonne mit ihrer grössesten Nördl. Decination den angulum obliqvitatis Ecliptiçæ machet/ und den Wende Circkel des Krebses berühret. Alsdenn ist uns die Sonne am allermeisten über den Horizont erhoben und dem Scheitelpunct so nahe / als sie uns immermehr nach denen von dem weisen Schöpffer ihr gesetzten Gräntzen immermehr kommen kan. Zu diesem Jahres Viertheil rechnet man die Zeit in welchen die Sonne den Krebs/ Löwen und Jungfrau durchwandert/ oder von uns in denselben gesehen wird. Der Anfang des Sommers ist in diesem 1715. Jahre den 22. Jun. wenn man zu Uranienburg und also auch hier zu Rostock zählet 5 Uhr 30 Min morgens. Vom

# Vom Herbst.

WEnn die Sonne die jetztgedachte 3. absteigende Nördliche Zeichen den Krebs / Löwen und Jungfrau durchgelauffen/ und nunmehro den Anfang der ungebildeten Waage berühret/ so machet sie zum andern mahl Tag und Nacht gleich; und wendet sich von der Linie herunter. werts gegen Süden oder Mittag / und durchlaufft die 3. absteigende südliche Zeichen die Waag Scorpion und Schützen / und diese Zeit nennet man den Herbst; Welcher ordentliche und ungestöhrte Lauff der Sonnen von einer Zeit zur andern uns die Wunder allmacht und Wunder weißheit des gewaltigen Schöpffers so nachdrücklich kyret und einschärffet / daß wenn auch die. Natur uns keinen andern Beweiß an die Hand gebe/ wir doch darin Beweiß genug finden. Wir werden den Anfang dieser Herbstzeit mit GOtt in diesem 1715ten Jahr erleben den 23 Sept. wenn wir zu Rostock zählen 9 Uhr 47 Min. Abends.

# Von Finsternissen dieses Jahres

BAngend die Finsternissen / die wir an Sonn und Mond in diesem Jahr erleben werden/ wollen wir/ mit Beyseitesetzung der übrigen von denen uns nach unserm Horizont wenig oder recht zu sagen nichts zu Gesichte kommen kan / nur alleine zur Nachricht des Lesers anmercken / daß wir den 3 Maji eine merckliche grosse Sonnen-Finsterniß erleben werden/da die Sonne an ihrem Nördlichem Rande durch den vorbey-streichenden Mond wird bedecket und ihr Glantz unsern Augen entzogen werden/und zwar bey nahe auf 10 Zoll solcher als der Semidiameter der Sonnen 12 in sich fasset. Denn wenn nach unser Rechnung auff den Rostockis. Horizont die Summa der Semidiametrer ☉ und ☾ ist 31. 25. und die kleineste Distans der centrorum 6 ♂ 38. so bleiben scrupula defectus 24 47 welche durch den Semidiametrum der Sonnen 15. 6. austragen werden 9. Zoll 50. 51. Verfinsterung.



Der Anfang wird seyn üm 9 U. 49 m. 46 sec
Das Mittel wird seyn üm 10 U. 51 m. 40 sec
Das Ende wird seyn üm 11 U. 53 m. 34 sec.

Wenn man wissen solte / daß sich Liebhaber finden die den gantzen Calculum so wohl universalem (in so weit man diese Finsterniß als eine Erdfinsterniß betrachtet / und suchet wo der Schatten den Erdboden zuerst berühret/und durch welche Länder der Conus Penumbræ Umbræ und Centri gehet/und wo er den Erdboden wieder verlässet) als Particularem auff dem Rostockischen Horizont beson ders gerechnet verlangeten zu haben / könte der Verleger dieses Calenders dazu leicht rath schaffen weil der gantze Calculus bereits zum Druck fertig lieget.

Hienechst findet sich auch eine Mond-Finsterniß den 10 Nov. Morgens üm 5 U. 42 min. die Verfinsterung wird gleichfals ziemlich groß werden und über 2 Stunden wehren. Wem damit gedienet genauere Nachricht auch von die er Finsterniß zu haben / kan sich bey dem Verleger melden; welcher ihm anweisen wird / wo er hoffentlich in seinem Verlangen vergnüget werden kan.

# Projecte einer kurtzen Kirchen-Geschicht vom Anfang und Fortgang des Lutherthums im Hertzogthum Mecklenb.

## Das erste Capittel.

### Wie die reine Christ-Lutheris. Lehre erstlich in Mecklenb. gekommen.

§. 1. WAnn der grundgütige Gott nach seiner grossen Barmhertzigkeit in seinem heiligen Raht beschlossen den Teutschen und umbliegenden Ländern/ ein helles Licht in der dicken Lehr-Finsternis und abergläubischen Päbstis. Blindheit anzuzünden / und in seiner liebhabenden ihm verleiteten Christenheit und unschüldigen Gemeine eine heilsame öffentl. Reformation ergehen zulassen/ hat Er etliche tapffere Heiden dazu erwecket/ und unter denselbigen für andern ausgerüstet und mit Krafft und sonderbahrem Geist angezogen/ den Hn. D. Martinum Lutherum sehl. gebohren in der Stadt Eißleben von Christl. Eltern am Abend vor Mart. den 10 Nov. 1483. welcher nachdem er in Sprachen und freyen Künsten in der Schule einigen Grund gelegt/ im 14. Jahre seines Alters gen Magdeburg und im 15. gen Eisenach geschicket/ allwo er sich gantzer 4. Jahr lang auffgehalten: im 19. aber gen Erfurt auff die Universität gezogen/ und daselbst im 20. Magister geworden: im 21. ins Augustiner Closter gegangen/ im 26. zum Profess. gen Wittenberg beruffen/ im 23. gen Rom verschicket/ im 30. Doct der Heil. Schrifft/ die Er von Hertzen geliebet/ geworden so bald er von Rom wieder zu Hause gekommen war.

§. 2. Auff solch gespürten innerlichen Trieb und Göttl. Beruff that sich der Hr. D. Luther gewaltig herfür zu lesen/ profitiren und disputiren biß er endlich gar wagete der Abergläubischen Lehre öffentlich zu widersprechen/ insonderheit wieder des D. Johann Tetzels unchristl. Ablaß-Krahm zu disputiren/ und im Jahr C. 1517. am so genandten Allerheiligen Abend / wieder denselben zum ersten mahl gewisse Sätze anzuschlagen/ und von dem Tage an immer mehr und mehr das Pabstthum anzugreiffen / und dagegen denen Angefochtenen und betrübten Hertzen den wahren Trost aus dem Heil. Evangelio zu verkündigen.

§. 3. Diese heilsahme Lehre ward nicht allein auff der Universität von denen Studiosis und andern Gelahrten/ sondern auch von vielen hohen Potentaten/ Königen/ Chur- und Fürsten und gantzen Ländern und Städten hoch admiriret und begierigst angenommen/ so gar daß auch der damahlige hochlöbliche Römische Kayser Maximilianus I. zu dem Hn D. Degenhart Pfeffinger/ des Hertzog Friederichs Chur-Fürsten zu Sachsen hochansehnlichen Hn Legato sprach: Sagt dem Chur-Fürsten/ er möge diesen Mönchen wol und werth halten/ denn wir werden seiner auch in kurtzer Zeit wieder der Romanisten Tücke bedürffen. Also ward diese reine und heilige Gottes Lehre auch in Mecklenburg und zwar zu allererst von dem Durchlauchtigsten Hohen Landes-Fürsten und Herrn Henrico beliebet und angenommen. Und ohngeacht der Päbstl. Anhang sich hefftig dawieder sperrete/ so hieß es doch damahls wie von denen Israeliten Exod. 1, 12. Jemehr sie das Volck drücketen / jemehr sich es mehret und ausbreitet.

§. 4. Zu der Zeit regiereten in Mecklenburg zween Durchl. Durchl. Hn. Brüder/ Hertzog Heinrich mit dem Zunahmen Pacificus der Friedfertige/ ein Gottsfürchtiger / kluger / Gerechtigkeit- und Friedliebender Fürst und Herr der neben der Regierung in Mecklenb. auch das Bisthum zu Schwerin in Vormundschafft seines Hn. Sohns/ Printz Magni/ postulirten Bischoffs zu Schwerin/ damahls verwaltete / und Hertzog Albrecht mit dem Zunahmen Formosus, der Wolgestalte/ ein großmühtiger und tapfferer Fürst und Held. Diese hielten ernstlich/ insonderheit Hertzog Heinrich/ über der reinen Gottes Lehre forderten und beförderten darinnen gelahrte und erfahrne Männer. Wie dann hin und wieder Gottsfürchtige Leute sich zu der Zeit herfür thaten

§. 5. Zu Hamburg fing im Jahr C. 1521. Hr. M. Ordo Stisel. Past. an S. Cathar. Kirchen schon an/ das Heil. Wort GOttes rein und lauter öffentlich zu predigen. Im selbigen Jahre ward an der Schule zu St. Peter in Rostock angenommen Hr. M. Joach. Schlüter/ so von Wittenberg kam und ein fleißiger Auditor des sehl. D. Lutheri gewesen war / dieser wandte grossen

Fleiß

Fleiß und Treu an der lieben Jugend/uñ ward von der Bürgerschaft lieb und wehrt gehalten. Als er nun 2. Jahr hernach zum Past. an St. Peters Kirchen beruffen/ und vom Hertzog Hinrich confirmiret war/fing er an/ die eingerissene Mißbräuche hefftig zu straffen/ und GOttes Wort zu predigen. Wie diß geschehen/ beförderte auch Hertzog Albrecht seinen Lutherisch Hofprediger Henr. Möllens. und setzte ihn zum Past. ein in Wißmar an St. Georgen Kirche. Um selbige Zeit stand in Stralsund ein Prediger auff / Nahmens Christian Kesselhut / der die Abergläubische München-Lehre aus dem Heil. Worte Gottes straffte und wiederlegte/ und dagegen die Lehre des Evangelii lauter und Lutherisch predigte. Zu Lüneburg erweckete Gott Frieder. Hennings/ der von Hamburg dahin zum Pastore an St. Nicolai Kirchen A. C. 1529. beruffen / hernach zum Superint. daselbst erwehlet ward. Zu Magdeburg war Herr D. Melchior Miricius: wie dann auch der Herr D. Luther selbst alda das Heil. Evangelium am 6. Sontag nach Trinitatis An. 1524. in St. Johannis Kirchen erklärete und predigte. Zu Braunschweig Henric Lampadius. Zu Bremen Henric. Sutphan. Zu Goslar Joh. Cleppius. Zu Halberstadt Joh. Wessel und Henr. Gebhard. Um diese Zeit/ nemlich An. C. 1523. schrieb E. E. Raht von Stettin an Lutherum/und die löbliche Universität Wittenberg/und begehrte/daß er ihrem Volck/welches ein hefftig Verlangen hätte nach dem Wort GOttes/einen Evangel. Prediger senden möchte. Darauff Lutherus ihnen den M. Paul a Rhoda von Oldenburg bürtig/einen gelahrten Mann/so zuvor zu Giterbock Prediger gewesen/zu sandte/ dem sie auch bald die Cantzel geöffnet/und mit grossen Freuden haben angenommen. O heilige Begierde! die ist fast durch gantz Pommern gewesen; und hat schon solchen Appetit ums Jahr 1511. biß 12. daselbst erwecket der gewaltige Lehrer Herr D. Joh. Bugenhagen/da er noch zu Treptow Rector an der Schulen war/hernach fast Generalis Reformator; daher gabs daselbst so viel außbündiger reiner Lehrer. Als Joh. Cureke und obgedachter Christian Kesselhut mit Lehren und Predigen zu Stralsund einen guten Grund der Göttl. Lehre gelegt hatten / kamen zu ihnen Joh. Knipstrow und Anton Gerslow. Zur selben Zeit war daselbst an der Schulen Joh. Aepinus der hernach Superint. zu Hamburg ward. Zu Greiffswald waren Hr. Petrus Svanius und Herr Hermann Bonn/weil sie aber daselbst sich nicht getraueten zu bleiben/wegen Verfolgung Hertzogs Georg/ schiffete Svaven. nach Denemarck/und ward vom Könige Friderich wegen seines hohen Verstandes hochgehalten. Eben dieser König ists/der mit Freuden das reine Wort GOttes und dessen Predigt wie sie Lutherus wieder auf die Bahn gebracht/aufnam/ und bald darauff/wie in seinem Reich/also auch zu Oldenschloh predigen/und das Heil. Sacrament in beyder Gestalt verreichen ließ: da die Bürger und Einwohner der Stadt Lübeck haufenweisse hinaus zogen und demselben beywohneten / biß daß sie auch ihre Evangelisten / Andr. Wilhelm/hernach Joh. Walhoff und Hr. Pet. Rymarn bekamen/und Hr. Bonn hernach Superint. ward. Zugleich ging auch das helle Lehr-Licht in Liefland zu Riga auff/ alwo M. Andr. Knöpke zum Pastor an St. Peters Kirchen beruffen ward. Dieser predigte nicht allein/sondern lase auch seinen Auditor. unter andern/die Epistel Pauli an die Römer/und übersandte solchen seinen Commentarium zur Censur und öffentlichen Druck/ dem Hrn D. Joh. Bugenhagen gen Wittenberg Wie derselbe ihn dem Rector demahl D. Philipp Melanchthon zeigete/ ward der Abdruck bewilliget / und zwar cum Præfatione Bugenhagen / gedruckt A. 1523. Alle diese GOttes Männer / und noch viele viele andere mehr/ davon man Nachricht findet in der Pommerischen Kirchen-Historie / D. Cramer und Friedeborns; in der Lübeckschen Chronica Bonni, in den Chroniken und Historien Hederici, Chytræi, Caspari Calovii, Micrælii, Grysæi, Lindenbergii, &c. und verschiedenen MSS. bekanten/predigten/ verthädigten einmühtig und aus einem Munde die Evangelische Lutherische Lehre. So schnell erschien dieser Morgenstern diesen und umliegenden Londen/denen See-Städten und angrentzenden Königreichen. So war die Zukunfft des Sohnes GOttes/wie der Blitz auffgehet von Aufgang biß zum Niedergang. So hat uns besuchet der Auffgang aus der Höhe; Ihm sey Lob und Preiß nun und in

alle-

alle Ewigkeit. Amen. Aber wir kommen wieder zu unserm Hertzogthumb Mecklenburg und der Stadt Rostock.

§. 6. Es haben sich schon vor der Zeit zuweilen Leute gefunden / die an denen abergläubischen Dingen und Jrthümern im Päbstthum ein Gräuel gehabt / haben sichs aber aus Furcht des Feuers Speise zu werden / nicht dörffen unterstehen / zu straffen; biß Anno 1404. eine kluge und wolberedte Frau zu Rostock / solch abergläubisches Wesen ernstlich straffete / und ihre Jrthümer denen Mönchen vorstellete. Welche zwar Anfangs solches nicht groß achteten / nachgehends aber / wie sie der Reden immer mehr und mehr machete / sie ernstlich ermahneten / von solch ihrem Fürnehmen ja bey Zeiten abzustehen / und sich wieder zu bekehren / oder es würde ein Ernst wieder sie vorgenommen werden. Wie aber bey der guten Frau diese ungegründete Vermahnungen nicht hafften / auch nicht schaffen kunten / war ihr bald der Proceß gemachet / und sie dem Feuer zuerkandt. Was geschah? der Gerichts-Tag kam heran / sie ward als eine Gottesläßterinn und Missethäterinn zur Wahlstat geführet. Nun hatte sie einen Sohn / der war auch ein Münch / der begleitete seine Mutter mit viel tausend Thränen / und ließ ihm hefftig angelegen seyn / sie zum Wiederruff zu bringen. Aber alles vergeblich / sie blieb in ihrer Andacht zu GOtt / und ihrer Meinung gewiß und beständig. Endlich wie sie kamen an die Städte da sie solte abgethan werden / bat der Sohn nochmahls mit grossem Weinen und Wehklagen / noch wäre es Zeit / sie möchte doch bedencken die grausame und erschreckliche Gluth und Flamme die ihr bereitet wäre / sie möchte doch ihre arme Seele bedencken / und sich nicht also vorsätzlich zugleich in die ewige Glut und des höllische Feuer hinein stürtzen. Allein die Mutter blieb beständig / und antwortete dem Sohn fast mit zornigem Gesicht und Gebärden und sagte. O du gottloser Mensch / du bist der jenige / welchen ich zur Welt getragen / packe dich / und ergreiffe mit deinem Anhang der rechten Welt / weil es noch zeit ist / und laß mich mit deinem ungültigen Vermahnungen in meiner Andacht ungeirret. Darauff redete sie den Scharffrichter an / und sprach: Was stehest und harrest / warumb thust du nicht was dir befohlen ist? ich wil heute selig sterben / und betete zu GOtt. Worauff sie ins Feur geworffen und verbrennet ward. Standhafftigkeit verläßt das schwache Geschlecht auch nicht. Der wieviele aber ästimiret heute solchen Eifer: Wer bedencket / daß wer von Christo ein Zeugniß ablegen wolle / der müsse sein Blut nicht achten / und den Todt höher als sein Leben lieben.

§. 7. Gleichermassen hielt sich A. 1516. ein Priester zu Rostock auff / Nahmens Nic. Nuß / dessen Nahme mit unter den Zeugen der Warheit in vorigen Zeiten wieder die Päbstliche Lehr / auff der 575. Seite zufinden; dieser predigte das Evangelium ein Jahr vorher / ehe D. Luther sich zuerweisen anfing. Er schrieb verschiedene Bücher in Niedersächsischer Sprache / deren eines den Titel hatte: Von der dreyfachen Schnuer / darinnen erkläret waren: die Heil. Zehen Gebot / das Apostolische Glaubens-Bekändniß und das Vater Unser / oder Gebet des Herren. Darinnen disputiret er viel wieder den Pabst.

§. 8. Im Jahr 1516. hat sich in Rostock fast dergleichen Exempel / wie vormahls zu Jerusalem kurtz vor der Zerstöhrung / (da ein Mensch mit Nahmen Jesus Ananias ümbher gegangen und das Weh geschrien / den man für einen Thoren gehalten und verachtet) zugetragen. Es hat sich ein Studiosus auffgegeben / welchen das Volck einen Propheten genandt / der ist ümher gegangen in den Kirchen und allenthalben in der Stadt / und verkündiget den Untergang der Päbstischen Lehre / und die Erlösung der Gläubigen. Er hat offt mit lauter Stimme geschrien: Wachet auff Jhr Geistliche aus dem tieffen Sündenschlaff / greiffet zur Busse! O ihr Gläubige und Gottsfürchtige / jetzt nahet sich euer Heyl und Erlösung! Jhr Ungläubige und Gottlose aber / die ihr das Gesetz des HErren verfälschet / und dessen rechten Verstand nicht wisset / die ihr euch belustiget an dem Geschrey der Wöselein und truncken werdet vom Schweiß und Arbeit der Wittwen / euch hält alles Ubel und Verderben für! Wachet auff ihr Bürger / denn es ist euer Heil

und

und Erlösung jetzt nahe! Uber die Geistliche aber wird bald alles Ubel und Verderben kommen! Dieser Mensch ist gleichfals als ein Wahnsinniger verspottet / und zuletzt aus der Stadt gejaget. Die Enderung in der Religion ist doch bald darauff erfolget.

## Das 2. Cap. Vom ersten öffentl. beruffenen Evangelis. Prediger in Rostock und was sich mit demselben zugetragen.

§. 1.

WJe aller Anfang insgemein schwer / so ist es auch ergangen im Anfang des heilsahmen Reformation-werckes / in denen Sächsis. und Wendis. Städten / da ist zumahlen denen neuen Evangelis. Predigern grosse Wiederwärtigkeit erwiesen / wie das auch sattsahm erfahren der erste Rostockis. Evangelist / wie ihn Hr. Lindenberg nennet / Hr. M. Joachim Schlüter / so in der Mecklb. Vestung Dömitz / an der Elbe gelegen / von ehrlichen Eltern gebohren: sein Vater ist ein Fehrman des Orths gewesen / und hat Kutzer geheissen. Weil ihm aber derselbe in seinen kindlichen Jahren abgestorben / und seine Mutter sich anderweit wieder verehliget / mit einem ehrlichen Manne / Nahmens Schlüter / da dann seine Mutter nach dem Manne genennet worden / alß hat man ihm auch Jochim Schlüter genannt; Wie er zu seinen Jahren gekommen / ist er nach Wittenberg gezogen / und hat den Hn D. Lutherum / Phil. Melanchton / Bugenhagen / und andere mit Nutzen gehöret / und nachdem er den Grund der wahren und reinen Lehre daselbst wol gefasset / ist er nach Rostock gekommen da er den Schul-dienst zu St. Peter angenommen / und sich treulich bey den Lämmern erwiesen / bis ihm GOtt nach 2 Jahren Ao. 1523. auch die Schaffe anvertrauet da er von ihnen zu ihrem Prediger an St Peters-Kirche beruffen und vom Hertzoge Heinrich bestättiget worden ist. Wie er nun Anfangs in der Kirchen predigte / drungen die Leute so häuffig hinzu / daß der Orth ihnen zu enge ward / darümb ging er hinauß und predigte auff einem unter der Linden daselbst gesetztem Predigstuel mit grosser Freudigkeit / und zeugete und bestraffete die Irrthümer der Papisten. Nun waren ihm die Universität / der Thumb / und so viel Thumb-Herrn / alle Prediger an allen Kirchen / alle Klöster bey 300. Mönch und Nonnen der gantze Raht / ja fast die gantze Stadt / ohn wenige auffrichtige gute Hertzen / gantz zuwiedern. Wieder alle diesen Hauffen muste er allein kämpffen / da stürmete gleich im Anfang seines Predig-Amts Wind und Regen / Feuer und Wasser / Donner und Blitz ihm unter die Augen. Er ward verlästert heimlich und öffentlich / geschmähet und verfolget / mit Fingern nachgewiesen. Man überfiel ihn zum öftern mit Beil und Barten. Er kundte keine Nacht sicher im Hause schlaffen. Er durffte sich nicht unterstehen auff der Gassen allein zu gehen / sondern muste sich heimlich in Gottseliger Leute Häuser verbergen. So grausam war damahls die Verfolgung der Papisten wieder ihn / daß man ihn wol mag unter die Martyrer schreiben. Manche Nacht lag er draussen vorm Peters-Thor und brachte sie mit Winseln und Wehklagen zu; Ja es kam mit Ihm dahin / daß E. E. Raht ihn gar aus der Stadt weisen und treiben ließ / zu grossen Leydwesen seiner lieben Zuhörer und noch gröserer Freude seiner Feinde / die schrien: da / da / das sehen wir gern. Da muste der treue Zeuge JEsu hinaus als eine verschüchterte und verjagte Taube / verlassen von Menschen / aber nicht verlassen von GOtt. Die Gnade GOttes ging mit Ihm / und wandte des Hertzogs Hinrichs der Ihn beruffen / Hertze zu ihm / der nam ihn auff und versorgte ihn.

§. 2. In diesem seinen Exilio muste er doch 3. Vierthel Jahr aushalten / denn es fielen damahls viel verworrene Händel vor / es war Krieg an allen Orten und Enden / unter Geist- und Weltlichen. Die Türcken und Tartern liessen ihre grausame Macht und Rüstungen sehen: zwischen denen Benachbarten Königreichen und Fürstenthümern war lauter Mißverstand / Krieg und Unruh. Der König in Franckreich Franciscus wütete unmenschlich und that grossen Schaden. Zwinglius und Carolostadius stürmeten wieder die reine Christ-Lutheris. Lehre; Campegius der Päbstl. Abgesandte bereitete derselben auff dem Reichs-Tage zu Nürnberg ein neues Blutbad zu. Es kam ein neu Käys. Decret wieder Lutherum heraus. Der eben wieder die so genandte hus-

rische Propheten ein Buch geschrieben hatte. Bald entstand der Bauren Krieg / dawieder Lutherus auch geschrieben. So war auch dem Hertzog Heinrichen seine hertzgeliebte schöne Gemählin / Fr. Helena / des Chur-Fürsten Philippi / Pfaltz-Graffen am Rhein gewesene Tochter / durch den zeitlichen Tod Ao. 1524. M. Augusto von der seite gerissen. Darüber verzog sichs / daß Hr. M. Schlüter nicht so bald wieder introduciret ward. Welches doch geschahe Ao 1526. da ward er von beyden Hertzogen / Hn. Heinrich und Hn. Alberto auff Anhalten etlicher vornehmer Bürger / wieder hinein beruffen und an seinen vorigen Orth und Ampt zu St. Peter verordnet / war nun desto muthiger und achtete alles seiner Wiedersacher Dräuen und Trotzen gar nicht / nun wiederlegte er die Päbstische Lehre grund-eifferigst und predigte das Heil. Evangelium gewaltiglich und überreichte das Heil. Sacrament des Leibes und Bluts JEsu Christi in beyderley Gestalt / so daß viel von der irrigen Lehre abfielen und sich zu GOTT bekehreten.

§. 3. Dazu halff nicht wenig der Päbstler einheimischer bekandter Zwiespalt und unnöthiger Streit / den sie eben zu dieser Zeit untereinander gar hefftig führeten und auffwärmeten / ohngeachtet solcher Streit damahls schon über 200 Jahr gewehret / und kein Pabst denselben zu entscheiden sich unterstanden hatte / nehmlich / daß die so genandte Franciscaner-Münche oder Minoriten eiferichst zu behaupten suchten; Die Jungfrau Maria / oder Mutter GOttes wäre ohn Sünd empfangen: Dagegen die Dominicaner oder Prediger-Münche stritten und lehreten: Maria wäre gleich andern Menschen in Sünden empfangen und gebohren. Darüber sie öffters scharff aneinander setzeten und nicht achteten das Päbstl. Verbot: sie solten sich deswegen nicht anfeinden / noch unter einander verkätzern / sondern einem jeden die Freyheit gönnen über dieser Frage zu behaupten was er wolte. Ja diese verdammeten einer den andern bis in die unterste Hölle / verfluchten / schmäheten und verlästerten sich öffentlich auff den Cantzeln. Hingegen predigte Herr M. Schlüter desto beweglicher / und gab zuweilen beyden Theilen tapffere / nicht blutende Stiche. Hierüber nun und anderer vieler Exorbitantien wegen geschahe es / daß auch etliche vom Raht denen Papisten ab / und dem Herrn Schlüter beyfielen. Diß war denen Päbstschen / wie leicht zu erachten / ein Dorn in Augen und Hertzen / darum sie sich auffs eusserste / so mit Gewalt / als List / ihm wiedersetzeten.

§. 4. Insonderheit waren die schwartzen Dominicaner Mönche in Johannis Kloster damahls bey den Leuten in grossen Ansehen. Ihr Prior Herr D. Cornelius war D. Theologiæ / fürnehmlich aber / ward unter denselben einer / Nahmens Herr Michael Rohtstein hoch æstimiret / und hatte grossen Zulauff / der auch die fürnehmste Leute der Stadt zu Beicht-Kindern hatte. Dieser schalt abscheulich auff die Lutherische Lehre / vermahnete die Leute sie solten ja fleißig beten / daß GOtt wolte Gnade geben / daß Lüder und Küter / so nandten sie aus Verachtung den Luther und Schlüter / möchten ehistens mit Feuer verbrandt werden / wie Johan Husen geschehen; und wie noch ohn längst in Niederland zu Brüssel / Anno 1523. den 1. Julii zween Augustiner Mönchen Hinrich Voß und Johann Eschen auch ümb solcher Lehre willen wiederfahren were. Erblickete er etwa einen in der Kirche mit einem Büchlein / der keinen Pater Noster-Krantz dabey hatte / redete er ihn öffentlich von der Cantzel an: Sehe ich dich nicht hinter dem Pfeiler stehen / und ein Lutherisch Büchlein in Händen haben? ich sage dir: das wird dich ins höllische Feuer hinein dringen. Ausser dem bemüheten sie sich sehr die Lehre bey den Leuten verdächtig zu machen. Sie stelleten mehr / als gewöhnliche Processiones an / ümb den Hn. Schlüter nur in seiner Kirche zu turbiren; darüm er auch ein Zeitlang unter der Linden predigte auffm Kirchhofe / da sich das Volck hauffenweise zu ihm drang etliche stiegen auf die Mauren / etliche auff die Linde / etliche lagen zum Fenster aus in den angelegenen Häusern. Etliche alte Leute vom Cröpelinischen und Bramoschen Thor her / brachten Essen und Trincken mit / und blieben alda den gantzen Tag von Frühmorgens an / biß auff den späten Abend / daß sie nur keine Predigt versäumen / sondern frühe / und Nachmittags ihn hören möchten.

§. 5. Dagegen verbunden und verschworen sich fast alle Geistliche die damahls in grosser

Anzahl

Anzahl in Rostock gefunden wurden/ alß D. Petrus Baye/ Pastor zu Jacobi/ und M. Nicolaus Francke Plebanus an Marien/ Johannes Katze an Nicolai und alle grossen Geistliche Herren/ Prälaten/ Officialen/ Patres/ Priores/ Guardianer und Fratres derer in jedem Kloster bey 80. starck waren/ wieder den redlichen eintzigen Schlüterum. Diese alle wurden in ihrer Wuht noch mehr gestärcket/ und auffgemuntert zum D. Joh. Eck/ mit seinem Büchlein/ so er nante: Enchiridium Locorum Communionem adversus Lutheranos, welches die Fratres in St. Michaelis nachdrucketen und jederman zu Händen schaffeten. Doch waren auch etliche unter ihnen/ die den Mantel auff beyden Schultern trugen/ wie man saget/ und weder kalt noch warm waren. Die baten den M. Schlüter nebst etlichen weltlichen Hn. zu sich einmahls zu Gaste/ ins Gast-Hauß bey Catharinen/ so hernach zum Prediger Hause gewidmet worden. Er resolvirete hinzugehen/ und sie in angefangener Christ-Lutherischen Lehre durch diese Gelegenheit zu stärcken. Sie bereiteten ihm aber Gifft zu. Davon erlöset ihn GOtt auff diese Weise: Wie er ins Hauß gehet/ da die Herrn alle samt ihrer Küchin in der hinterstuben versamlet waren/ kömt ein armes Kind so den Braten gewandt/ ihm entgegen und spricht heimlich zu ihm: O lieber Herr Jochim/ esset ja nicht von diesen Braten dann: es ist Gifft hinein gethan/ daß ihr nicht des Todes sterbet. Mittler weil kommen die Herren heraus und empfahen ihn auff gut Pharisäisch/ nach der Welt Art/ gantz freundlich und nöhtigen ihm mit sich zu Tische in die Hinter Stube. Weil er sich aber erinnert/ daß man GOtt nicht müsse versuchen/ bittet er nach dem Hände-waschen/ höflich umb einen Abtritt/ weil er in Eyl den Schlüssel in der Studier Stuben hätte stecken lassen/ da ihm doch hoch angelegen/ sie möchten sich nur unterdessen setzen. Wie er das endlich erlanget/ retiriret und hütete er sich für ihrem Gelage/ und kam nicht wieder.

§. 6. Merckwürdig ists was Herr Gryse in der Historia Schluteri erzehlet; als ein junger trotziger Päbstischer Priester/ ein paar Wochen nach dieser Geschicht/ mit einem fetten Thertquasse/ die über der Hauß-Thür des M. Schlüters geschriebene Wort: GOttes Wort bleibet in Ewigkeit/ aus Frevel überstrichen und ausgetilget/ habe demselben GOtt bald darauff das Licht seiner beyden Augen außgelöschet/ sein Nahme sey gewesen: Dionysius Schmidt/ habe hernach zu jedermans Exempel noch lange in Rostock gelebet/ und sey nur damahls/ da Herr Gryse erstlich seine Historiam herauß gegeben vor 14. Jahren gestorben.

§. 7. Zur andern Zeit/ doch nicht lange hernach/ und in demselben 1626sten Jahre begibt es sich/ weil die meisten und Fürnehmsten im Raht es mit den Päbstlern hielten/ daß wieder den Herrn M. Schlüter mit öffentlicher Gewalt verfahren wird. Es kamen die Diener und Wachtleute/ und besetzeten den Pfarrhoff an allen Orten und Thoren/ daß nichts entrinnen kundte brechen mit Gewalt hinnein/ und holen ihn mit Ungestühm heraus/ schleppen ihn über den alten Marckt/ nach den Fleisch-Brücken zu/ und wollen so mit ihm nach der Fronerey zu. Was geschahe? GOtt wolte ihn auch dißmahl ihren mörderischen Händen nicht übergeben/ sondern machte/ daß es bald ruchtbar ward. Da kamen die Bürger und Handwercks Leute/ so dem Evangelio zugethan nach der Fischbanck gelauffen/ rissen ihn mit Gewalt aus der Feinde Händen und brachten ihn durch GOttes Gnade unverletzt wieder in sein Hauß/ und bewacheten dasselbe eine geraume Zeit. Damit hörete ihr Zorn noch nicht auff/ sondern wie sie auff diese Weise dem Hirten nicht kundten beykommen/ wagten sie sich an die Schaffe/ da ward denen Schulmeistern verboten/ keinen Todten/ der bey Lebens Zeit des M. Schlüters Lehre ergeben nach dem Grabe zu singen. Aber auch dieses vermochte die Bekenner des Evangelii nicht zu unterdrücken/ sondern sie hielten einmühtig beysammen/ und diejenige Bürger und Handwercks Gesellen/ so etwas singen kunten/ gingen vor die Leiche Paar bey Paar her/ und begleiteten also den entseelten Cörper mit Singen und Beten zu seiner Grab Stäte/ wie solches dann etliche Jahr continuirete/ biß endlich durch GOttes Gnade Lutherische Schulen angeleget wurden.

§. 8. Auff Hr. Schlütern wars aber am meisten gemüntzet / dem thaten sie viel Verdruß und Hertzleid an / deß entsahen sich nicht die vornehmste Bürger. Da hieß es / wer euch tödtet wird meynen / er thue GOtt einen Dienst daran. Da hat man viel Zauber Trüncke des Nachts vor seine Hauß-Thür gegossen / ja man hat viel vergifftete oder mit Gifft zubereitete Küchlein über seine Maur geworffen / welche dann so bald sie von den Hunden gefressen / gleich ihre Wirckung gehabt / auch so / daß ihm in einen Jahr 9. Hunde nach einander davon gestorben und umbkommen. Wer Schlütern und seinem Anhang kundte Verdruß anthun war der beste Hahn im Korbe / wie die Alten sungen / so lerneten es auch die Jungen / und trieben ihr gottloses schändliches Gespötte mit denen Christlichen Leuten / ja schoneten der Lehre selbst nicht / und des Heil. GOttes-Dienstes / verdreheten die Wort der Heil. Gesänge Gotteslästerlich und Bübisch. Bald hat man dem Herrn Schlüter ein paar neue Schu nebst einem Stabe ins Hauß gesandt / anzuzeigen daß er hinweg solte. Bald des Nachts ihm ein paar alte Schuhe an die Thür gehenget / zu erinnern er möchte noch vor Tage davon lauffen. Offt sind einige Verrähter in sein Hauß kommen und ein Gewerb gemacht / ümb nur zu sehen ob er allein / auff daß sie ihn möchten unverhindert überfallen können. Wie er auch dieses gemercket / hat er sich wann solche Meuchelmörder gekommen / so lange zu seinen Freunden oder auch Kirchspiel Kindern gethan. Wann sie ihn dann nicht gefunden / haben sie gesagt: Der Teuffel hätte ihn schon außgeführet. Sie hetten in des Herrn Schlüters Hause einen schwartzen Raben fliegen gesehen und ihn als einen Zauberer und Schwartzkünstler außgeruffen. Was will man viel sagen und schreiben; Herr Schlüter ist ein sehr geplagter Mann gewesen / dessen Seele hefftig von diesen Leuten ist gequälet worden. Er hätte nicht einen Tag leben können / wenn ihn GOtt nicht sonderlich bewahret und erhalten hette. Dazu halff die treue Wacht und Vorsorge seiner lieben Zuhörer / die waren stets ümb ihm. Noch dennoch hat er nicht böses mit bösen vergelten / noch seine Verfolger beym Hertzoge angeben wollen. Denn es ist dieses dem Hertzoge Heinrich von Mecklenburg zu Ohren gekommen / worauff Ihr Fürstl. Gnaden in eigener hohen Persohn sich erhoben / und nach Rostock gezogen ( daselbst diesen Herrn Schlüter zu sich fordern lassen und ihn gnädigst gefraget / ob dem allen also / daß er so sehr verfolget und jämmerlich geplaget würde? seine Fürstl. Gnaden wolten es fürstlich ahnden und eiferen / und seine Verfolger mit gebührendem Ernst wiederum verfolgen und straffen. Hierauff hat Herr M. Schlüter sich nicht als einen Rachgierigen Stadt-Verrähter erwiesen / noch seine Feinde Nahmkündig gemachet / sondern nach laut seines Ehrn zelii / seinen Feinden vergeben / und also ernstlich verhütet und sich vorgesehen / daß seiner Persohn halber / seine Heil Lehre nicht möchte verlästert / vielmehr ihrer viele durch seinen guten Wandel und grosse Gedult / bekehret und selig werden. Doch hat er den gantzen Handel ordentlich erzehlet / und gerühmet wie ihn der grundgütige GOtt offtmahls so wunderbahrlich aus den Mörderischen Händen seiner Feinde errettet und durch seine heilige Engel biß auff die Stunde beschützet. Und also auch bey der grössesten Schmach der Stadt bestes gesuchet / und für sie unterthänigst gebeten. Seine Hoch-Fürstliche Durchl. / vermahneten ihn zur Standhafftigkeit und versicherten ihn Ders gnädigen Schutzes / und zum Zeichen der Hoch-Fürstl. Gnade / begabten sie ihn mit einem neuen statlichen Priester-Kleide und Habit.

§. 9. In allen seinen Predigten hat er unter andern mit gebetet / daß GOtt allen seinen Feinden / Verfolgern und Lästerern wolle vergeben und sie bekehren. Auch wie hefftig seine Gemeine und die Handwercks Gesellen bey ihm angehalten sie wolten der Mönche-Kloster stürmen / die Münche verjagen / sie abgemahnet / man möchte bey Leibe keinen Tumult machen / noch wieder die Obrigkeit etwas anfangen / der almächtige und weise GOtt wuste und könte dennoch sein Wort woll schützen und vertheidigen. Und dabey auff öffentlicher Cantzel geweissaget: Gleich wie der Rauch vom Winde verwehet werde / und man nicht wisse wo er hinstiehe und fliege / also würden auch die ungestühme Papisten / durch Got-

tes Geist und dessen kräfftiges Wort zerwehet und zerstreubet werden/ daß man nicht würde wissen ob auch je in Rostock Papisten gewesen/ welches dann auch GOtt lob geschehen. Ingleichen hat Sehl. Herr M. Schlüter gesagt: Gedencket meiner dabey/ ich bin nur ein geringer Mann und Diener Christi/ aber seyd versichert/ daß nach mir GOtt grosse Doctores und viele Hochgelahrte Männer und Prediger/ so wohl der Universität/ als auch der Kirchen werde erwecken/ deren Schüler ich mich zunennen schäme.

§. 10. Wie nun die Gemeine immer durch GOttes Gnade wuchs und zunahm/ beforderte er zu seinem Collegen und Diac. einen Gottsfürchtigen und Gelahrten Mann/ Paschasium Gruelium/ der ihm hülffe predigen und die Sacramenta nach Christi Einsetzung verreichen. Darauff ist der Herr Schlüter zu Heyraths-Gedancken geschritten und hat Anno 1528. in der Wochen nach Michaelis/ sich mit Catharina Gelen/ eines Kleinschmiedes Tochter in den H. Ehe-Stand begeben/ welche ihm dann in St. Peters-Kirche/ von seinem neubestellten Diacono/ Herrn Paschasio Growel öffentlich vertrauet worden. Und ob gleich E. E. Raht/ (als welcher noch gut Papistisch war/ und welchem ein Seltzames/ daß Prediger heyrahteten/ sich hefftig ihm widersetzte/ haben sie es ihm dennoch nicht wehren können. Ihm aber dennoch einigen Tort auch auff seinem Ehren-Tag zuerweisen/ haben sie denen Schülern und Spielleuten bey seiner Kirchenprocession und Vertrauung gäntzlich verbohten/ sich nicht finden zulassen. Er dagegen hat an Stat der Spielleute indem er nach der Kirchen gangen/ die Glocken leuten und einen Psalm singen lassen/ und ist er mit mehr denn 300. Personen mit einem Jubel-Geschrey zur Kirchen gegangen/ und ihm seine Braut antrauen lassen. Wann dann die Papisten ihren Muhtwillen bey der Vertrauung an ihm nicht verüben können/ haben sie dennoch etliche lose Buben auffgemacht/ die da 7. grosse neue Wein-Kannen/ so im grossen Wein-Keller mit Wein gefüllet gewesen und von den Lutherischen Studiosis ihm solten zum Hochzeit Geschenck verehret werden/ den Dienern im Fleisch-Schrangen mit Gewalt genommen/ den Wein außgegossen/ die Kannen mit Füssen getreten und sie also zu nicht gemacht. Dieser Frevel ward gleichfals dem Hertzoge Heinrich vorgebracht/ der es ungnädig auffnahm/ und lobete die Treue Verbündniß der Christ-Lutherischen/ hatte ein Wolgefallen darob/ daß M. Schlüter sich vereheliget/ nach dem Exempel des Herrn Martini Lutheri/ der auch zuvor/ nehmlich Anno 1525. d. 13. Julii zu Wittenberg die Catharinam v. Böhren ihm anvertrauen lassen. Ließ sich auch vernehmen/ wann Er gewust/ daß dem Hn. Schlüter die Spieleute verwegert/ auff seiner Hochzeit/ wolte Er ihm seine Trompeter und Musicanten vom Hofe zugesand haben.

§. 11. Von dieser Zeit an nahm die Evangelische Lutherische Lehre zu Rostock und im gantzen Mecklenburg sehr zu. Diese beyde Collegen lebeten in grosser Vertraulichkeit. Es war aber obgedachter Herr Paschasius Gruel gebohren in der Marckt Brandenburg in dem Städlein Lentze jenseit der Elbe/ und hatte auch den Herrn Lutherum zu Wittenberg gehöret. Von Rostock ward er nach Warnemünde zum Pastoren vociret/ auch daselbst die Leute in der Göttl. Warheit zu unterrichten. Zu Rostock war in Catharinen Kloster ein Gottsfürchtiger Gelahrter Mann unter denen Franciscaner Mönchen/ Nahmens Valentinus Forte oder Curtius der ward durch den Hn. M. Schlüter bekehret/ also das Er sich von denen Papisten ab/ zu denen Christ-Lutherischen wandte/ das H. Evangelium predigte/ und von der Bürgerschafft zum Evangelischen Prediger beruffen ward. Weil aber die Kirchen annoch mit Päbstischen Lehrern besetzet waren/ kam die Bürgerschafft d. 26. April. auffm Rahthausse zusammen/ und hielt inständig bey E. E. Raht an/ diesen Hn. Valentinum zu einem Prediger zum Heil. Geist zuberuffen/ worin endlich E. E. Raht der Bürgerschafft zu Gefallen lebete/ und ihn daselbst bestätigte. Also hörete man nun nicht allein in der Alten sondern auch in der Neuen Stadt/ die Evangelische Posaun klingen. Und that dieser Mann der Päbstischen Lehre grossen Abbruch/ weil er so lange unter denen Päbstlern gelebet/ und umb ihre Striche guten Bescheid wuste.

§. 12. Im folgenden 1529. Jahr nach Christi Geburth haben die Lutherische Bürger in Jacobs Kirch-Spiel durch inständige Bitte bey E. E. Raht so viel erhalten daß sie den Hn. Bartholdum auch zum Lutherischen Prediger an St. Jacob bekommen. Weil aber die Thum Herren und ihre Consorten hierauff sehr übel zu sprechen / auch die Vornehmste des Rahts annoch dem Pabstuhm zugethan waren / ward ihm bald das Ampt wieder gelegt / und befohlen hinführo nicht mehr öffentlich in der Thumb-Kirch zu predigen. Die Bürger versammleten sich in der Heil. Geist Kirchen und beschlossen / daß dieser ihr Prediger / welchen ihnen E. E. Raht einmahl verliehen / fortan ihr Seelen-Sorger seyn und bleiben solte. Giengen derohalben zusammen auff die Schreiberey / traten vor E. gantzen E. Raht / und baten gehorsamst / man möche dem beruffenen Herrn Bartold ferner verstatten in ihrer Kirchspiel-Kirchen zu Jacobi / da sie hingehöreten / daß reine Wort GOttes ihnen öffentlich zu ihrer Seligkeit vorzutragen. Ein E. Raht führet ihnen darauff zu Gemühte / sie möchten bedencken was für ein grosses Unheil / und welch ein schrecklicher Tumult daraus entstehen köndte und würde / wenn es solte weiter fortgesetzet werden / massen sich die Duhm-Hn. die Universität / die gantze Päbstl. Clerisey / und derosselben mächtiger Anhang hefftig dawieder setzeten. Die Bürger blieben nichts destoweniger bey ihrer inständigen Bitte / und gaben diese Resolution von sich: GOtt würde mit und bey ihnen seyn / weil sie bey GOtt seyn und bleiben wolten / sie wären bereit bey GOttes Lutter-reinem gepredigtem Worte Leib und Leben / Gut und Blut auffzusetzen / und gedächten ihren Lutherisch-Prediger / der ihnen einmahl verliehen und zugeordnet wäre / nicht zu verlassen. E. E. Rath erbeut sich dieses in reifferes Nachdencken zu ziehen / und forder samst ihnen eine Antwort darauf zu ertheilen. Wann aber der Eingepfarreten und Lutheris. Bürger Worthalter Jochim Rosin unter andern vorm E. Raht ausgesaget: Das gantze Jacobs Kirchspiel wolte Hn. Barthold ihren Luth. Prediger behalten und nicht fahren lassen. Und doch zu der Zeit die meiste und fürnehmste des Kirchspiels / dazu die gantze Universität / die Klöster / des Abts und Hn. von Doberan Hoff / des Priors zu Marienhe Hauß / der Duhm-HHn. und Collegiaten Wohnungen / die Päbstis. Seite hielten / als bediente sich E. E. Rath dieser Gelegenheit / und sandten ihre Diener in dem gantzem St. Jacobs Kirchspiel ümbher / die musten Hauß bey Hauß fragen / und Zeugnissen auffnehmen / ob ein jedes Kirchspiel Kind solches dem Jochim Rosin hätte anbefohlen / E. E. Raht zu vermelden / daß Sie alle ingesamt und ein jeder insonderheit den Lutherischen Prediger Hn. Bartholdum gerne behalten wolten. Weil dann die Hertzen der Menschen wanckelmüthig seyn / bevorab da man Zeugniß ablegen soll; dazu die meiste gut Päbstisch waren / denen die alte Weise die beste dauchte; sich auch mit einander nicht beredet / noch eine gewisse Meinung gefasset / vielweniger bedacht / was für Unheil daraus entstehen köndte: so hat der Eine Ja / der andre Nein geantwortet / der dritte die Schultern gezogen und gesagt: Er wolte es schlecht E. E. Raht und denen HHn Geistlichen heimstellen / was die darinnen thun oder lassen würden / solte ihm eben gerecht seyn. Wie gedachter Jochim Rosin dieses erfahren / kundte er wol erachten / daß es ihn treffen und die Päbstis. Hn. ihm nach dem Kopffe grasen würden / hat also für raht sahm befunden / das weiteste zu erwehlen / und sich freywillig aus der Stadt / an einen frömbden Orth zu begeben / biß er sehe / wo diese Sache endlich hinaus wolte.

§. 13. Umb diese Zeit fing einer / Nahmens Anton. Becker / an / öffentlich das Hl. Evangelium in St. Nicolai Kirchen auch zu predigen / welches zwar dem Past. selbiger Kirchen Hn. Joh. Katten sehr verdroß / und setzte sich hefftig dawieder / weil er ein Mann von grossem Ansehen und zugleich Prälat am Thumb war / allein er kunt es nicht wehren / Hr. Antonius drang durch unter dem Schutz des Hertzog Hinrichs und vieler Bürger.

§. 14. Das 1530ste Jahr ist das berühmte Jahr der Evangelisch-Lutherischen Lehre / in welchem den 25. Jun. die Augspurgis. Confession dem Käyser Carolo V. übergeben ist. Zu Rostock hat die Evangelische Lehre sich im nechsten weiter ausgebreitet / indem über vorige Lutherische Prediger

ger/noch 2. feine gelahrte Männer/nemlich Hr. Matthæus Eddeler/sonst Aqvila genandt/kurtz vor Ostern/da er seine Antritts Predigt am 3ten Hl. Ostertage gehalten/von der Busse zu predigen unter allen Völckern. Und Hr. Peter Hakendahle etliche Monath hernach/an St. Marien Kirche/von denen Raths-Herrn und Bürgern/so der Christ-Lutherischen Lehre zugethan/beruffen worden. Doch nur zu predigen/denn die Sacramenta zu verreichen/haben die Päbstis. ihnen nicht gestatten wollen. Als welche noch Ao. 1631. zu St. Marien/St. Jacob/St. Nicolai/St. Georgen/und in denen Clöstern/vor denen Altären öffentlich die Päbstis. Messe gelesen. Denn es hat unmöglich alles auff einmal können abgeschaffet werden. Gleichwie der Hr. D. Lutherus zu Wittenberg solches ebenfals erfahren. Daselbst ward zu erst Anno 1522 die Privat-Messe abgeschaffet; Drey Jahr hernach/und zwar Dom. 20. nach Trinitatis, erstlich/die Teutsche Messe zu halten angefangen. Also hat E.E. Raht dieses Orths gröster Unheil zu behüten auch müssen allmählich damit procediren. Wann nun der Hr. Eddeler in der grossen/mitten in der Stadt belegenen Marien Kirchen/die wahre Busse/wie vor gedacht/dem Volck beweglich vorgetragen/und dagegen gehalten die falsche Busse der Päbstler/und sie gestrafft; Am folgenden Sonntag Qvasimodogeniti die rechte Glaubens-Stärckung/und den wahren Trost aus den Wunden JEsu/beschrieben/und jedermann vermahnet in aller Hertzens-Traurigkeit daraus den Trost zu schöpffen; hingegen die Vanität der unkräfftigen Wunden Francisci, davon die Franciscaner Mönche bisher so groß rühmen gemacht/und die gantze päbstische Welt Himmel an erhebet und Göttlich hält: und daß dieselbe anders nichts als ein ertichtetes Narrenwerck und München-Traum wäre/gewaltig erwiesen; sind damahls unzählig viel Leute durch diese beyde Predigten zur Evangelischen Warheit bekehret/und vom Päbstthum abgetreten/und haben des Hn M. Schlüters Predigten mehr Beyfall gegeben/denn vorhin/ihn mehr geliebet denn vorhin/daher er auch bey denen Papisten mehr gehasset worden/dann vorhin.

§. 15. Dis 1530ste Jahr erlangete auch zu Rostock ein gutes Final E E. Raht nach reiffer Erwegung der Sache/zumahlen damahls auch fürtreffliche kluge Männer im Raht sassen/und hatten den berühmten Herrn D. Johannem Oldendorpium zum Syndico, damit kein öffentlicher Auffruhr unter der Gemeine entstünde/setzte gewisse Articul auff wie es zu der Zeit/als in der Demmerung oder Zweylichten der Lehre möchte zu halten seyn/doch mit dieser Protestation und Bedingung: Daß E.E. Raht hiedurch weder ihrer Käyserl. Maytt. noch ihren Landes-Fürsten und Herrn/noch irgend jemand in seiner gebührlichen Gerechtsahmkeit mit nichten gedencken weder klein noch groß abzubringen/oder zu verhindern. Und ob auch hernachmahls etwas bessers/in Heil. Schrifft gegründet/möchte erfunden werden/dasselbe nicht zuverachten/etc. und forderten die beiderseits Geistliche Herren auff die Schreyberey/alß von Päbstlicher Seiten: M. Nicolaum Francken Plebanum zu St. Marien/D. Petrum Boyen Vicissitudinarium in der Thum-Kirchen zu Jacobi/Herrn Johannem Katten Plebanum zu Nicolai und Herrn Matthæum Katten und andere Prälaten und fürnehme Priester der gantzen Stadt von Lutherischer Seiten/M. Joachimum Schlüter/Matthæum Eddeler/Petrum Hakendale/Valentinum Korte/Antonium und Bartholomæum und ließ denenselben in Beyseyn dazu beruffenen Bürger als Zeugen/dieselbe auffgesetzte Artickel deutlich und laut vorlesen/und zugleich beyden Partheyen auch schrifftlich übergeben. So geschehen am Freytag nach Weinachten Anno 1530. Nicht lange darnach fertigte E.E. Raht einige ihres Mittlers an die Evangelische Prediger ab alß nemlich: Herr Veit Oldenburg/Herr Joachim Qvanten/Herr Nicolaum Beselin und Herr Hinrich Boldewan/nebst dem Herrn Sindico, obgedachtem Hn. D. Johann Oldendorpio u. Stadt Secretario M. Petro Saßen/und begehreten von ihnen über sothaner abgefasseten Ordnung und andern Religions Artickeln ihr Christliches Bedencken/eigentliche

liche Meinung und beständige Erklärung. Hierauff haben sich die Evangelische Prediger so fort Christlich erkläret / damit aber nicht allein E. E. Raht / sondern auch die gantze Gemeine ihre geschehene Mündliche Erklährung recht verstehen / und kein Mißverstand darüber entstehen möchte / hat Herr M. Joachimus Schlüter eine Schrifftliche Anzeige abgefasset / so von denen andern Christ-Lutherischen Predigern eigenhändig unterschrieben / und E. E. Raht am Freytag nach Reminiscere Anno 1531. übergeben worden. Welche Schrifft auch hernach zu Rostock durch Ludevvig Dietzen gedruckt ist / unter diesen Titul: Ein kurtzer und doch gründlicher Bericht / der Ceremonien des Alten und Neuen Testaments / mit warhafftiger Anzeige des rechten und falschen Gebrauchs des Herren Nachtmahls / der Tauffe / Messe / Vigilien / etc. E. E. Raht zu Rostock / aus Beförderung desselben durch M. Joachim Schlüter mit Vollmacht und Bewilligung der Evangelischen Prædicanten übergeben 1. Ist darin eine schöne Vorrede M. Schlüters an den Raht. 2. Ein Bericht von den Ceremonien Altes und Neues Testaments / sampt gründlicher Erklährung der Lehre von der Heil. Tauffe und dem Sacrament des Altars. 3. Bericht von der Messe / im Evangelio gegründet / auch von dem Mißbrauch der Messe. Endlich und 4. wird darinnen gemeldet / warümb man in Teutscher Sprache tauffen solle / und von Weyhung etlicher guten Creatur GOttes. Weil er aber auch nachfolgender Puncten wegen allenthalben von denen Papisten fälschlich angegeben / und öffentlich bey Jedermann verläumdet ward / als 1. daß er aus eigenem muhwilligen Fürnehmen / ohn einigen Göttl. Befehl / Wort und Beruff die Lehre und Ceremonien hätte geändert. 2. Die Hebreis. Grichis. und Lateinis. Sprache verachte. 3. Auffruhr anrichte / und den gemeinen Frieden störe / und 4. die weltliche Obrigkeit verachte / so erkläret sich Hr. M. Schlüter in diesem seinem gedruckten Buche darauff und gibt auff jeden Klag-Artickel aus GOttes Wort herrlichen Bericht / nebst rechtmäßiger und wahrhafftiger Entschuldigung. Zum Beschluß setzet er eine Vermahnung an die Gemeine zu Rostock / darin er durch die Barmhertzigkeit GOttes und sein strenges Gericht / gantz eiferig und treulich vermahnet und bittet: dem geoffenbahrten Worte GOttes zu glauben / dasselbe zu lieben / und sich darin zu üben; stille und friedsam zu seyn / und das zeitliche Leyden so einem wiederfähret / mit Gedult zu ertragen.

Diesemnach hat E. E. Raht gleicher Gestalt alle Päbstis. Priester auch vorgefordert / ihre Meynung ebenmäßig zu erklären / und hat ihnen die gegebene Resolution der Evangelis. Prediger vorgehalten; Sie sind erschienen auffm Rathhause an Mariä Verkündigung Abend / da man mit ihnen von Morgen an biß auff den Abend üm 8. Uhr gründt- und freundliche Unterredung gepflogen / allein sie sind bey ihrem verstockten Sinn und hallstarriger Meynung geblieben / und haben nicht wollen auff ein Haarbreit weichen; Derhalben so ist ihnen allensammt und sonders / das Ampt geleget worden.

Des folgenden Tages fertiget E. E. Raht 2. ihres Mittels / nehmlich Hn. Thomas Kaßken und Hn. Nic. Beselin zu denen Päbstis. Priestern an Marien Kirche / und lässet ihnen anmelden / daß sie nun hinführo ihres vorigen Ampts und Messelesens sich möchten enthalten / und denen bestelleten Lutheris. Predigern unverhindert predigen und das Heil. Sacrament nach Christi Einsetzung verreichen lassen. Dieses haben die HHn. Prælaten, als der Præpositus Hr. Nic. Francke / der Decanus Franciscus, M. Joh. Lykeveth und andere angehöret / und sind stillschweigend und zornig davon gegangen / sonder Großachten / nachdemmahl sie allenthalben / so ausser- als innerhalb der Stadt noch viel Auswege gewust. Etliche vornehme Geschlechter haben ihre eigene verschlossene Capellen und Altäre in derselben Kirchen gehabt /

so ihre

so ihre Meß-Priester vertreten. Derowegen auch Hr. Andreas Gyse am Tage Petri und Pauli auch andere Tagen in diesem 1531. Jahre noch öffentlich ihre Päbstis. Aemter und Messelesen daselbst verrichtet haben. Damit aber die Papisten in der Kirche nicht möchten die Oberhand wieder bekommen / hat E. E. Raht Herr Valentinum Korten Pastorem zum Heil. Geist / denen beyden Lutherischen Predigern an St. Marien zu geordnet / und zum Pastore daselbst bestätiget. Darauff hat E. E. Raht am Creutze Erhöhungs-Tage alle Meß-Priester auff die Schreyberey fordern lassen und ihnen angedeutet / daß nach dem ihre Lehre falsch / und mit GOttes-Wort streitend befunden / sie ferner ihr Predigen / Beichtsitzen und Messehalten gäntzlich einstellen solten / wo solches nicht geschähe / würden sie ihnen mit Zuziehung der Bürgerschafft ein anders sehen lassen / daß sie nicht verhoffet hätten. Hierauff ist in denen Kirchspiel Kirchen keine öffentliche Päbstische Messe mehr gehalten worden / ohn was noch ein Jahr hernach öffentlich zu St. Georgen geschehen / und etliche Jahr noch heimlich in St. Johannis und zum Heil. Creutze.

§. 16. Hierauff hat E. E. Raht die gantze Bürgerschafft auffs Rathauß gefordert / und derselben durch den worthaltenden Burgermeister Herrn Bernhardus Meurman vortragen lassen alles / was bißher mit denen Lutherischen und Päbstischen Priestern veranstaltet wäre / anbey angezeiget / daß E. E. Raht unter sich gäntzlich beschlossen / bey dem Luther reinen Wort Gottes / so durch die Evangelis. Prediger verkündiget würde / durch die Gnade GOttes beständig zu verharren. Dessen hat sich die Ehrliebende Christliche Bürgerschafft zum höchsten erfreuet / und dagegen wieder verpflichtet bey dem reinen Worte Gottes zu leben und zu sterben / auch unterthänigst gebeten / E. E. Raht möchte ferner das Päbstische Reich in dieser Stadt zu stöhren / hingegen das Reich Christi zu erbauen / ihm höchst angelegen seyn lassen. GOtt sey Lob für solchem Segen in himmlischen Gütern durch Christum / der wolle solche theure Verlage bey uns erhalten / für falscher Lehr und Argernissen bewahren / und rechtem Christlichen Eifer und Andacht wie bey unsern Vorfahren in Gnaden erwecken / Ferner damit auch in St. Jacobi das Evangelium reicher getrieben würde / weil Herr Bartholdus bißher nur allein daselbst geprediget / aber noch nicht das Heil. Abendmahl öffentlich außgespendet hatte / also beforderte E. E. Raht daß Herr Anton Becker von Nicolai / zusamt seinem Lutherischen Schulmeister nach Jacobi ginge / teutsche Lutherische Gesänge singen liesse / und nach Herr Bartholdi gehaltenen Predigt / mit demselben das Heil. Sacrament des wahren Leibes und Blutes JESU Christi / nach Christi Einsetzung in beyderley Gestalt reichete so auch Dom. 15. Trinitat zum ersten Mahl daselbst also verrichtet ist.

§. 17. Diß verdroß nicht allein denen Päbstischen Thumb-Priestern / sondern auch dem Teuffel sehr hefftig / darüm gedachte er den Saamen der Uneinigkeit zwischen denen Lutherischen Predigern außzustreuen. Herr M. Schlüters Meynung war / man solte im Anfang des Lutherischen Christenthumbs stets teutsche Gesänge singen / damit das gemeine Volck solche verstehen / und desto baß auff daß Wort der Warheit Achtung geben möchte. Die andern Prediger aber hielten dafür / man solte auch die reine lateinische Gesänge in der Kirchen mit beybehalten. Hierüber ward ein Conventus oder vielmehr eine Deputation etlicher angestellet. Es kamen zusammen Herr Valentinus Korte Pastor an St. Marien / Herr Petrus Hakendale und Herr Bartholdus von Jacobi / dazu Herr D. Oldendorpius Stadt Syndicus, diese beredeten sich in aller Bescheidenheit mit dem Herrn M. Schlüter. Herr Schlüter merckete bald des Satans Griffe / und erklärete sich Christ-Brüderlich. Also ward dieser Sache halber mit ihrer aller Bewilligung ein Conclusum abgefasset: daß / ob es wol heilsahm wäre / ümb des Einfältigen gemeinen Volcks und wahren Auffmerckſahmkeit

wollen / im Anfang des Evangelii / stets teutsche Gesänge zusingen / damit auch der lieben Jugend die Päbstische Abgötterey durch die vermengte Lateinsche Choral-Gesänge nicht möchte wieder beygebracht werden; so hielte man es doch auch nicht für undienlich / daß in denen Kirchspiel-Kirchen zur Metten oder zur Vesper / da nicht viel Volcks verhanden umb der Schüler willen / die Christliche reine Lateinische Gesänge mit gebraucht würden: Da man aber des Herrn M. Joachimi Schlüters Bedencken / wegen der teutschen Gesänge desto eigentlicher vernehmen möchte / hat er eine schöne Præfation vor die Gemeine Gesang-Bücher drucken lassen. Welche hernach zum andernmahl vor den corrigirten Gesängen so Herr M. Hermannus Bonnus Superintendens zu Lübeck Anno 1545. herauß gegeben / gesetzet und nachgedrucket ist.

§. 18. Nun folget das 1532ste / unserm Herrn Schlüter Fatal-Jahr Es were zuwünschen gewest / daß GOtt der Herr den theuren Mann Schlüter seiner neu erbaueten Kirchen länger hätte vorzustehen vergönnet / so Alters halben wol hätte geschehen können / weil er nicht viel über 40. Jahr gekommen / allein es hat dem Höchsten gefallen / ihm mit der Märterer Chron zubelehnen. Jedoch vor seinem Abschiede aus dieser Welt noch verschiedene Hertzens-Freude an dem Wachsthum der Evangelischen Kirchen zu gönnen. Darunter auch dieses / daß der Durchläuchtigste Fürst und Herr Hertzog Albrecht zu Mecklenburg / ein öffentlich gedrucktes Mandat des Montags nach Mariä Reinigung zu Güstrow datiret / publiciren lassen / da einem jeden Unterthanen befohlen / die geistliche Güter bey denen Kirchen zu erhalten / und nicht zu entwenden noch unterzuschlagen. Denn dadurch gedachte der Satan auch den Lauff des Heil. Evangelii zu verhindern / und die Prediger durch Hunger abzuschrecken. So war ihm nicht eine geringe Freude daß der Magistrat dieser Stadt sich so geneigt denen Predigern des Heil: Evangelii erwiese / und ihnen mit aller Freundlichkeit und Ehr-Erweisung begegnete. Weit anders weder zuvor. Als Herr Valentin Korte Pastor an Marien sich auch in dem Heil Ehestand begab / und nach damahligem Gebrauch dieser Stadt seinen öffentlichen Kirchgang hielt / begleitete ihn der gantze Hochweise Raht dieser Stadt / in und aus der Kirchen in das Hochzeit-Hauß und bezeugeten ihre Freude an Ihm. Am Grünen Donnerstage ließ E. E. Raht ein Decretum öffentlich ablesen / darinnen allen Bürgern und Einwohnern ernstlich verboten ward / hinfüro nicht mehr hinaufzugehen nach Pistow oder Keßihn / die Päbstische Messe zu hören / bey harter Straffe. Am Sonnabend nach Jubilate deputirte E.E. Raht zween ihres Mittels / nehmlich Herrn Diedrich Kassel und Herrn Nicolaum Beselien / ins Jungfrauen Kloster / denenselben anzubringen / daß sie möchten von ihrem Abergläubischen Wesen ablassen / und sich zu GOtt bekehren. Auch hat E.E. Raht in diesem Jahre vergönstiget in der Fasten öffentlich Fleisch feil zu haben / welches vor dem als ein verbannet Ding gehalten worden. Diß alles war dem seligen Herr Schlüter eine grosse Freude / daß GOtt dem Donner seines Wortes solche Krafft mitgetheilet. Zu geschweigen daß er hörete / wie hin und wieder die Lutherische durch gute Bücher sich herfür thäten; D. Pomeranus ließ zu Wittenberg ein Buch drücken wieder die Kelch-Diebe-Herr Urbanus Regius Superintendens im Fürsten-Thumb-Lüneburg / gab ein Buch heraus von der wunderlichen Absolution der Kloster-Jungfern / im Hertzogthumb Lüneburg. Die Päbstis wurden desto verbitterter / und was sie durch öffentliche Gewalt nicht thun könten / versuchten sie gar durch Teuffels Betrug und List. Sie hatten einen Meßpfaffen / Nahmens Jochim Niebur / der brachte mit seiner schwartzen Kunst und Gifft Trüncken zu wege / daß der eine unter den Lutherisch. Predigern verstummet / der ander an Leibes Kräfften abnahm. An Hn. Schlütern selbst kundte er nicht ankommen / darüm machte er sich an dessen Freund / dem sich der selige Hr. Schlüter sehr vertrauete: Diesen überredete er dazu / daß er ihm den zubereiteten Gifft möchte beybringen. Welches also zu Werck gerichtet ward. Hr. M. Schlüter war

von

von ehrlichen frommen Leuten zu Gaste gebeten / da dieser Freund vorm Tische auffwartete und einschenckete. Nach Essens solte eine Kanne überreichet werden / daraus Hr. Schlüter den ersten Trunck thun solte / da ward der zugerichtete Gifft heimlich hinein geschüttet / davon tranck Hr. Schlüter / nach ihm ein Böttticher / ferner ein Wollenweber. Diese beyde fingen fort an zu seuchen / und sturben nach weniger Zeit. Hr. Schlüter seuchete noch ein Viertel Jahr / nam von Tag zu Tagen an Kräfften ab / ließ sich doch zuweilen auff den Predigstuel leiten / und verrichtete sein Heil. Amt / ob schon bey grosser Ohnmacht. Den Thäter suchete die Göttliche Rache / daß er nebst einem alten Zauberer zugleich inhafftiret ward / doch weil er ein Meßpriester gewesen war / ward er von vornehmen Leuten looß gebeten / und der Stadt verwiesen. Der gedachte alte Zauberer aber ward hernach nebst einer Hexen zugleich beym Galgen verbrandt. Ob dieser der gewesene Meßpfaffe aber wol frey gelassen / und auff dem Wege nicht fern von Güstrow war / wachete ihm doch sein Gewissen auff / wuste nirgends zu bleiben / als erhenckete er sich selbst an einen Baum. Hr. M. Schlüter aber / weil er vermerckete daß seine Schwachheit überhand genommen / legte er sich zu Bette / und befahl seine Seele und seine Schäfflein dem Ertz-Hirten Christo JEsu / und schlieff selig ein / als ein Organon Spiritus Sancti, oder Werckzeug des Heil. Geistes / am H. Pfingst-Tage zu Nachmittag zwischen 2. und 3. Uhr. Der verblichene Cörper ward eingesencket auff St. Peters Kirchhoff / nicht weit von seines gewesenes Pfarrhauses Hoff-Thür / an der Seiten nach der Stadt-Mauren / und war auff dem Leich-Stein folgende Schrifft eingegraben: Sepultura M. Joachimi Schlüters / qvi Anno 1523. Evangelium in hâc Civitate purè prædicare incepit, propter qvod intoxicatus obiit, in die Pentecostes, A. 1532. Der Hr. Lindenberg in seinem Chronico Rostochiensi hat dieses Jahr also bemercket: Umb diese Zeit / da man schrieb 1532. nach Christi Geburt / hat ein Scheffel Rogken gegolten 3 Schilling Lübsch / der Scheffel Gersten eben so viel / ein Fuder Holtz 8. Schilling Lübsch / die Tonne Bier 12. Lübsch. fling / eine Tonne Fleisch hat man kauffen können für 2. Gülden Meckl.

## Das III. Capittel.

## Von denen ersten Rostockischen Friedens-Artickeln / dem ersten Successore des Hn. Schlüteri und wie die reine Lutherische Lehre in und ausser Rostock in Städten und Landen des Hertzogthumbs Mecklenburg auffgekommen und ausgebreitet worden.

§. 1.

WAnn im nechst-vorhergehendem Capittel §. 12. erwehnet / daß E. E. Raht der Stadt Rostock auf inständiges und fast gefährliches Anhalten der Bürger / und Eingepfarreten zu St. Jacob / ümb einem Lutheris. Prediger / sich erkläret / die Sache in reifflicher Consideration zu ziehen / und ihnen forder samst Antwort zu ertheilen. Ist also E. E. Raht fast aus Noth dazu getrieben / (wiewol ihm vieleicht nicht allzuwol dabey zu Muthe gewesen / ein Hertz zu fassen / und folgende Artickel zu projectiren:

In Betrachtung zu erst und für allen Dingen / der Ehre / Befehl / und Willen GOttes / dem Himmel und Erde unterthänig seyn müssen / und zu Unterhaltung des gemeinen Friedens der Bürger und Einwohner dieser Stadt Rostock / hat E. Ehrsahmer Raht mit denen Kirch-Hrn. und allen Prädicanten / diese folgende Artickel und Beliebung einträglich auffgerichtet / dem ungestühmen Vornehmen des gemeinen Volckes vorzukommen / und eines jeden Gewissen in Ruhe zu stellen / doch mit dieser Protestation und Bedingung / daß E. E. Raht hiedurch Ihr. Käys. Maytt. Ihren Landes Fürsten oder jemand anders in seiner gebührlichen Gerechtigkeit mit nichte gedencket / weder Klein noch groß abzubringen / oder zu verhindern. Und wann schon hernachmahls was bessers hierbon auff der H. Schrifft gegründet / möchte erfunden werden / dasselbe nicht zu verachten / und schlechter dinge nichts anders / denn was von GOttes Wort vorzutragen belanget / in diesem schummern (zweyleuchtigen) Zeiten / aller Unlust vorzukommen.

von einem Christl. Magistrat von Rechts und Billigkeit wegen zu handeln und vorzunehmen.

Als ist 1. berahmt und bewilliget/daß alle Prædicanten in denen Kirchen keinen ausgenommen/sollen GOttes Wort und Evangelium nach Verlesung des Textes/ rein / lauter und klar/unverdunckelt/der Christl. Versamlung und Gemeine vortragen/mit bewehrter Bibliſcher Schrifft erklähren und auslegen; Straffen/wiederlegen/und aus der Menschen Hertzen reissen/ alles/was dem Göttlichen Wort nicht gemeß/oder entgegen ist/es belange Geistliche oder Weltliche Stände insgemein/ als es sich eignet und gebühret. Wiederum auch bauen und vermahnen/nach allem was in GOttes Wort verfasset ist; und also das gemeine Volck auff die Liebe GOttes und des Nechsten/in allem Friede und Gehorsahm / fleißig führen und anhalten.

2. So viel die Kirchen-Ceremonien belanget/und sonderlich/welche vor beständig oder disputirlich zu achten/ ist beliebet / daß die eusserliche Veränderung und Verbesserung / oder Ordinantz derselben/GOtt dem Allmächtigen/und der Obrigkeit befohlen bleibe/auff daß dasjenige was von GOtt ist/in gute Ordnung gebracht / was aber ungegründet / wiederum ohn Ungestühm und Verstöhrung/mit der Zeit abgeschaffet werde. Demnach sollen die Prädicanten mit sothanen Ceremonien nicht belastet werden/sondern allein des Predig Amts/ und der Hl. Sacramente abwarten.

3. Damit sothane einträchtige Lehre der Prædicanten bestätiget und erhalten werde/sollen sie alle unverhindert (Kranckheit ausgenommen) in der Woche zweymahl/ an einem gelegenen Orth zusammen kommen/ und von denen Artickeln/ darüber etwa jemand einen Zweiffel oder Bedencken haben möchte/und was dem gemeinen Volck nützlich vorzutragen/Freund brüderlich/ aus der H. Schrifft mit einander reden und handeln: wie dann auch im Anfang der Christlichen Kirchen es also gehalten/und im Gebrauch gewesen ist / damit die gemeine Versammlung in denen Kirchen nicht in Zwiespalt und Zweiffel gesetzet / besondern in beständiger Liebe / Eintracht/Gewißheit eines GOttes/ eines Worts (eines Glaubens) und einer Gestalt gelehret und angehalten werde/ daß auch die Prädicanten nach solchem Raht von Erforschung der Schrifft/also mögen GOttes Wort verkündigen / daß sie es von wegen dieser Stadt / und gemeiner Christlichen Kirche / hernachmahls wissen zu verantworten.

4. Daß kein Prädicante/ welcher der Zwinglis. Secte anhängig befunden und überzeuget worden / nach diesem zu dem öffentlichen Predigampt soll verstatet werden.

5. Ist Jemand von den Prädicanten / der sothane brüderliche Unterredung oder Zusammenkunfft verachten/und nicht kommen/oder bewehrter Schrifft nicht folgen / oder nicht hören wolte/ besondern seinen eigenen Gedancken auffsätzig folgen / denselben sollen die andere Prädicanten dem Kirchherrn und E. E. Rath anzeigen / daß er vom Predigen abstehe/als ein Verstöhrer des gemeinen Friedes.

6. Nachdem durch der andern Geistlichen wildes unehrliches Leben und Schmähwort / verhönen und lästern/die Bürger fast verbittert werden/und Unlust daraus entstehen möchte / so ist bewilliget/ solches Afterreden der Priesterschaft durch ihre Kirchherrn ernstlich zu verbieten und weil sich die Kirch-Herrn über dero Ungehorsam beklagen/will E. E. Raht auff ihr Ansuchen zu Straffe wieder die Affterreder/wann sie schuldig befunden und überwiesen sind / gebührliche Hülffe verschaffen.

7. Ist umb alles besten willen aus beweglichen Ursachen/nachgegeben/daß die Christl. Versamlung in der Kirchen 2. bewehrte Psalmen/einen vor/und einen nach dem Sermon singen möge/ GOtt zu Lob und Ehren/mit Liebe und Eintracht / ohne Frevel und Hinderniß ihres Nechsten/ doch also/daß in Niemands Gefallen stehe/diß oder jenes zu singen / sondern die Prädicanten sollen sothane Psalmen stimmen und anheben/ fein Christlich und friedsam / wie sichs zur Erbauung des Nechsten eignet und gebühret.

Actum Rostock auff der Schreiberey Freytags nach Nativitatis Christi Anno 1530. in Beyseyn Vicke von Herbeden/Clauß Prange/Claus Frese/Gerdt Türckow/ Hermann Kehrwedo

wedder/Marten Bahre/so alle Bürger zu Rostock als Zeugen sonderlich dazu geeschet u. gebeten.
Thomas Barckhuse / Notarius & Secretarius Judicii, de mandato Consulatus ad hæc
præmissorum, manu propria subscripsit.

§ 2. Obwohl der Päbstis. Anhang sich über den Todt des sehl. Hn M. Schlüters sehr erfreuet/und vermeynet seine Sache nun wiederum in vorigen Stand und Schwang zu bringen/ ists ihm doch mißgelungen/massen bald hierauff / was bisher noch geduldet / ihnen gehemmet worden. In dem Anno 1532. am ersten Sonntag nach Trinit. Fest und also nur 14. Tage nach des sehl. Hn. M. Schlüters Todt / beyde H. Hn. Bürgermeister / nehmlich Hr Berend Hagemeister und Hr. Berend Kron/als oberste Verweser und Patrons des GOttes Hauses zu St. Georgen/ hinaus gegangen/und haben die beyde papistis. Pfaffen daselbst beurlaubet/ nahmentlich den Pastorem Hn Jochim Schaden/und seinen Diaconum, Hn Joch. Spren/und also fort einen Luther-Evangelischen Prediger/den Hn Brun an ihre Staat bestellet und eingesetzet.

§. 3. Die Evangelis. Prediger haben alle einmühtig das Heil. reine Wort GOttes freudig geprediget/ und aus demselben die päbstis. Irrthümer gründlich wiederleget. Insonderheit hat Hr. Petrus Hakendale an Marien Kirch durch eine Predigt den 27. Nov gehalten / viel hundert zum Evangel-Lutherischen Glauben bewogen/da er aus Heil. Schrifft bewiesen/daß ein geringer Knecht / und arme Dienst-Magd / wann dieselbe gottsfürchtig und gläubig weren / und ihre Befohlene Eschung und Dienst treulich verrichteten / für GOtt dem Herrn angenehmer weren / und mehr guter Wercke thäten / als alle Carthäuser Münche / welche doch die heiligste unter allen seyn wolten.

§. 4. Im folgenden 1533sten Jahre ist Herr Jochim Schröder / an Sehligen Herrn M. Schlüters Stelle zum Evangelischen Prediger beruffen / und von Ihr. Durchl. dem Hertzog Heinrich zum Pastore an Peter confirmiret worden. Welcher darauff am Sontag nach St. Veit seine Antritts Predigt gehalten / und das Heil. Sacrament deß Altars verreichet hat Derselbe ist vorhin etliche Jahr an der Schulen zu Peter / gleich wie Herr Schlüter vor ihm/treu und fleißig gewesen/ ein Gottsfürchtiger und gelahrter Mann; Der in des Hn. Schlüters Fußstapfen getreten/und mit sonderlichem Eifer/das H Wort Gottes zu Petri/ wie auch zu Catharinen/und zum Lazarus geprediget / auch verschiedene Bücher geschrieben.

§. 5 Solchen Anfang hat das Lutherthum in Rostock gehabt. Nicht weniger ist das gantze liebe Land und Hertzogthum Mecklenburg damit erfreuet worden/denn die Gottselige fürtreffliche Fürsten und Herrn/die rechte Väter des Vaterlandes/die getreue Säugammen der Christlichen Kirchen/haben sichs ja saur gnug werden lassen/ daß sie ihre liebe Untersassen zum wahren Erkäntnis GOttes und seines lieben Sohnes JEsu Christi bringen/auf dessen theures Verdienst und Wolthaten und nicht auf Menschen Satzungen und Deudeleyen gründen/und zum Ewigen Leben einführen möchten. Darümb sie alle beyde fort im Anfang der Reformation nach Wittenberg an Hn. D. Lutherum schreiben/und úmb qvalificirte Männer ihnen zu übersenden/anhalten lassen. Wie Lutherus selbst bezeuget in einem Brief an Hn. Georgium Spalatinum geschrieben/da diese klare Wort stehen: Bremenses proficiunt in verbo, ut jam vocarint nostrum Jacobum Iperensem pro Evangelista in alteram Ecclesiam; *Duces Mecklenburgenses* ambo, alter per Hansen Loser, alter per Priorem Sternbergensem petunt Evangelistas. Witteb. d. 11. Maji A. 1524. Hertzog Albrecht brachte schon A. 1523 mit sich von Berlin seinen Hofprediger Hn. Henr. Möllens/ den er nach Wißmar in St. Georgen Kirche verordnete. Hertzog Hinrich setzte einen Märckis. von Adel Nahmens Hr. Georg Berenfeld ein/ zum ersten Lutheris. Pastore an St. Nicolai Kirche in Wißmar Anno 1527 und Hn. Paulum Mecklenburg zum Past. an St. Marien daselbst Ao. 1528. Zu Schwerin hatte Ihr. Durchl. im Nahmen Ihres Hn. Sohns Magni/dem Capittel vor 14. Jahren geschworen / Sie in ihren Privileg. und GOttes-Dienst nicht zu hindern/so er auch gehalten. Nur beförderten Sie einen Oberländer/Nahmens Martinus in St. Georgens Capelle vorm Mühlenthor / zu predigen und

Sacrament zu verreichen/und nach dessen Tod Anno 1530. H. Ægidium Fabrum der von dem Abgöttisch Hl. Blut ein eigen Büchlein geschrieben/mit einer Vorrede des sehl. Hn. Lutheri. Wie dann der sehl. Lutherus viel wackerer Leute diesem Hertzogthum und Landen zusandte/ damit nicht allein die Städte/sondern auch mit der Zeit die Dörffer versorget wurden. Unter welchen war der berühmte Hr M. Schirlentzius/ des Hn. D Lutheri/ schwiegerl. Freund/ erster Lutherisch. Prediger zu Petschow/1. meil von Rostock. Aber ein mehres gönnet dißmal Zeit und Raum nicht/ künfftig so GOtt und die Gelegenheit es gibt/ von allen Orten umständlicher.

## Folget die versprochene *Continuation*, oder kurtze Nachricht von dem Zustandt der Kön. Dänisch. Colonie in Trancquebar in Ost-Indien.

### (1.) Wie stehets üm die Lufft / Hitze/ Kälte/ Tag und Nacht.

Antwort: Die Lufft ist unterschieden/ nach den unterschiedenen Jahrzeiten. Um diese Jahrzeit nemlich im Aug./Sept. und Octob. ist die allertemperirteste und gesundeste Lufft. Sie hat gemeiniglich alle Tage ihren Wechsel Vormittage kommt sie aus dem Lande und führet einige Hitze mit sich; Nachmittags aber kommt sie aus der See und machet alles wieder kühl. Im Nov. Dec auch gemeiniglich einem theil des Januarii wehet der Westwind/ verursachet lauter Regen/und offtmahls gans stürmisches Wetter/ auch ein wenig Frost und Kälte. Mitten im Januario bis zum April wehet abermahl ein temperirter Wind: aber im Majo biß zum Ausgang des Julii wehet ein starcker ungesunder und hitziger Landwind. Dieser Wind verursachet bey den Malabaren/ so wol als Europäern/ vielerley Kranckheiten. Er führet eine solche Hitze mit sich/daß es scheinet/ als kähm er aus dem Backofen. Wenn man in die Höhe siehet/so wird man nichts als lauter Sand gewahr/welchen der Wind zu allen Häusern Hauffenweyse hineinführet. Gehet man auf der Gassen/so kan man die Augen nicht auffmachen/ und muß recht im Winde als wie in einem starcken Wasser hindurchwaten. So lange als dieser Wind wehet/so lange pflege ich gantz unpaß zu seyn/indem er mir allen Safft und Krafft benimt/ daß ich offtmals wenig Othem haben kan/ und gantz keinen Schweiß an mir fühle. Dieses Jahr habe ich mich ziemlich dafür conserviren können durch einen gewissen Europäischen Tranck/ den ich täglich gebrauchen müssen. Was die Hitze anlanget/so ist sie im Febr: Mart./April:/Majo und Julio am allerstärckesten. Der Malabaren ihre Kleidung ist so beschaffen/ daß sie nicht eben viel davon incommodiret werden. Indessen pflegen sie sich offt in kaltem Wasser zu waschen; haben stets einen Windwedel bey sich/ und damit sie die Sonnen-Hitze nicht so treffen könne/legen sie ein Tug auf ihr Haupt/das vielfag zusammen gewickelt ist Uber dieses haben sie auch alle Viertelmeilen Ruhe-Häuser auf dem Wege/darinnen sie sich ein wenig abkühlen können. Unter der gröstenHitze/nemlich von 12. bis 2 Uhr pflegen sie gerne zu schlaffen/ oder im Schatten zu sitzen. Die blancken Europäer aber werden von der Hitze mehr incommodiret/ wegen ihrer Kleidung/und weil sie auch bey der äusserlichen Hitze sich eine innerliche Hitze verursachen durch allerley hitzige Getränckе. Jedoch wissen sie sich in Häusern wol dafür zu bergen/ indehm sie an den Orth/da sie sitzen oder liegen/stets frisches Wasser giessen lassen; haben nicht mehr/ als die Unterkleider auff dem Leibe/und lassen sich von ihren Dienern oder Sclaven stets fächeln oder Lufft machen. Wenn sie ausgehen/ lassen sie über sich einen Somprair oder Sonnenschirm tragen/ daß sie von den heissen Sonnen-Strahlen nicht incommodiret werden. Des Mittags von 12. bis 2. Uhr pflegen sie auch zu schlaffen. Und solcher gestalt können sie sich in etwas für der Hitze bergen. Ich bin in der gröstenHitze am allergesundesten/ und habe noch die allerwenigste Beschwerlichkeit davon gehabt/ würde mir auch sehr fremde vorkommen/ wenn ich wieder in den rauhen Winter nach Europa kommen solte. Was ferner anlanget die Kälte/ so hat man alhier nicht viel darüber zu klagen; indem alsdann die Europäer am allergesundesten sind/ wenn die Regen-Zeit einbricht. Solches geschiehet vornemlich im Ausgang des Octobers und wäret bis zum Anfang des Januarii. Wie denn nun

der

der Regen in Europa allezeit eine frische Lufft mit sich führet / so geschiehet solches allhier auch. Das aber dergleichen frische Lufft an dem Leibe allhier so gar penetrant ist / kommt daher / weil allhier die Hitze vorhero so groß gewesen ist / folglich die pori gantz offen stehen / so / daß die kühle Lufft sie empfindlicher afficiren kan / als wol sonsten geschehen würde / wenn sie so verstopfft wären als in Europa. Daher kommt es denn / daß man in der Regen-Zeit ein gut warm Bette und warme Kleider erleiden mag. Indessen braucht man keine Ofen in den Stuben / noch sonsten etwas / daran man sich wärmen möchte. So kalt ist es noch nie allhier gewesen / daß man dergleichen Mittel dagegen gebrauchen müssen. Oftmals aber ist es auch in der warmen Zeit des Nachts recht kalt / daß ich des Morgens manchmal gantz erstarrete Füsse gehabt / wenn sie für der empfindlichen Lufft unbedeckt gewesen sind. Ja einige stehen des Morgens frühe oftmals gantz contract und halb todt auf / wann sie unter freyen Himmel in der Lufft unbedeckt gelegen. Sonsten ist die kalte Zeit die allerliebligste und lustigste Zeit / indem alles grünet und blühet / und einen schönen Geruch von sich giebet / eben als wie in Europa zur Frühlings-Zeit. Indessen haben die Malabaren von der Kälte die allergröste Beschwerung / weil sie nur ein Tuch um den Leib haben / darunter sie sich nicht gnugsam für der Kälte und für den frischen Regen verbergen können. Wolten sie da nicht fleißig arbeiten / würden sie oftmals für Kälte zittern / eben als wie in Europa die Müßiggänger des Winters thun.

Was Tag und Nacht anlanget / so sind sie gemeiniglich Jahr aus Jahr ein einander gleich / ohne wenn die Sonne gantz bey dem Tropico cancri, oder gantz bey dem Tropico capricorni ist / da der Tag ein wenig kürtzer ist / als sonsten / jedoch währet es nicht lange. Künfftig (geliebtes GOtt) ein mehrers.

---

# Nachrichten von einigen im Lande Mecklenb vorkommenden Sachen.

Es werden in diesem Hertzogthum jährlich 4. ordinaire Juridiqhen oder Gerichts-Tage gehalten. Und zwar

## Im Hoch-Furstl. Hof-Gerichte zu Güstrau

| | | |
|---|---|---|
| Die erste Juridiqhe | Dienstag nach Epiphan. | 8. Januar. |
| Die ander | Dienstag nach Ovasim. | 30. April. |
| Die dritte | Dienstag nach Mariä Heimsuchung | 9. Julii. |
| Die vierdte | Dienstag nach Michaelis | 1. Octob. |

Die Gerichts-Vacantzen oder Ferien sind 8. Tage vor und 14. Tage nach Weyhnachten / von Estomihi bis Invocabit vom Palm-Sonntag bis Ovasim 8. Tage vor Pfingsten / bis auff den Sonntag Trinit. von Jacobi bis Bartholomäi. Imgleichen alle Sonn-Feyer- und Bettage.

## Im Hoch-Fürstlichen Consistorio zu Rostock.

| | | |
|---|---|---|
| Die erste Juridiqhe | Dienstag nach Lätare | 2. April. |
| Die ander | Dienstag nach Trinitatis | 18. Jun. |
| Die dritte | Dienstag nach Mariä Geburth | 10. Sept. |
| Die vierdte | Dienstag nach dem 1. Addent | 3 Decemb. |

Am Freytag darauff werden die Urtheil publiciret. Extraordinaire Juridiqhen werden angesetzet / nachdem der Sachen Umstände und Vielheit es erfordern.

## Von ordentlichen Buß und Bet-Tagen.

Es werden auch in diesen Landen 4. ordentliche Buß- und Bettage jährlich / und zwar nach der erläuterten Kirchen-Ordnung folgender massen gefeyret.

| | |
|---|---|
| Der erste am Freytag vor Reminiscere | 15. Mart. |
| Der ander am Char-Freytag | 19. April. |
| Der dritte am Freytag nach Margreten | 19. Julii |
| Der vierdte am Freytag zwischen den 2. und 3. Addent | 13. Decemb. |

Buß-

## Buß-Texte auff das Jahr 1715.

Erster Buß-Tag.

Frühpredigt Exod. 20. v. 20. Moses sprach zum Volck / fin: daß ihr nicht sündiget.
Hauptpredigt Exod. 23 v. 20/21/22. Siehe ich sende/ fin. wiederwärtiger seyn.
Nachmittagspred. Exod. 32. v. 7 biß 14 Der HErr aber sprach/ fin: dräuete seinem Volck zu thun

Anderer Buß-Tag.

Frühpredigt Lebit. 10. v. 1/2/3: Und die Söhne Aarons / fin. Aaron schwieg stille.
Hauptpredigt Uber die Paßions Historie. (Abendpredigt Von der Begräbniß Christi.)

Dritter Buß-Tag.

Frühpredigt Numer. 11. v. 1, 2, 3. Und da sich das Volck / fin. Feuer angezündet hatte.
Hauptpredigt Numer. 21. v. 5. biß 9. Und das Volck ward verdrossen/ fin. und blieb leben.
Abendpredigt Num. 25 v. 1 biß 9. Und Israel wohnete / fin. vier und zwantzig tausend.

Vierdter Buß Tag.

Frühpredigt Deutr. 6. v. 4. biß 9. Höre Israel / fin. die Thore.
Hauptpredigt Deut 10 v. 12 biß 16 Nun Israel / fin. Hallstarrig.
Abendpredigt Deut. 29 v. 14 biß 21. Ich mache diesen Bund / fin. dieses Gesetzes geschrieben ist

---

## Verzeichniß derjenigen Fürstl. Aembter/ Meyerhöfe/ Krüge/ Zölle/ Mühlen/ ꝛc. welche gegen Johannis 1715. zu verpachten/ und alsdann *vacant* werden / als:

### I. Unterm Ambt Schwerin.

1. Hoff Wandrumb.
2. Hoff Jamel.
3. " " Gädebende.
4. " " Zietlitz.
5. Fischerey zu Schwerin.
6. Mühle zu Hagenow.
7. Zölle zu Schwerin/ Garlitz/ Pampow/ Banschow/ Meteln/ Hagenow/ Altena/ Qvaasel.
8. Ziegeley zu Lanckow/ auff dem Werder/ Ziegel Werder/ und Schelfe.

### II. Unterm Ambt Grevißmühlen.

9. Hoff Everstorff.
10. " " Degetow.
11. " " Hungerstorff.
12. " " Hilligendorff
13. Land-Zoll zu Grevismühlen.
14. III. Das Ambt Mecklenburg.
15. IV. Das Ambt Redenthin.

### V. Unterm Ambt Buckow.

16. Land-Zoll daselbst.
17. Wind-Mühle zu Kräpelin.

### VI. Unterm Ambt Temptzien.

18. Guht Witzin.

### VII. Unterm Ambt Grabow.

19. Hoff Kleinow
20. Zoll zu Goriosen.
21. Zoll zu Grabow.
22. Ziegley in Kummer.
23. VIII. Ambt Marnitz.
24. Land-Zoll zu Siggelkow.

### IX. Unterm Ambt Neustadt.

25. Kupffermühlen daselbst.

### X. Unterm Ambt Dömitz.

26. Ziegeley daselbst.

### XI. Unterm Ambt Boitzenburg.

27. Verschiedene Höfe in der Teldow.
28. Schild-Mühle.
29. Land-Zoll zu Boitzenburg/ Greven/ Grantzin und Blücher.
30. Suden und Schaal-Zoll.
31. Ufer-Gelder zu Boitzenburg.

### XII. Unterm Ambt Güstrow.

32. Fischereyen im Sumpff- und Stadtgraben daselbst.

### XIII. Unterm Ambt Stavenhagen.

33. Die Duckower Hufen.
34. Briggauer Pertinentien.

XIV.

XIV. Unterm Ambt Schwan.

35 Hoff Cambtz.
36 Ziegeley zu Schwaan.

XV. Unterm Ambt Ribbenitz.

37. Hoff Grahl.
38 Land-Zoll zu Ribbenitz.
39 Herings-Zoll zu Wustrow.

XVI. Unterm Ambt Gnöyen.

40. Land-Zoll zu Gnöyen.
41. XVII. Ambt Rühn.

Ferner

## Derjenigen Fürstl. Aembter Höfe / Krüge / Zölle / Mühlen ꝛc. so auff Johannis Anno 1716. vacant werden.

I. Unterm Ambt Schwerin.

1 Hoff Lütten Medewege.
2 Hoff Neuen Krentzlin.
3 Fischerey auff dem Pinnower See.

II. Ambt Rhena.

4

III. Unterm Ambt Grevismühlen.

5 Ampts Bauhoff.
6 Thorstorff.
7. Qwestin.
8 Mühle zu Poyschendorff.

IV. Unterm Ambt Mecklenburg.

9 Hoff Mödenthin.
10 Mühle daselbst.

V. Unterm Ambt Neustadt.

11 Hoff Drenkrügen.
12 Land-Zoll zu Wahren.
13 " " Jasnitz.

VI. Unterm Ambt Güstrow.

14 Mühle zu Rosin.
15 Krug zu Rosin.
16 Fischerey vom Hohen-Sprentzer See.

VII Unterm Ambt Schwan.

17 Hoff Fahrenholtz.
18 Hoff Blieskow und Reinshagen.
19 Zoll zu Grossen Grentz.
20 Krug zu Grossen-Grentz.
21 3. Teiche zu Cambtz

VIII. Unterm Ambt Ribbenitz.

22 Hoff Sanitz und Freyenholtz.
23 Lütten-Dierhagen
24 Guht Toytenwinckel / Hoff Hinrichstorff und dergleichen Pertinentien.
25 Schmiede zu Sanitz.
26 IX. Ambt Goldberg.

---

## Nachricht / von Ankunfft und Abgang derer Posten in der Hoch-Fürstl. Residentz und Vestung Schwerin.

### Abgehende Posten.

Am Sonntage.

Um 10 Uhr Morgens / oder so bald sie von Hamburg und Boytzenburg ankommt / auff Güstrau / Schwaan / Rostock / Krackow / Plaw / Malchow / Röbel / Wittstock / Neuen Ruppin / Berlin / und nach der gantzen Marck Brandenburg / auch Breßlau / gantz Schlesien und Ungarn / item auch über Güstrow auff Tetrow / Malchin / Stabenhagen / Ivenack / Neu-Brandenburg / Pentzlien / Friedland / Anclam / auch auff Strelitz / Wesenberg / Fürstenberg / und überall ins Stargardische auch Neukalden

NB. Bey dieser Post gehen Briefe an die Fürstliche Aempter / Güstrow / Plaw / Goldberg / Kloster-Dobberthien / Wredenhagen / Stavenhagen Ivenack / Schwaan item ein Both von Güstrau auf Waaren.

Am Montage.

Um 11 Uhr Mittags auf Gadebusch / Ratzeburg / Mölln / Tritton / Hamburg / allwo selbige bey Oeffnung des Thors ankömmt / und gehen damit ferner Briefe ab nach Holstein / Bremen / Holland / Engelland / Franckreich / Dennemarck und Schweden.

Um 7. Uhr Morgens auf Rehna / Schönberg und Lübeck.

Um 8 Uhr auff Wißmar.

Umb 12 Uhr auf Crivitz und Parchim.

Bey dieser Post werden Briefe gesand / in nachfolgende Fürstl. Aempter / als Gadebusch / Rhena / Crivitz

Lübtz/Marnitz/item Wahrin/Tempzien/Mecklenb. Redenthien/Buckow Cröplin/Dobbran und Grebismühlen.

Am Dienstag.

Um 9 Uhr. Abends/oder so bald die von Güstrau ankommt / auff Wittenberg / Boitzenburg / Lüneburg / Lauenburg / Bargedorff und Hamburg/ und trift alda auf die Reichsposten.

NB. Nimmt Briefe mit an die Fürstl. Aemter/ Walsmühlen/ Hagenow Zarrenthien/ Boitzenburg.

Am Mitwoch.

Um 7. Uhr Morgens auff Neustadt/ Grabow/ und von da ein gehender Bothe nach Dömitz / womit Briefe in selbigem Ampte und dem Ampt Eldena / auch nach der Conower Sültze fortgesandt werden können.

Um 3 Uhr Nachmittag oder so bald die Hamburger Post ankommt auff Sternberg/Bützau Wahrin Tempzien/ Schwaan/ Rostock/ und von da ferner auf Teßin/Gnöyen/Deßmin/Wolgast/Greiffswald/Anclam. Stettin/ Dantzig/ item Ribbenitz/ Damgarten/ Stralsund und nach gantz Pommern/ Preussen und Pohlen/ item Stadt Sültze überdem auch auf Güstrau/ Krackau/Plau/Berlin/gleich wie am Sonntag

Am Donnerstage.

Wie am Montage/und überdem die Post auf Güstrau / Schwaan / Rostock/ item auff Teterow / Neukahlden / Malchin / Pentzlin/ etc. gleich wie am Sonntage.

Am Sonnabend.

Wie am Mittwochen/ ausser daß die Post auf Neustadt und Grabau des Mittags um 12 Uhr abgehet.

# Ankommende Posten.

Am Sonntag.

Morgens um 8 biß 9 Uhr von Hamburg / Bargdorf/ Lauenburg/ Lüneburg/ Boitzenburg Wittenburg / und bringt mit / was zu Hamburg mit den Reichs und zu Boitzenburg mit den Sächsischen Posten ankommen. Item/ Briefe aus den Aembtern/ Boitzenburg / Zarenthien/Wittenburg/auch von Hagenau. Dito Abends um 6. Uhr. von Parchim und Cribitz. Und bringt Briefe mit aus den Aemptern/Lübtz/Marnitz/Cribitz.

Am Montag.

Morgens um 7 Uhr. von Rostock /und bringt Briefe mit aus Pohlen/Preussen/Pommern auch aus Ungarn / Schlesien / Berlin und der gantzen Marckt Brandenburg/item Plow/Güstrau / Gnöyen/ Teßin / Ribbenitz / Bützow/ Sternberg / Schwaan / Wahrin / Tempzien und allen andern Oertern/wohin bey dem Abgang die Briefe mitgenommen.

Um 6. Uhr von Dömitz/ Eldena / Grabow/ Conower Sültze und Neustadt.

Am Dienstag.

Um 5 Uhr Abends von Wißmar / bringt Briefe mit von Dobbran Cröpelien / Buckow/ Wahrin/Tempzien/Redenthien/Mecklenburg und Grebismühlen.

Um 8 biß 9 Uhr Abends von Güstrow/

# Ankommende Posten.

bringt Briefe mit aus gantz Pommern/Friedland / Wesenberg/ Strelitz/ Neubrandenburg/ Pentzlien/ Ivenack/ Stavenhagen/ Malchin/ Tetrow / Rostock/ Schwaan /item die Briefe von Wahren.

Am Mittwoch.

Um 6. Uhr Morgens von Lübeck / bringt Briefe mit von Rehna / Grebismühlen / Schönberg / Dassow.

Um 2. Uhr Nachmittages die Hamburger Post bringt Briefe mit aus Franckreich/Engelland/Holland/Bremen/ Holstein/ auch von Trittow/ Ratzeburg/ Mölln/ Gadebusch

Um 6 uhr Abends von Parchim / bringt Briefe mit von den Aemptern/Marnitz/Lübtz und Cribitz.

Am Donnerstage.

Um 7 Uhr Morgens von Dömitz / Eldena/ Grabow und Neustadt.

Um 7 Uhr morgens auch von Rostock / Bützow / Sternberg / gleich wie am Montage

Um 8 biß 9 uhr morgens von Hamburg über Boitzenburg / gleich wie am Sontage

Am Freytag wie am Donnerstage

Am Sonnabend wie am Mittwochen

Es dienet hiebey zur Nachricht/ daß bey obbemeldten

ten Fürstlichen Aemptern gewisse Bothen gehalten werden / welche die Briefe von denen Oertern oder Aemptern wo die Posten durchgehen / weiter an die nahgelegene Höfe / so etwa von der Post nicht berühret werden / bringen / oder da die Post durch solche Aemp- ter nicht durchgehet / von der nechstgelegenen Stadt die Post Briefe abholen / und so weiter ans Ampt und darinn belegenen Höfe bringen sollen / welcher Commodität einjeder Correspondirender sich nach Belieben wird bedienen können.

# Verzeichniß / wie die Posten in Güstrow abgehen und ankomen.

## Gehen ab.

Des Montags nach

Berlin des Morgens um 6 uhr fähret auf Plow / Wittstock / Regelin / Ruppin / Fehrbellin und Bützow.

Rostock / fähret alle Tage über Schwaan des Mittags um 11. uhr ausser des Sontags.

Parchim / des Morgens um 9 uhr

Wahren / gehet ein Bothe des Morgens um 7 uhr.

Räbel / gehet gleichfals ein Bothe über Malchow des Morgens um 7 uhr.

Des Dienstags nach

Hamburg des Morgends um 9 uhr fähret über Schwerin / Wittenburg / Boitzenburg Lauenburg und Bergedorff

Neuenbrandenburg / des Morgens um 11 uhr / fähret über Tetterow / Malchin und Stavenhagen auff Neubrandenburg / von da fähret eine Post auff Strelitz / ingleichen auf Friedland und Anclam.

Des Mittwochs nach

Wißmar / auf Bützow und Wahrin Nachmittags um 4 uhr.

## Gehen ab.

Diese Post trifft zu Bützow an die Post so nach Rostock kommt / welche mit nimmt was von hier nach Schwerin und von da über Ratzeburg nach Hamburg auch was von Schwerin nach Lübeck gehet.

Mit der heutigen Post auff Rostock geben Briefe und Personen mit auff Ribbenitz / Dammgarten / Strahlsund / item auff Demmin / Greiffswalde / Anclam Stettin und so weiter nach Preussen und Pohlen.

Des Donnerstags nach Berlin und Parchim wie am Montage.

Des Freytags.

Wahrensche und Räbelsche Bothen / wie am Montage.

Imgleichen nach Hamburg und Neuenbrandenburg / wie am Dienstage.

Am Sonnabend.

Mit der heutigen Post über Rostock wie am Mittwochen nach Pomern / Preussen / Pohlen / auch über Stralsund mit der Postjacht nach Ystad und gantz Schweden.

Des Sonntags

Nach Wismar / und nimmt mit von Bützow nach Schwerin wie am Mittwochen.

## Kommen an.

Des Montags von

Neuenbrandenburg / Nachmittag um 3 Uhr

Rostock / alle Abend um 6 uhr ausser des Sonntags.

Des Dienstags von

Parchim Abends um 7 Uhr.

Berlin des Nachts um 12 uhr

Des Mittwochs

Der Wahrensche und Räbelsche Bothe Mittags um 12 uhr.

Des Donnerstags von

Wismar des Morgends um 7 uhr.

Bringet mit von Bützow was von Hamburg und

## Kommen an.

Ratzeburg / imgleichen von Lübeck u. Schwerin kommt

Hamburg des Abends um 11 Uhr.

Neuenbrandenburg Abends um 12 uhr.

Des Freytags von

Berlin Nachts um 12 uhr.

Des Sonnabends von.

Parchim des Abends um 7. Uhr.

Sonntags von

Wismar Morgens um 7. uhr / und bringen mit wie am Donnerstag.

Wahren und Räbelsche Bothe / wie am Mittwochen.

Hamburg Abends um 11. uhr.

# Verzeichniß / wie die Fürstl. Mecklenburgische Posten in der Stadt Rostock ein- und ablauffen.

## Abgehende Posten.

Am Sonntag und Mittwoch um 2. Uhr Nachmittags.

1. Die Post nach Bützow/Sternberg/Schwerin/ Gadebusch/ Ratzeburg/ Möllen/ Trittow/ Hamburg/allwo selbige Dienstags und Freytags Morgens bey Oefnung des Thores ankommen/ und gehen damit hinwieder von Hamburg/ nach Holstein/ Bremen/ Holland/ Dännemarck und Schweden.

NB. 1. Von dieser Post lauffet zu Bützow ab eine Post-Calesse auff Wismar/so Montags und Donnerstags Morgens allda ist. Und von Schweden eine Post auff Lübeck so Montag und Donnerstag allda ankommet.

NB. 2. Bey dieser Post können Brieffe in nachfolgende Aempter befodert werden/als Bützow/Sternberg/Wahrin/Temptzien/Mecklb. Schwerin/ Walsmühlen/ Gadebusch Rhena und Grevismühlen auch Lübtz und Cribitz.

Um 2. Uhr Nachmittag.

2. Die auff Ribbenitz/ Dammgarten/ und von da die Schwed. Post auf Stralsund von da die Königl. Post-Jacht nach Ysted in Schonen.

Um 10. Uhr des Abends.

3. Die reitende Post über Wißmar auff Hamburg und Lübeck.

NB. Mit dieser Post gehen Brieffe fort/nach Cräplin/und in die Fürstliche Aempter Dobberan/ Buckow und Redenthien.

Sonntags und Donnerstags um 7. Uhr des Morgens.

4. Die über Teßin/Gnöyen/Demmin/Anclam/ Greiffswald/ Stettin/ Dantzig/ und gantz Pommern/Preussen und Pohlen. Item nach dem Ampt Dargun und Sültz/ item Zarrentien.

Montags und Donnerstags um 11. uhr Mittags.

5. Die über Güstrow/auff Schwerin/Wittenburg/ Boitzenburg/ Lüneburg/ Lauenburg/ Bergedorff und Hamburg/ allwo die Post Mittwochen Abend ankommet/und allda auff die abgehende Reichs-Posten trift.

## Abgehende Posten.

6. Jngleichen gehen bey dieser Post von Güstrow noch ab/des Dienstags und Freytages auf Teterow/Malchin/ Jdenack/ Stavenhagen/Neuenbrandenburg/Friedland/Fürstenberg und ins Stargardische.

Am Dienstag und Freytag.

7. Die über Schwaan und Güstrow.

Am Mittwoch wie am Sonntag/ und überdem

8. Die über Güstrau auff Parchim/ Neustadt/Grabow/ Eldena und Dömitz/ von dannen man auff Dannenberg als nur 1 Meil davon reisen und Briefe senden/und von gedachten Dannenberg an mit den Fürstl. Zellischen Posten weiter ins Lüneburgische fortkommen kan/ it. auf Lentzen/ Perleberg/ Kiritz/ Magdeburg/ Halle/ und so weiter.

NB. Mit dieser Post gehen Briefe ab nach folgende Aempter/ als Dobberthien/ Goldberg Marnitz.

9. Jngleichen gehet die Post von Güstrau als des Donnerstags und Montags morgens um 7. Uhr über Krackow/ Plau/ Wittstock/ Neuen Ruppin/ Fehrbellin auf Berlin/ und der gantzen Marck Brandenburg.

NB. Bey dieser Post gehen auch Brieffe mit auf Goldenberg und Wredenhagen.

Am Donnerstage.

10. Die über Teßin/Gnöyen/Demmin/Anclam/ Greiffswald/ Stettin/ Dantzig und gantz Pommern/ Preussen und Pohlen

11. Die auff Güstrow und von da so weiter wie am Montage gemeldet.

Am Freytag.

12. Die über Schwaan auff Güstrau.

Am Sonnabend.

13. Die über Schwaan auff Güstrow von da über Crackow/ Plaw/ Wittstock/ Neuen Ruppien/Fehrbellien/auf Berlin/und so weiter in der gantzen Marck Brandenburg.

Ankom-

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0078
DFG

# Ankommende Posten.

Sonntag um 7. Uhr morgens.

Die reitend und fahrende Post / von Hamburg/Mölln/Ratzeburg/Gadebusch/ Schwerin Sternberg/Bützow/Wißmar und Lübeck/ bringen Briefe mit aus Bremen / Holland/ Dännemarck und Schweden/ item aus denen bey dem Abgang genannten Fürstl. Aemptern/ imgleichen Walsmühlen Grebsmühlen/ Cribitz/ Buckow/ Krepplin/Warin und Tempzien.

Die Pommersche Post von Stralsund/ Damgarten und Ribbnitz / um 8. Uhr Morgens.

Um 11. Uhr Abends.

Imgleichen aus Pohlen / Lieffland / Churland/Preussen/ über Dantzig/ Stettin/Ueckermünde / Anclam / Demmin / und aus gantz Hinter Pommern/ item Gnöyen und Tefin, und bringt Brieffe mit von denen beym Abgang gedachten Fürstlichen Aemptern / und noch darzu von Dargun und Sültz.

Montag um 7. Uhr Abends.

Die über Güstrow und Schwerin/Wittenburg / Boitzenburg Lüneburg/Lauenburg/Bergedorff und Hamburg bringet / was mit den Reichs-Posten zu Hamburg angekommen. Item Brieffe/Packen/und Personen von Dannenberg und aus dem Lüneburgis/ wie auch von Dömitz/ Eldena/Grabow/ Neustadt/ Parchim und aus

# Ankommende Posten.

den Aemptern Goldberg/Dobbertin/Malnitz.

Dienstag 7. Uhr Abends.

Die über Güstrow von Teterow/ Malchin/ Stavenhagen / Neubrandenburg / Friedland/ Anclam / Strelitz / und aus dem Stargardischen auch Wahren.

Mittwoch 7. Uhr Abends.

Die Pommersche Posten und was dabey angezeiget / als am Sonntage und noch überdem.

Die über Güstrow von Krackau / Plau/ Wittstock / Neuen Ruppin / Berlin und aus der gantzen Marck Brandenburg/ wie auch Breßlau gantz Schlesien und Ungarn.

Auch von jetztbenannten Fürstl. Aemptern Goldberg und Wredenhagen.

Donnerstag 7. Uhr Abends.

Wie am Sonntag/nemlich von Hamburg/ Möllen und Ratzeburg/ Gadebusch/ Schwerin/ Sternberg/ Bützow/ Wißmar und Lübeck und wie es bey selber Post am Sonntage weiter notiret.

Freytag wie am Montag.

Sonnabend wie am Mittwochen gemeldet nemlich) die über Güstrow von Berlin kommende Posten.

NB. Von Güstrow kommt die Post alle Tage ausser des Sonntags und hohen Fest-Tagen des Abends um 7 Uhr.

# Verzeichniß der Jahrmärckte

Anclam am andern Sonntage nach Mariä Geburth

Angermünde / 1. Donnerstag nach Fastnacht / 2 auf Trinitatis . 3. Sonntag nach Crucis.

Aldenau in Mecklenburg Dinstag nach Johan

Alten Gartz / auff Palmarum.

Arnswalde / der 1 vierzehn Tage nach Ostern 2 Jacobi 3 Sonntag nach Catharina 4 Sonntag nach Michael

Bahnen / der 1 auff Oculi 2 Exaudi / 3 Sonntag nach Bartholom. 4 den andern Sonntag nach Michael Krahm. und 2 Tage vorher Viehmarckt.

Bahrt / Sontag nach Michael

Belitz / den Dienstag nach Allerheiligen und vor Martini

Bergen in Rügen/der 1. Mittwoch vor der Charwoche/ 2. Mittwoch nach Pfingsten/ 3. Maria Geburth.

Berlin / der 1. auff Philipp. Jacobi. der 2. Donnerstag nach dem andern Trinitatis/ 3. auff Laurentii / 4. acht Tage nach Maria Geburth / 5. auff Allerheiligen Viehmarckt.

Boitzenburg/der 1. auff Gregori/ 2. Montag nach Exaudi/ 3. Simon Jud.

Bernith / Diengstag nach Martini.

Neu-Brandenburg in der Marck/der 1. auff Pfingsten/ 2. Mar. Geburth/ 3. auff Michael/ 4. auf Catharina.

Brühl. 1. Donnerstag nach Oculi/ 2. und Donnerstag nach Michael.

Braunschweig hält 2. grosse freye privilegirte Messen/ die erste den Montag nach Licht-Messen/ die andere nach Laurentii/ und einen Jahrmarckt acht Tage vor Weyhnachten. Und zwey Viehmärckte/ den ersten montag nach Lätare/ den andern montag nach Johannnis.

Neuen Buckow/ der 1. Petri Pauli. 2. Dienstag nach Galli.

Bützow/ der 1. Donnerst. nach Quasimodogen/ oder den Donnerstag nach der Osterwoche. 2. acht Tage vor Margreten/ 3. auff Ulrichs-Tag.

COlberg/ 1. auf Invoc. 2. nach Maria Heimsuchung.

Cammin/ der 1. auf Reminis. 2. Sonntag nach Trinit. 3. auff Creutz Erhöhung.

Crivitz/ 1. Dienstag nach Oculi/ 2. Dinstag nach Creutz Erhöhung.

DAmm in Pommern/ 1. Freytag vor Cantate/ 2. Palm Abend. 3. auf Michael.

Dambeck ist ein Dorff/ 1. Dienstag in der dritten Woche vor Ostern/ 2. Dienstag nach Mar. Geburth.

Demen ist ein Dorff/ montag nach Johann

Demmin. der 1. auf Invoc/ 2. Sonntag nach Bartholomäi.

Dobberan/ Sontag nach den andern Trinit.

Dömitz/ mittwoch vor Palmar. 2. mittwoch vor Johann/ 3. mitwoch vor Bartholom 4. mittwoch vor Galli.

Döbbersen oder Döbers ein Dorff/ hat jährlich marckt auf den mittwoch nach Johannis/ fält aber Johannis Tag am mittwochen/ ist es den mittwoch darnach.

EIdena/ der 1. den Tag nach Verkündigung Mariä/ 2. den Tag nach Johann/ 3. den Tag nach Michael.

EIlahn ist ein Dorff/ 1. mittwoch vor Ostern/ 2. Mittwoch vor Johann/ 3. Mittwoch vor Michael.

Franckfurt an der Oder/ der 1. montag nach Reminiscere/ 2. montag nach Margreten/ 3. montag nach Martini.

Freyenwald in Pommern/ der 1. Oculi/ 2. Himmelfahrt/ 3. Sonntag nach Galli/ Krahm und Vieh-marckt einen Tag zuvor

Friedland/ Diengstag nach Reminiscere/ 2. Dienstag vor Margreten/ 3. Dienstag vors Michaelis/ dem Montag vor dem Krahm allemahl das Viehmarckt.

GAdebusch/ 1. Dienstag in der Fasten/ 2. auff Kilian/ 3. auff Dionysii.

Gnöyen/ 1. mittwoch vor der stillen Woche/ 2. mittwoch nach Dionysii.

Goldberg/ 1. mitwoch nach Reminiscere/ 2. Dinstag nach Bartholm.

Grevismühlen/ 1. Donnerstag nach Lätare ein Viehmarckt/ 2. auff Ulricus Tag Viehmarckt/ 3. Dienstag nach Marien Geburth ein Krahmmarckt.

Greiffswalde/ 1 Jacobi/ 2. Allerheiligen.

Grabau/ 1. Doñerstag nach Fastnacht/ 2. Dienstag vor Johann/ 3. Dienstag nach Dionysii.

Güstrau/ 1. Umschlag 8. Tage vor der Fasten/ 2. Philipp Jacobi/ 3. Margreten/ 4 mitwoch nach Maria Geburt. So aber Margreten und Mar. Geburth am mittwochen einfält/ so ist es eben denselben Tag.

Grubenhagen/ 1. Sonnab. nach Oculi/ 2. Sonnabend vor Johañ/ 3. Sonnab. vor Martin.

Grossen Givitz/ auf Jacobi Tag.

HAgenau/ 1. mittwoch nach Jubilate/ 2. auf Margreten/ 3. auf Dionysii.

JAbel ist ein Dorff/ 1. mittwoch vor Heil. 3. Könige 2. mittwoch vor Ostern/ 3. Mitwoch vor Michael.

Jörnstorff/ 1. Dienstag in der stillen Woche/ 2. Dienstag nach Petri Pauli.

KIel/ 1. Umschlag auff Heil. drey Könige/ 2. Invoc. 3. acht Tage nach Johann.

Neukahlen/ 1. 8. Tage nach Ostern. 2. Dienstag nach Creutz Erhöhung/ 3 Dienstag nach dem ersten Advent/ vorher ist Viehmarckt.

Kröppelin/ auf Creutz Erhöhung.

Kracke

Kracke ist ein Dorff/ anff Petri Pauli.

Landsberg an der Warte/ 8. Tage vor Pfingsten/ 2 Sontag nach Pet. Paul/ 3. Michael Lage/ 1. Dienstag nach Invocavit/ 2. Dienstag nach Michael.

Leipzig/ 1. am Neuen Jahrs Tage/ 2. auf Jubilate/ 3. Sonntag nach Michael.

Lentzen/ 1. Dienstag nach Invocavit/ 2. Dienstag nach dem 2. Sonntag Trinit. 3 Dienstag nach Bartholomäi/ 4 Dienstag nach Galli.

Lötz/ 8. Tage vor Michaelis

Lübthen/ 1. mittwoch nach Trinit./ 2. mittwoch nach Mariä Heimsuchung/ 3. mittwoch nach Bartholomäi.

Lübtz/ 1. Dienstag nach Johann/ 2. Donnerstag nach Galli.

Malchin/ 1. mittwoch nach Estomihi/ 2. mittwoch nach Georgii/ 3. Dienstag nach Johann/ 4. Dienstag nach Michaelis.

Malchaw sind 3. Märckte/ 1. Dienstag nach Palmarum/ 2. Dienstag nach Johanni/ 3. Dienstag nach Dionysii/ fält aber Dionysii auf einen Dienstag/ so ist es doch denselben Tag das marckt.

Mirau/ 1. montag in der stillen Woche/ 2. den Tag nach Johanni/ 3 mittwoch nach Galli.

Mecklenburg/ 1. Dienstag nach Judica/ 2. Freytag nach den andern Trinitatis/ 3. Dienstag nach Michael.

Neustadt in Mecklenburg/ 1. Donnerstag nach Lätare/ 2. Dienstag vor Bartholomäi, 3. Donnerstag nach Simon Jud.

Naumburg an der Saal in Thüringen/ 1. an Gründonnerstag/ 2. P. tri und Pauli Abend.

Neustadt in der Marck/ der erste vierzehn Tage vor Pfingsten/ 2. auff Simon Jud.

Parchim/ der 1. Dienstag nach Cantate/ 2. montag und Dienstag vor Michael.
Auf der Neustadt der 1. Dienstag vor Jacobi/ 2. Dienstag vor Martini.

Perlberg/ 1. Dienstag nach Oculi/ 2. Dienstag nach Petri Pauli/ 3. Dienst vor Allerheiligen an jeden montag vorher Viehmarckt.

Prizier ein Dorff/ auff Martini.

Picher ist ein Dorff/ 1. mittwoch vor Lichtmeß/ 2. mittwoch vor Mar. Verkündigung. 3. mittwoch vor Pfingsten/ 4. mittwoch nach Mariä Geburth 5. mittwoch vor dem Christtage.

Plaue/ 1. Kauffschlag montag/ 2. mittwoch nach Exaudi/ 3. mittwoch vor Sim. Jud.

Pentzelien/ 1. Sonnabend nach Fastnacht/ 2. Dienstag nach Maria Geburth.

Ratzeburg/ 1. montag nach Reminiscere/ 2. Montag nach Ostern/ Vieh- und Pferdemarck/ 3. 8 Tage nach Johanni 4. montag vor Galli/ Vieh- und Pferdemarckt.

Rücknitz unweit Dargun/ 1. Mittwoch nach den 1sten Sontag nach Trin. Vieh- Pferd- und Krahmmarckt/ 2. Mittwoch vor Sim. Jud. auch Vieh- und Krahmmarckt/ und stehen die Märckte 2 Tage.

Rechenthien/ auff Cätharinen Tag.

Rhena/ 1 Donnerstag nach Reminiscere. Krahm und Viehmarckt/ 2 Dienstag nach Sim. Jud. Krahm- und Viehmarckt.

Redewisch/ im Dobbtanischen Ampte/ am Sonntag nach Petri und Pauli.

Retz an der Ihna/ 1. Mittwoch nach Sexagesimä/ 2 Mittwoch nach Lätare/ 3. Mittwoch nach Exaudi/ 4 Mittwoch vor Laurentii/ 5 mittwoch vor Galli. Allezeit Dienstag vorher Pferdemarckt.

Ribnitz/ der 1 auff Margreten/ 2 mittwoch nach Galli.

Rostock montag nach Invoc. 2 Pfingst und Trinitatis Woche/ 3 Michaelis Abend Viehm.

Rähbel/ 1 Dienstag nach Lätare/ 2 Dienstag nach Viti/ 3 Dienstag nach Mariä Geburth/ 4 Dienstag nach Simon Judä/ allemahl den Tag vorher Viehmarckt.

Schwerin/ der 1 den Donnerstag vor grünen Donnerstag/ 2 auf Viti/ ist gleich auch Vieh- und Pferdemarckt/ 3 auf Mariä Geburth/ in der Neustadt auff der Schelffe werden auch sonderlich 2 Jahrmärckte gehalten/ der 1. den mittwoch nach Phil. Jacobi/ 2 acht Tage nach Gallen den 24 October/ so es aber einfält am Sonntage/ wird es den folgenden Tag darauff gehalten.

Strahlsund/ 1 auff Viti/ 2. auff Nicolai.

Stettin Alt/ der 1 Sonntag nach Mariä Himmelfarth/ 2 auff Cathrina Krahmmarckt/

Vieh-

Vieh- und Pferdemarckt auff Georg/ 3 Freytag auff Galli

Sternberg/ 1 Dienstag vor Ostern/ 2 mittwoch vor Johann/ 3 auff Galli/ wenn aber der Tag einfält auf den Sonnabend/ Sonntag oder montag/ so ist es den Dienstag hernach.

Stapel/ der 1 Sonntag vor Himmelfahrt/ 2 Sonntag nach Egydii/ 3 Sonntag vor Galli.

Strelitz/ der erste Viehmarckt Dienstag vor Fastnacht/ und Mittwochs darauf Krahmmarckt/ 2 Viehmarckt montag vor Himmelfarth und Dienstags darauf 2 Krahmmarckt 3 Viehmarckt auf Egydii (da der auf einen Sonntag fält/ den folgenden montag) und 4 Viehmarckt montag nach Dionysii/ des Tages darauf Krahmmarckt.

Schwaan/ 1 Dienstag nach Gregorii/ 2 Dienstag nach Dionysii.

Sültze/ der 1 Dienstag nach Oculi/ 2 auf Margreten/ 3 acht Tage nach Mariä Gebnrth

Stavenhagen wird nur 1 marckt/ und zwar mitten in der Fasten.

Teterau/ der 1 acht Tage nach dem Malchinischen/ welches einfält nach Esto mihi Dienstags Vieh- mittwochens Krahmmarckt/ 2. abermahl 8 Tage nach dem Malchinischen/ das einfält nach Petri Pauli/ Dienstags Vieh mittwochens Krahmmarckt/ 3 nach den 1. Nov. Dienstags Vieh- mittwochens Krahmm.

Trebtow an der Tollensee/ 1 Donnerstag nach Esto mihi/ 2 Sonntag nach Johann/ 3. Sontag vor Dionysii.

Triebsees/ Freytag nach Laurentii.

Teßin/ 1 Dienstag vor Johannis/ 2 Dienstag nach Sim. Judä.

Varchenthien/ der erste Dienstag nach Mariä Heimsuchung.

Wahren/ 1 Donnerstag in der Fastnachts Woche den Tag vorher Vieh und Pferdemarckt/ 2 auf Petri Pauli/ den Tag vorher Vieh und Pferdemarckt/ 3 Dienstag vor Michael/ den Tag vorher Vieh und Pferdem.

Walckendorff hält marckt/ den Dienstag nach Lätare.

Willschnack/ 1 den montag nach Esto mihi/ 2. montag nach dem ersten Sontage nach Trinitatis/ 3 montag nach Allerheiligen/ fället nun solches auff einen montag/ so ist das marckt den montag darnach/ den Dienstag darauff sind allemahl Krahmmärckte.

Wangerin/ 1 mittwoch nach Cantate/ 2 Freytag nach dem 3 Trinitatis/ 3 montag nach dem 1 Advent Krahm- und allemahl den Tag vorher Viehmarckt.

Wißmar/ 1 montag nach Invocavit/ 2. die Woche vor Pfingsten/ 3 das neuangesetzte Viehmarckt am Donnerstag/ Freytag und Sonnabend vor Galli.

Wittenburg/ 1 mittwoch nach der Fasten/ 2. mittwochen vor Qvasim. 3 mittwochen vor Margreten/ 4 auf Allerheiligen wo aber Allerheiligen auf den Sonnabend/ Sonntag oder montag einfält/ so ist es den mittwoch hernach

Wolgast/ auf Mariä Geburth/ 2 Sonntag vor Galli.

Wittstock/ 1 montag nach Qvadrages/ 2 Dienstag nach Miser Dom 3 Dienstag nach Egydii/ 4 den Tag nach Catharina.

Wesenberg/ 1 Dienstag nach Reminiscere/ 2 Dienstag nach Bartholomäi/ 3 Dienstag nach Martini.

---

Weiln man vernehmen muß/ daß in Bezeichnung der Jahrmärckte nicht nur einige Unrichtigkeiten/ wegen Ermangelung gesicherten Nachrichten/ eingeschlichen/ sondern auch vieleicht viele mängeln dürfften; werden alle und jede/ sonderlich denen daran gelegen/ freundlich ersuchet/ an den Verleger dieser Meckl. Calender gründlichen Bericht davon einzusenden/ mit Versicherung/ daß in folgenden Jahre alles auffs fleißigste solle beobachtet werden.

Universitäts Bibliothek Rostock
http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1028054971/phys_0082
DFG


ZV FINDEN IN AVGSPVRG

und Erlösung jetzt nahe! Uber die Geist bald alles Ubel und Verderben kom-
men! Dieser Mensch ist gleichfals als iger verspottet / und zuletzt aus der
Stadt gejaget. Die Enderung in der R bald darauff erfolget.

## Das 2. Cap. Vom ersten öffe enen Evangelis. Prediger in Rostock und was sic lben zugetragen.

WIe aller Anfang insgemein schwer ergangen im Anfang des heilsahmen
Reformation-werckes / in denen S Bendis. Städten / da ist zumahlen de-
nen neuen Evangelis. Predigern gr ärtigkeit erwiesen / wie das auch satt-
sahm erfahren der erste Rostockis. Evangeli Lindenberg nennet / Hr. M. Joachim
Schlüter / so in der Mecklb. Vestung Dömitz elegen / von ehrlichen Eltern gebohren;
sein Vater ist ein Fehrman des Orths gewes tzer geheissen. Weil ihm aber derselbe
in seinen kindlichen Jahren abgestorben / und sich anderweit wieder verehliget / mit
einem ehrlichen Manne / Nahmens Schlüte Mutter nach dem Manne genennet
worden / alß hat man ihm auch Jochim Schlü Wie er zu seinen Jahren gekommen /
ist er nach Wittenberg gezogen / und hat den n / Phil. Melanchton / Bugenhagen /
und andere mit Nutzen gehöret / und nachdem der wahren und reinen Lehre daselbst
wol gefasset / ist er nach Rostock gekommen da dienst zu St. Peter angenom̃en / und
sich treulich bey den Lämmern erwiesen / bis ih 2 Jahren Ao. 1523. auch die Schaffe
anvertrauet da er von ihnen zu ihrem Predige s-Kirche beruffen und vom Hertzoge
Heinrich bestättiget worden ist. Wie er nun r Kirchen predigte / drungen die Leute
so häuffig hinzu / daß der Orth ihnen zu enge w ng er hinauß und predigte auff einem
unter der Linden daselbst gesetztem Predigstuel eudigkeit / und zeugete und bestraffete
die Irrthümer der Papisten. Nun waren ih ät / der Thumb / und so viel Thumb-
Herrn / alle Prediger an allen Kirchen / alle Kl Mönch und Nonnen der gantze Raht /
ja fast die gantze Stadt / ohn wenige auffricht n / gantz zuwiedern. Wieder alle die-
sen Hauffen muste er allein kämpffen / da stür Anfang seines Predig-Amts Wind
und Regen / Feuer und Wasser / Donner und B ie Augen. Er ward verlästert heiml.
und öffentlich / geschmähet und verfolget / mit F wiesen. Man überfiel ihn zum öftern
mit Beil und Barten. Er kundte keine Nach se schlaffen. Er durffte sich nicht un-
terstehen auff der Gassen allein zu gehen / sond eimlich in Gottseliger Leute Häuser
verbergen. So grausam war damahls die V Papisten wieder ihn / daß man ihn
wol mag unter die Martyrer schreiben. Man er draussen vorm Peters-Thor und
brachte sie mit Winseln und Wehklagen zu; Ihm dahin / daß E. E. Raht ihn gar
aus der Stadt weisen und treiben ließ / zu gros einer lieben Zuhörer und noch grös-
serer Freude seiner Feinde / die schrien: da / da / d rn. Da muste der treue Zeuge JEsu
hinaus als eine verschüchterte und verjagte Ta von Menschen / aber nicht verlassen
von GOtt. Die Gnade GOttes ging m wandte des Hertzogs Hinrichs der
Ihn beruffen / Hertze zu ihm / der nam ihn sorgte ihn.

§. 2. In diesem seinen Exilio muste er doch z r aushalten / denn es fielen damahls
viel verworrene Händel vor / es war Krieg an a d Enden / unter Geist- und Weltli-
chen. Die Türcken und Tartern liessen ihre gr und Nüstungen sehen: zwischen de-
nen Benachbarten Königreichen und Fürstent uter Mißverstand / Krieg und Un-
ruh. Der König in Franckreich Franciscus nschlich und that grossen Schaden.
Zwinglius und Carolostadius stürmeten wiede st-Lutheris. Lehre; Campegius der
Päbstl. Abgesandte bereitete derselben auff de ge zu Nürnberg ein neues Blutbad
zu. Es kam ein neu Käys. Decret wieder Luther der eben wieder die so genandte him-
lische